प्रकासक
राजस्थानी साहित्य परिषद,
४ जगमोहन मल्लिक लेन,
कळकत्तो

पैलीवार एक हजार

मोल तीन रुपिया

मुद्रक
श्री साधना प्रेस,
रतनगढ़ (राजस्थान)

प्रकासकीय

आज सूं कोई पन्द्रै बरसां पैली राजस्थानी भासा अर साहित्य रै प्रचार-प्रसार सारू राजस्थानी साहित्य परिषद री कलकत्तै मे थापना हुयी। जा पछै 'राजस्थानी' ग्रन्थमाळा तथा 'राजस्थानी कहावतां' रा दो-दो भाग परिषद प्रकासित करया।

बिचाळै-सी'क गतिसीलता कम पड़गी। अबार लारलै दिनां जद भारत रा नामी सोध-विद्वान श्री अगरचन्दजी नाहटा कलकत्तै पधारया तो सेठ श्री सोहनलालजी दूगड़ री अध्यक्षता में परिषद री एक सभा हुयी।

राजस्थानी साहित्य रो परिचय देवते श्री नाहटजी जोरदार सबदां में अपील करी कै जे आपां राजस्थान री संस्कृति नै कायम राखी चावां हां, तो आपां रो सगळां सूं पैलो फरज है कै आपां मायड़भासा राजस्थानी नै अपनावां। जितै तईं राजस्थानी भारत री बीजी मानीती भासावां री गिणती में नईं आसी मायड़ भासा रा टेमो सुख सूं सास नईं ले सकसी।

श्री अगरचन्दजी बतायो कै आधुनिक राजस्थानी ग्रन्थां री तेजी सूं निरमाण हुय रयो है, पर जरूरत इण बात री है कै ऐड़ा ग्रन्थां नै बेगै सूं बेगा प्रकास में लाया जावै ताकि लेखकां री कलम रै काट नईं लागै, अर वै मा-राजस्थानी रै भंडार नै बराबर भरता रैवै। जरूरत आ भी है कै पाठक आं ग्रन्थां नै आपरा खुदरा समझ'र अपणावै, खरीदै अर पढ़ै।

माहटंजी रै भासरा सूं श्री डूंगरजी घणा प्रभावित हुया अर उणी वगत बां राजस्थानी ग्रंथां रै प्रकासण सारू ५०८०) प्रदान करया अर भविष्य में भी पूरो सहयोग देवण रो आश्वासन दियो।

श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी रो ग्रन्थ 'सबड़का' इण रकम सूं प्रकासित हुवण आळी पैली किती है। 'सबड़का' खासतौर सूं हास्यरस री पोथी है। हास्यरस रो हाल हिन्दी में भी अभाव है, इण कारण परिषद नै इण बात रो पूरो भरोसो है कै जोशीजी री आ रचना राजस्थानी समाज तो घणैं चाव अर कोड सूं पढ़सी ई, पण राजस्थानी सूं नैड़ी बीजी भासावां, (हिन्दी, गुजराती, पंजाबी, आदि), बोलणियां लोकां नै भी दाय आसी।

'सबड़का' पछै एक और सोवणी पोथी पाठकां री सेवा में परिषद हाजर करसी– "इक्कैवाळो" जिण में प्रसिद्ध साहित्यकार श्री मुरलीधरजी व्यास री लेखणी सूं कोरयोड़ी काळजो छूवणी रचनावां है।

परिषद रो उद्देश्य राजस्थानी भासा रो प्रचार मात्र है, इणी कारण प्रकासणां रो मोल कम-सूं-कम राख्यो गयो है। आसा है कै राजस्थानी पाठक आं प्रकासणां रो घणो आदर करसी अर बीजी पोथ्यां प्रकासित करण सारू परिषद नै प्रोत्साहित करसी।

भंवरलाल नाहटो
मंत्री,
राजस्थानी साहित्य परिषद
कलकत्तो

प्रस्तावना

अंगरेजी में जिए नै 'स्केच' कैवै, उणी नै हिन्दी में 'रेखा-चित्र', अर राजस्थानी में 'रेखाचित्तर' कैवै। साहित में रेखाचित्तर लिखरा वाळा आपरै च्यारूं खानी रै जीवण रै केई अंग रो वरणन उणी तरीकै सूं करै जियां चितारो आपरै चित्तराम नै चितारै। रेखाचित्तर रो विसै कोई भी होय सकै है। इण में केई मिनख, लुगाई, जिनावर, पंखेरू, रूंख, हवेली, गांव अथवा सैर रो वरणन करयो जा सकै है। रेखाचित्तर में सबदां सूं इसो चित्तर मांड्यो जावै कै पढार रै सामनै, बांचते पाण, वरणित विसै री मूरती साकार हुजावै। लिखार आपरै थोड़ै-सै वरणन में विसै रो इसो जबरो परभाव न्हाखै कै बीं नै सहजां ई विसरयो नईं जावै। लिखार चावै परगट ना करो, पण विसै खानर उण री लुकयोड़ी सहानुभूति भी पढारां में चवड़ हुय ई जावै।

रेखाचित्तर रो विसै असली भी हू सकै, अर कळपित भी हू सकै। रेखाचित्तर-कार आपरै विसै नै देख'र चावै तो उण री आज ई वरणन कर सकै, अर चावै तो दो-च्यार बरस ठैर'र कर सकै है। रेखाचित्तर मांडण में सफळ बो हीं'ज लिखार हू सकै जिको आपरै च्यारूं-मेर री जिंदगाणी आंख्यां उघाड़'र देखै, जिको खुद

जीवण में संघर्स करै, भर दाखै, भाड़ै, सगळी भांत रै लोगां रै संपर्क में आवै। इण में बिरलेताण करण आळी बुध्दी अर मायं रै भावुकता भी हुवणी चायीजै। पारखी दीठ सूं जिण रै काळजै में कसक, अर हिवड़ै में हूक नई उठै, बो आछा रेखाचित्तर कदेई नईं लिख सकै। पण रेखा चितेरै नै कोरी ई घणी बडाई-बुराई नईं करणी चायीजै, इण सूं रेखाचित्तर रो कुदरापो पूरो हुजावै।

रेखाचित्तर छोटो ई होणो चायीजै। लिखार नै चायीजै कै कम सूं कम सब्दां नै काम में लावै। बां सब्दां सूं बो आपरै विसै रो इसो चितराम खेंचै कै जे कदेई विसै नै देखण रो मौको पड़ै, तो भट ओळखीज जावै।

रेखाचित्तर रो इतिहास घणो जूनो कोनी। हिन्दी में तो आ काल री चीज है पण अंगरेजी में भी घणी पुराणी कोनी। अंगरेजी में ए. जी. गार्डिनर घणा सोवणा रेखाचित्तर मांड्या, इता सोवणा, कै पढार अडीक्ता रैवता। अंगरेजी रा पढार बांरै रेखा-चितरां मायं लट्टू हा। च्यारूं मेर लोक उणां री बात करता। गार्डिनर रै चितरां रो असर हिरदै में हुंवतो। इणी भांत रूस रा लिखार तुर्गनेव हा। बांरी लेखणी सूं भी अनूठा चितराम उतर्या। बांरो परभाव रूस रै लोकां मायं इसो पड़्यो कै बां आपरी मोकळी कुरीत्यां त्याग दी। अमरीकी लिखार आर्विंग और प्रेसन भी इण खेतर में मोकळो नांव कमायो।

भारत में रेखाचित्तर लिखारां में श्री के. एस वेंकटरमनो अर के. ईश्वरदत्त रा नांव अंगरेजी में लिखण

काज आपणें देस सूं बारला लोक भी जाणें है। बंगला में श्री परशुराम (राज शेखर बोस) जिसा रेखा चित्तर मांड्या है, बिसा सायद ई केई बीजें लिखार लिख्या हुवैला। उर्दू में फितरत, सौकत थानवी अर चगताई रै सिवाय मौलवी अब्दुल हक रो नांव भी लियो जा सकै है। गुजराती में श्रीमती लीलावती मुंसी चोखा चित्तर लिख्या है।

हिन्दी में रेखा चित्तर लिखार मोकळा है। केई विद्वान श्री पदमसिंह शर्मा सूं रेखा चित्तर री सरूआत मानै। हिन्दी में रेखा-चित्तर रै सरूप अर विकास में 'हंस' रै 'रेखा-चित्राङ्क' रो भी योग रयो है। आजकाल रेखाचित्तर लिखारां में श्री बनारसीदास चतुर्वेदी, श्रीमती महादेवी वर्मा, श्री प्रकाशचन्द्र गुप्त, श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, श्री रामवृक्ष बेनीपुरी, श्री अज्ञेय, श्री यशपाल, श्रीमती सत्यवती मल्लिक, श्री श्रीराम शर्मा आदि रा नांव लिया जा सकै है। आं लिखारां रै परताप हिन्दी रो रेखाचित्तर साहित घणो विगस्यो है।

राजस्थानी में गद्य साहित तो पुराणें जमानें सूं ई मिलै, पण रेखाचित्तर हाल नईं नईं रै बराबर है। श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी रा रेखाचित्तर राजस्थानी गद्य साहित में घणें ऊंचें आसण रा इधकारी है। जे साच कयो जावै, तो रेखा चित्तर मांडण में जित्ती सफळता जोशीजी नैं मिली है, बित्ती राजस्थानी रै केई बीजें लिखार नैं नईं मिली। हिन्दी में जिका रेखाचित्तर लिखीज्या है, बै "सबद्का" सूं घणा लारै है। जोशीजी रा रेखाचित्तर ना तो श्री प्रकाशचन्द्र गुप्त रै चितरां वईं जावक छोटा, अर ना श्री बनारसी-

दास रै चितरो दई घणा लांबा । चतुर्वेदीजी तो फेर भी ग्रापरै चितरां नै घटनावां रै वरणन सूं रोचक बणाया है, पण बीजां इण बात रो बौत कम ध्यान राख्यो है ।

श्री जोशीजी री लेखणी सूं मंड्योड़ा चितार ग्रापरी रोचकता ग्रर सुन्दरता में इत्ता सांगोपांग है कै दूजा हिन्दी रा लिखार ओरी होड़ नई कर सकै । हिन्दी रै एक मानीतै विदवान रो कैवणो है कै "मक्खण-सा" री जोड़ रो रेखाचित्तर हिन्दी में है इज कोनी । एक बीजै विदवान री राय में "गुलछर्रामल" राजस्थानी री 'प्रतिनिधि' रचना है । एक राजस्थानी विद्वान "फर्रामल" नै राजस्थानी साहित री 'ग्रमर कृति' कैय'र बखाणी है । वास्तव में "सबड़का" र रेखाचित्तर एक एकै सूं सवाया है ।

श्री जोशी रा रेखाचित्तर एक इसो सुवाद ग्रर रस देवै जिण सूं एकै-सागै कविता, काणी, लेख ग्रर संसमरण रो ग्राणंद ग्रावै सरसता ग्रांरै चितरां री खास विसेसता है । जागा-जागा हंसी र लवीर खंड्योड़ी है । लैण-लैण में भांत-भांत रै रस रा सबड़ भरया पड़या है । पानां ई पैली पढ़ार मुळकै, फेर सबड़कै रो सुवा ग्रायां फाट'र हंसै । "बापूजी" रेखाचितार में बापू ग्रावै साव रोग रो वरणन करतो बेटा लिख्यो है- "कदेई-कदेई जानरोवात रै मूडणां ग्रावै साव ग्रमूज'र भुंभळाटण लाग जावै, ग्रर रीस कैवै- 'डंको' (गधो),तो बापूजी कैवै-'पत, सर' (हां, साब) । ग कैवै- 'मंडो' (बांदरो), तो बापूजी कैवै- 'पत, सर'(हां साब) ।

इण तरै निजार ग्राग-ग्राग हंसी रो फुं'वारो छुटाय'र वि

साथ आपरी आपली सहानुभूति भी जगर बताळ ।

रेखाचितरां रा नांव भी गुदगुदी उपजावै जिसा है, जिणां नै सुणतांई आयो-पड़यो लाधो तो मंड आवै, जियां– फरोमल, गुलछर्रामल, फदड़पंच, रेंडवो, हसाणियां अचारजजी आदि।

श्री जोशीजी रै रेखा चितरां में विसै नै थोड़ा-सा सब्दां में साकार करण री विसेसता है। जियां चितारकार थोड़ी-सी आडी-टेढ़ळी लकीरां खेंच'र आपरो चित्तर त्यार करै, उणी तरै जोशीजी रै रेखाचितरां में थोड़ा-सा'क सब्द ई विसै नै साथ'र सामो ऊभाण दै। "गुलछर्रामल" रै सरू में लिख्यो है– "मसराइज धोती, मखरास मोल रो कोट, पगां में देसी पगरखी, कदेई-कदेई मोजा भी, माथै ऊपर टोपाटोप केसरिया पाग, खांधै ऊपर गमछो, जिको जूता अर मूंडो दोनूं पूंछण नै आडो आवै, कद सरासरी, डौल-डौल गठीलो, मलाई में कुस्ती सूं त्यार हुयोड़ो हूवै जिसो, मूंछयां भिड़कावरी, थंरै ऊपर मुळक- यं है गुलछर्रामलजी ··· ।" लिखार रै इण बरणन रै आधार मायै हजारूं मिनखां में भी गुलछर्रामलजी छाना नईं रेवै, अर थांनै जाणन आळा पड़तां ई पिछाण लेवै कै गुलछर्रामलजी कुण है।

"लबड़का" री उत्कृष्टता रो एक कारण है लिखार रो राजस्थानी भासा मायै अनोखो इधकार। श्री जोशीजी राजस्थानी रा मानीता गद्य-लिखार है। आप आछा काणीकार, अर राजस्थानी भासा रै पैलड़ै उपन्यास "आभै पटको" रा लिखार है। रेखा चितरां में तो भासा री प्रौढ़ता अर प्रांजळता और भी निखरगी है।

बडै लोकां रा चित्तर उतारण आळा तो घणा ई लिखार है,

पण छोटा अमल माळा में याद करै, इसा विचार थोड़ाई है। जोशीजी आपरी कलम सूं समाज रै इणी वरग रा विचार प्रगट्या है जिको आज पंसी मरणबूक्यो पड़्यो हो। बिना संकीर्णता अर जात-जात रै भेद-भाव, आप में विचार रो व्यापक अर उदार दृष्टिकोण मिलै है। "समझणा" राजस्थानी साहित नैं जोशीजी री अमोलक देन है। पढार इण रचना रो घणो आदर करसी, अर इणनैं घणैं कोड सूं अपणासी, इसो पूरो भरोसो है।

बीकानेर
२७ जून, १९६० ई०

नरोत्तमदास स्वामी
चन्द्रदान चारण

पर विध री

आज सूं कोई पचदै बरसां पैली जद प्रो० नरोत्तमदास जी स्वामी राजस्थानी साहित्य पीठ री साप्ताहिक बैठक श्री गुणप्रकाशक सज्जनालय, बीकानेर, में बुलाया करता, बठै हूं भी राजस्थानी री रचनावां सुणाया करतो । वां रचनावां में एक रचना ही 'परांमल', जिकी स्वामीजी रै दाय आवी पर वां 'परांमल' नैं जोधपुर सूं छपणियै, भाई श्रीमन्तकुमारजी व्यास रै "मारवाड़ी" रूपै में भेज दियो । श्रीमन्तजी सूं मिल्यां मालम पड़ी कै 'परांमल' वानैं घणी आछी लागी, पण वा छैनो, किता ई लोक 'परांमल' सारै पड़्या है । श्रीमन्तजी म्हनैं इणी तरै रा और किस्साम लिखण री कह्या हो ।

म्हारी लिखावट री आ एक कमजोरी है कै जे हूं सादो चितराम पोळासूं, तो ई वीं में हंसी-मसखरी री पुट आवण सूं नईं रोक सकूं। इण रो कारण ओ है कै बाळपणै सूं ई जद मनै उदबुदी जिनस्यां माथै हंसो आंवतो, तो रुकतो कोनी। चौथी किलास री बात मनै याद है। एक छोरो हंसावण सारू बात छेड़'र आप इण तरै हंसतो बंध हुयग्यो जाणै खटको बंध कर दियो हुवै, पण म्हारी मसीन चालू हुयगी। मास्टरजी सरू करया बेंत लगावणा। पण बेंतां सूं जद हंसै जोर पकड लियो, तो दयाल गुरूजी बेंत छेड़ै मेल दी, अर मनै छूट दी– 'तूं एक वार धाप'र हंसलै।'

दसवी किलास में म्हारो एक साथी भूगोल रै घंटै में मूंडो भीच'र सिध गूजांवतो। (साथी रो नांव बताऊं कोनी, अबै सेठ हुयग्यो, सायद रीसाणो हुजावै।) सिध गरजाय'र आप इसो भोळो बण'र बैठतो जाणै गरजण वाळो कोई बीजो है। इण सूं म्हारो हंसो छूट जावतो। हूं रोकतो, पूरी कोसीस कर-कर, पण इसो लागतो कै अबै फटाकै दई हंसो फाटगी। निरी बार तो मास्टरजी रै डर सूं थारं जावतो, पण कदेई-कदेई सीट माथै फटाको

बोल जांवतो ।

वा कमजोरी हाल म्हारै में बिसी ई है । हंसो सरू हुयां पछै बीनै रोकणो हात री बात कोनी । एक वार एक बौत बडै अफसर आगै खासा चवड़ै हंसो आयग्यो, अर बीं पूछ लियो– 'हंसो कांय रो आवै है ?' जे सादा चितराम बिगड़्या है तो इण अैब रै कारण, जे व्यंग में रोचकता आयी है तो इण आदत रै कारण ।

इण आदत नै टाळ'र, चितराम री शिक्षा जे कठै सूं ई मिली है, तो म्हारा पूजनीक माजी श्रीमती केसर बाई सूं । राजस्थानी भासा मायँ आपरो सागीड़ो इधकार है । जद केई रै डौळियै रो बखाण करसी, तो नैणां आगै इसो चित्तर मेल देसी जिसो कैमरै अथवा कळाकार री कूंची सूं नईं उतरै । जदपी आपरा रेखा-चित्तर, हाल री घड़ी जवानी ई है, छप्या कोनी, पण बांनै सुणन रो मनै सदेई सौभाग रैयो । इण कारण जे केई भी चित्तर में कठैई रोचकता आयी है, तो वा पूज माता जी सूं पायोड़ी शिक्षा रै परताप ।

जद प्रो० नरोतमदासजी बीकानेर सूं बदळी मायँ

उदयपुर पधारग्या, तो लारै सूं राजस्थानी री चलचाल कायम राखण में श्री अगरचन्दजी नाहटा रो घणो हात रैयो है। म्हारी नींद भी वै वगत-वगत मायँ उडांवता रैया है जिण तईं हूं नाहटै जी रो आभारी हूं।

श्री नरोत्तमदासजी स्वामी, अर श्री चन्द्रदानजी चारण तईं सगळी सरधा चढाऊं जिणां इण पोथी री प्रस्तावना लिखण री किरपा करी।

केसर प्रकाशनालय, बीकानेर } श्रीलाल नथमलजी जोशी

पूजनीक माजी रै
पावन हातां में
घणै मान
भेट

★

सवड़का

-:सूची:-

हूं बींनें मोकळा दिनां सूं ओळखतो हो, अर नांव ई सुण्यो– फर्रामल। मन में विचार करयो कै इसो उदबुदो नांव कदेई सुण्यो तो कोनी, पण दुनियां घणी ई बडी है, अर नांव ई मोकळा है। केई आदमी रो नांव राम, अथवा किसन सुणनैं कदेई अै भाव को उठ्यानी कै ओ आदमी मरजादा परसोतम अथवा सोळै कळा रो अवतार है'क नीं, पण कांई ठा क्यूं, ईं रो नांव सुण'र म्हारी आ जाएान री मनस्या हुयी कै ओ आदमी साचेई फर्रामल यानी गप्पी-बाज तो को है नींक।

अेक दिन भाये संजोग सागो हुयग्यो। साथलां मांय सूं अेक नैं फर्रामल कैयो– "हूं तनैं डाक्टर अचारज रै बंगलै में गुमास्तो रखाय देसूं, टैम घणी को हुवै नीं– खाली सिंझ्या री सात सूं रात री इग्यारै बजी ताणी है। पण भई देख, काम जी तोड़नै करणो पड़ेला। महनो भी तो रुपियां सौ रो है। कैवै कोनैं है सौ रुपिया!"

ओसर देखनै हूं भी बोल्यो– "इमी नोकरी जे म्हारै हात लाग जावै तो न्याल होजाऊं हूं तो।" फरांमल रै ढील कठै ही ? झट बोल्यो ई– "तनै तो काल ई रखाय दूं तूं तो टाइप करणो जाणै है, जिको साब तनै कोडायो राखसी। पण हापस रो तजरबो थारो घणो कोनी, ईं वास्तै तनै सौ नई तो पिचन्तर रुपिया तो पक्कायत दिराय देसूं। हूं डाक्टर साब रो पी. ए. (निजू सहायक) हूं। म्हारी बात बै थोड़ा ई टाळसी। काम तो रात नै च्यार घंटाई करूं, पण मइनो रुपिया दोय सौ बीस रो देवै है।"

"पी. ग्रे." री वात सुणनै साथला सगळा मुळक्या कै डाक्टर अचारज, जिको अठै पी. ग्रेम ग्रो. छोडनै सगळां सूं बडो है, उणरो पी. ग्रे. इसो आदमी जिण रा केस तो लूखा ग्रर बिख-रयोड़ा, दाड़ी बध्योड़ी ग्रर मूंढै री भवां उड्योड़ी, ग्रेक ग्रांख उतराद जोवै तो दूजोड़ी दिखणाद; बरसां में तीसां सूं ऊपर नईं, पण खांधा झुक्योड़ा, खाधा ईक्यूं, कमर ई कुड़घोड़ी, माथो किड़कावरो, ग्रर पग ग्रांटा पड़ै। पढ्योड़ो नवमी फैल, ग्रर दिन रा जठै नोकरी करै बठै सूं पचीस रुपिया मइनो लावै ! "पी. ग्रे." री वात जची तो केई रै ई कोनी, पण सगळा जींवती माखी गिटग्या।

हूं बोल्यो– तो, मनै साब रै बंगलै काल सूं रखाय देसो ?

फर्रामल– थारै घरे साब री मोटर लेयनै आऊं आज तो हूं, अर तूं बंगलो जाण जावै जद काल सूं थारी साईकल माथै आपेई आवोकरे।

हूं – भई, म्हारै साईकल तो है ई कोनी।

फर्रा० – अरे, आछो सोच करयो ! थारो तीन मइनां रो रुजगार तो हूं तनै म्हारै कनै सूं आगूंच देसूं। अेक तो आलीस्यान साईकल ले लिये, अर भई देख, थारी आ ड्रैस (गाभा) ठीक कोनी। हूं रुपिया देऊं जिकां में तीन सागीड़ा सूट करा लिये।

हूं– इत्तो करायां पछै फेर मनै कांईं चाईजै ?

इत्ती वात हुयां पछै बी दिन तो म्हे आप-आपरै काम गया। दूसरै दिन जद वो मिल्यो, तो मै कैयो– "उस्ताद ! रात तो हूं निरो अडीक्यो, पण थारा तो पत्ता ई नईं ?

फर्रा०– रात तो इसो अळूझ्यो काम धंधै में कै दो वजी सोवण नैं वेळा मिली।

हूं– तो अबै आज आवणो मोटर लेयनै ?

फर्रा०– हूं टैम को देसकूं नी, आसूं जद आपेई आ जासूं।

थोड़ा दिनां पछै बो मिल्यो तो झट बोल्यो ई– "मै थारै नांव सूं साब नै अरजी देयदी। तनै हूं म्हारो छोटो

भाई समझनै थारै खातर इत्ती जान लड़ाऊं हूं। पण तनै तीन दिन ताणी काम री जांच (ट्रायल) करावणी पड़सी।

हूं– आं तीन दिनां रा पइसा तो मिलसीं'क ?

फर्रा०– ना, ना, आं तीन दिनां री फूटी कौडी ई को मिलैनी।

हूं– काम री पारख कुण करसी ?

फर्रा० पारख ! पारख हूं करसूं और कुण करसी।

हूं– तो अठै म्हारै दपतर में ई करलै।

फर्रा०– नईं, नईं, अठै नईं, साब रै बंगलै में होसी।

हूं– पारख करती बेळा म्हारो कांई पख तो लेसी'क नईं ?

फर्रा०– पख लेऊं कोनी सागी बाप रो ई, तूं किसी पत्रारी में है ! पण अवार जे तूं पूछै तो हूं तनै दुनियां भर री बातां बता सकूं है। म्हारै सूं कोई विद्या छानी कोनी।

थोड़ा दिनां पछै फर्रासस मिल्यो तो बोल्यो– "काम पारख तीन दिन नईं, पन्द्रै दिनां ताणी होसी।"

मरेई-मरेई फर्रासस रै सागी दळियै सूं जीव अमूजण लाग्यो, इण कारण मैं बात आडी घालनै पूछ्यो– डाक्टर

प्रचारज रै सूं पैली तूं कठै काम करतो हो ?" उथळो मिल्यो–"दस बरसां तईं हूं मम्बाई में टाइप री मसीनां री कंपनी में बडो ग्रफसर हो, वठै ग्रावड़्यो कोनी, जद ईं भूखै बीकानेर सूं माथो लगावणो पड़ै है।"

हूं– ग्रठै है तो थारै ग्राराम ई ?

फर्रा०– ग्राराम कांईं नव चूलां री राख है ? ऊगियै-ग्राथणियै री तो ठा ई को पड़ै नी। झांझरकै पांच बजी ग्राऊं दफ्तर, जिकै री रात री तीन-तीन बज जावै– ग्रठै ई रोटी, ग्रर ग्रठै ई वाटी !

हूं– तो तूं बंगलै री दिपटी कर्‌यां काढै ?

फर्रा०– बंगलै री दिपटी कर्‌यां काढू ? ग्रा ई तो थारै में धाप'र कसर है। हाल तईं बऊ-बेटी रा लक्खण सीख। सुण, मेमसाब री हाजरी दिलोज्यान सूं भरूं हूं। बस इत्तै में ई समझ जा। ग्रर मेमसाब भी म्हारै माथै रीझ्योड़ी है। जे कर्‌यां ई साब रै बंगलै काम करण नै नईं जाऊं, तो दूलीं ग्रापेई सटको सार देवै। बौत रंगबाज लुगाई है। ग्रर देख, मेमसाब री हाजरी तनै भी जी तोड़'र भरणी पड़सी।

हूं– कांईं तो मेमसाब री हाजरी डाक्टर ई भरतो होसी ?

फर्रा– डाक्टर नै वापड़ै नै मरण नै ई वेळा कोनी; वो कोरी हाजरी भरै ?

फर्लामल रो मूंढो एक दिन उतरघोड़ो हो । मैं पूछ्यो "आज कांई होग्यो ?" फर्लामल फीमग्यो । मैं धीर बंधायी तो बोल्यो– "म्हारी तो कठै ई, हड़मानगढ़ चूरू, कोसीस करनै बदळी करवाय देवै, तो न्याल करै।

हूं– बदळी हुयां पछै तूं डाक्टर साब रै बंगलै री दिस कर्यां काढसी ?

फर्ला०– बींरो सोच ई ना कर। बारै महनां में जे दिन अठै आयग्यो, तो सगळा कागद फण्ण-फण्ण फैंक दे दूजै सूं इत्तो काम हुवै कोनी दो बरसां में ई।

अेक दिन हूं तो म्हारै दफ्तर में काम करतो अर फर्लामल खायो-खायो, सास उठ्योड़ो आयो, जाणै अेक री दौड़ लगायी हुवै। बोल्यो– "लै भई, हूं बधाई दूं।"

हूं– काई बात री ?

फर्ला०– हैनफैन मनै आवै कोनी, बधाई मानलै म्हारी

हूं– थारी अकल तो ठिकाणै है'क ?

फर्ला०– हत्यारी ! आंधै रै आगै रोयनै नैण गमावणा देख, हूं तो जाऊं हूं जोधपुर, पी. अेम. ओ. रो पी वण'र, अर अठै म्हारी जागा दिराऊं हूं तनै। रिग्यां'क रंग देखाळया, कर सकै है कोई होड म्हारी

हूं– थारा तो नकसा इज न्यारा है।

फर्रा०– थोथी बाता सूं हूं राजी को हुवूनी। चाल सामली दुकान, अर तू पी. श्रे. हुयो जिकै री वधाई में मिठाई खुवा।

हूं– अरे भला माणस ! तैं मनै हाल तई कोई लिख्योड़ो हुकम तो देखाळयो ई कोनी, अर पैली मीठो मागण लागग्यो ? साची बात तो आ है कै मनै तूं कैवै जिकै में कांई गोळ लागै है।

फर्रा०– अेक बात कंयदे, मीठो खुवासी'क नई ?

हूं– बिना हुकम देखे कियां खुवाऊं ?

फर्रा०– म्हारी बात री कोई सनद ई कोनी ?

हूं– जचै ज्यूं समझ।

फर्रा०– तो थारै खातर नोकरी-धोकरी को है नी। तूं हकनाक मूंडो धोवै है।

इत्तो कंय'र फर्रामल रीसाणो-सो'क हुयनै टुरग्यो। जा पछै मिलै तो सदेई है, पण बोलै कदेई कोनी। मनै पसतावो भी हुयो कै अेक रपट्टी री पाव मिठावड़ी मट्टं खोवड़ा तैं पी. अे. री नोकरी हात सूं गमाय दी, पण जोर कांई हुवै ? सीर-संस्कार इसा ई हा।

''अरे क्यूं फालतू गैलायां करै, तनै कुण भोळायो हो तगादो, ग्रै तो घरे बैठां भाड़ो देवण ग्राळा है।'' रमतियै नै रीस आयगी। तौर बदळनै बाप सूं बोल्यो– काकाजी ! थे म्हारी बोत कन्सल्ट (इन्सल्ट रै बदळै) करदी। थे किसा सदैई ग्रठी रैमो, थानै सौ वरस पूग्यां तो ग्रो काम मनै ई सांभणो पड़सी !

माथै ऊपर बंगला पट्टा छंटायोड़ा राखतो। दाड़ी ग्रापेई कर लेंवतो। एक दिन पाछणो सफा मोळो हो। ग्राप सोच्यो– ईं नै कठैई चलायनै तो देखां। लिलाड़ सूं ऊपर, माथै रै, पाछणो चलाय'र देख्यो। पाछणो ई ममगरो हो, भट चालग्यो, ग्रर रमतियै रै माथै में चूलो कढग्यो।

छोरी जे भणी-गुणी हुवै तो भी ब्याव सोरो नईं ढूकै; पण छोरो किसोई हुवो, जिण मे रमतियो तो ग्रलवत पढ्यो-लिख्यो हो, फेर बीनण्यां रा काईं घाटा ? जद परणीजण सारू सासरै जावण लाग्यो तद भायेलां भांत-भांत री सल्ला दी, जिकी बो हिरदै में टूकली। वईर हुवण लाग्यो तो मां भी कैयो– देख रमनू ! तूं बोलै घणो है। सासरै में जे लपर-चपर करैलो तो लोग टकुर गिणैला। बिना बतळाये नईं बोलणो। सासरै में दो बार बतळायां

एक वार बोलणो ।

सासरै गयो, सागीड़ी मिजमानी हुयी । अबै रमतियो कठै मांवतो । सगळै भाएलां में केवतो– "परणै तो सगळा ई है पण म्हारै सासरै जिसो सासरो अर इसी धूमधाम सूं हुयोड़ो व्याव देख्यो हुवै तो बतावो ।" भाएलां कंयो– व्याव तो आज रात रा होसी, इण सूं पैली ई थारो तो माथो चरक चढग्यो दीसै । तनै कित्ती वार कंय दियो कै तूं कम बोल्या कर !

चंवरी में वैठ्या तो आप वीनणी रो हात पींच्यो, छोरी चुपचाप वैठी रैयी । रमतियै सोच्यो– आ तो पाछी कांई करै ई कोनी, जणै जोर सूं चूंठियो बोड्यो, नख न्यारो खुभाय दियो । वीनणी वोबाड़ मारण लागगी, हतळेवो छोड दियो । पंडतजी आंख काढनै कंयो– "स्याणा-स्याणा वैठ्या रैवो कंवरसाव !" पण इयां रमतियो वरदास करण आळो नई हो । बोल्यो– "वैठ्यो रैवण नैं आयो हूं'क फेरा खावण नैं ?" और लोग तो सायद ई सल्या होसी, पण पंडत माथै में तड़ीड़ लियो– छोरी रै आछो मरतार डूबयो ।

व्याव रै दूजै दिन जद समठावणी सारू गयो तो मौको देख'र सासू पूछयो– "अबकै किसी किलास में चढ्या

कंवरसाब ?"

पण मां रो कैयोड़ो हो कै दो बार बतळायां एक बार बोलणो, इण कारण कंवरसाब उथळो नईं दियो। जद मामू कैयो– "नतीजो तो निकळ्यो होसी ?" तो कंवरसाब बोल्या– "हां।"

मामू– पास होग्या होसो ?

कंवरसाब– (चुप)

मामू– परचा बिगड़ग्या होसी ?

कंवरसाब– नईं बिगड़्या तो कोनी।

मामू– तो फैल किया हुया ?

कंवरसाब– (चुप)

मामू– पास-फैल ई भाग री बात है।

कंवरसाब– सब काम भाग सूं ई हुवै।

मामू– पढाई चालू तो राखोला ?

कंवरसाब– (चुप)

मामू– फैल हुयां हीमत तो टूट जावै।

कंवरसाब– घणा टूट जावै।

मामू– थे तो पैलड़ी बार ई फैल हुया होसो ?

कंवरसाब री तो इण सवाल माथै 'चुप' री बारी ही, पण बनै बैठ्योड़ै मामूसै मन ई मन में सोच्यो कै दो तो

थाछो माजनो भदराबै- हुयो तो है पास, पण सवालां रा उथळा द्रण तरै देवै, जाणै फैल होग्यो हुवै ।

भाएलै घणो ई जोर देयनै कैयो- "नई सा, श्रो तो श्राछी तरै पास हुयो है, म्हे दोनूं मार्थं ई पडां हां । म्हारी किलास भर में ई कोई छोरो फैल को हुयोनी ।" पण इण बात माथै सासू नै रत्तीभर भी भरोसो नई हुयो, कारण, जे कंवरसाव पास हुया हुंवता तो पक्कायत कैय देवता- "हूं पास हूं ।"

परणीज'र जद पाछा घरे श्राया तो श्राप भाएलां नै गोठ दी, कारण जान में तो गिणती रा श्रादमी गया हा। भाएलां घणा तमासा करया, श्रर रमतियै नै उठ बंदर, बैठ बंदर वणायो । फेर भाएलां सुभ कामना परगट करी "भगवान तनै बेटो देवै छव महनां रै मांय-मांय।" "तो एक गोठ फेर ।" रमतियो बोल्यो ! जद भाएला खड़खड़ हंसण लाग्या तो रमतियै नै ठा पड़ी के श्रा सुभ कामना नई मसखरी है, श्रर वो मसखरै री ठोडी झाल'र मचकाव लागग्यो ।

भाएलां पूछ्यो- तूं भाभी रै दाय तो श्रायग्यो'क बा तनै सफा इल्लू रो ढकणो समझै है ?

"वाह, बा तो म्हारै सूं बीत राजी है, हरे

ात में।"

"सबूत कांई इण वात रो ?"

"सबूत ? अठै सू पाछी आपरै पीरै जावण लागी
द खूब रोयी. अर हूं भी घणो ई रोयो। इण सू बेसी
ौर कांई सबूत होसी ?"

भाएलां री सुभ कामना सू बेटो भी हुयो। गोळ्यां
ऊडी। छोरो आठ-दस महना रो हुयो जद 'मा-मा' हेलो
करण लागग्यो। छोरै री आ बोली बाप नै घणी सोवणी
लागी इण कारण आप भी छोरै री मा नै, छोरै रै
देखादेख, 'मा-मा' कैवण लागग्यो।

आप एक इसकूल में मास्टर हुयग्यो, पण छोरा
नटखट घणा– मास्टरजी रै घटै मे मनचायी हो-हा करै,
जासूसी उपन्यास वांचै, कबूतर दईं गटरगूं-गटरगूं करै,
सिप गरजावै, आपस में वाथबाथ लडै, खुरस्या ऊंधी करै;
मेज्यां माथै बैठै, दवाता लडावै अर सूनी किलास में
हुवणियां सगळा कोतक करै, जद के मास्टरजी गुरसी माथै
बिराजमान है। सरू-सरू में मास्टरजी रौब जमावण री
चेस्टा करी, अेक-दो छोरै रै पांसळी माळो धुरा वेर
दियो पर माईत झट मोळभो लेय नै आयग्या। दो-तीन
टोगड़ छोरां तो एक दिन मास्टरजी री धोती खेंच नांखी

अर एक अऊत तो एक दिन भग छोड़ग्यो । अबै मास्टरजी देखै जीवड़ा क्यूं पालनू सारा सूंथा तोड़ै, पढ़ै तो पढ़ो, नईं पढ़ै तो थारै बाप रो काईं लियो ।

गरमी री छुट्यां में आप देख्यो सासरै रो चक्कर काढ लूं । बैठग्या रेल में, अर आयग्यो टीटी । टिगट मांग्यो तो आप बोल्या– "हूं तो सदेई बिना टिगट जाऊं, आज तईं कैण ई म्हारै कनै तो टिगट माग्यो कोनी ।" "आज तईं में आप रेल सूं बिना-टिगट रो मोकळो फायदो उठाय लियो, आज हूं चारज करलू तो कांईं आंट है ?" टीटी ऊपरलै मिठास सूं कैयो । भट रमतियों फुरग्यो– "नईं, साब ! हूं तो आज पैलड़ी वार ई बिना टिगट आयो हूं ।"

टीटी बोल्यो– "आज चारज होजासी तो फेर बिना टिगट रो नांव नईं लेसो; इण कारण आज तो चारज हुवणो ई ठीक है ।" रमतियै दूजी चाल फंकी– "हूं तो मुरलीमनोहर बाबू नै पूछ'र चल्यो हूं, बिना पूछे थोड़ो ई आयग्यो ।" टीटी मुळक'र पूछ्यो– किसो मुरलीमनोहर ?" रमतियो तड़ाक बोल्यो– "किसो-किसो, मुरलीमनोहरजी टीटी ।" टीटी बोल्यो– "बस माफ करो, पइसा काढो, मुरलीमनोहर तो म्हारो ई नांव है अर मैं थांरी सिकल अवार पैलड़ी वार देखी है ।"

गुलछर्रा मल

मसराइज धोती, मदरास मील रो कोट, पगां में देसी पगरखी, कदेई-कदेई मोजा भी, माथै ऊपर टीपा-टीप केसरिया पाघ, खांधे ऊपर गमछो, जिको जूता अर मूंछो दोनूं पूंछ्‌ण नैं आडो आवै, कद सरासरी, डीलडौल गठीलो, अखाड़ै में कुस्ती सूं त्यार हुयोड़ो हुवै जिसो, मूंछ्यां फिड़कावरी, चैरै ऊपर मुळक– औ है गुलछर्रामलजी, जैपर रै एक कारखानै में फिटर।

साच बोलण री आपरै सोगन है। जे कोई इणां री बात मान'र बीरै माफक काम कर लेवै तो पक्कायत कूवै में पड़ै। इसा मिनख सैर में गिणती रा लाधै इण कारण छाना नईं रैवै। घणो नईं तो आधो जैपर आपनै आछी तरै ओळखै। जैपर क्यूं, अजमेर-जोधपुर में भी आपरी कीरती फैल्योड़ी है, इण कारण आपरै चकमै में कोई भूल्यो-भटक्यो भलेईं आय जावो, और तो सगळा ऊजळा राम-राम राखै।

आप सायद सोचता हुवोला कै इसा गुलछर्रामलजी कोई चोर है'क, धाड़ेती है, का कोई लड़ाई-खोरिया है'क

थांई है जिण सूं इरा नामी हुयग्या । म्रो मुराने अवस्यो होसी के आप दिन ऊगे जिण सूं पैली, मांझरके च्यार बजी उठै, सिनान-ध्यान, पाठ-पूजा कर'र रोटी जीमनै मान बजी नक्की होवै । घर सू निकळण लागै उण सूं पैली पालथी मारनै फेर भगवान रो ध्यान लगावै– हे च्यार भुजा रा नाथ ! तूं पत राखे वावलिया, म्हारी लाज थारै हात है। आ दुनिया रांड कूड़ी घणी इण कारण मनै भी दिन भर कूड़ बोलणो पड़ै अर कूड़ी-कूड़ी सौगन्यां खावणी पड़ै, पण म्हारै मन में तो हूं जाणूं हूं के सौगन कूड़ी खाऊं हूं। हे तिरलोकी रा नाथ ! कूड़ो-कपटी हूं जिसै रो बेड़ो पार लगाए, कसूर माफ करे सांवरिया ।

अवै आप घर सू निकळै, मन में सोच'र के आज हूं काल सू ई सवाया कूड बोलसू । आप जचै जिकै नै, जचै जणै ई, बिना सोग-पूछ री बात कैय देसी । सामलो जे नईं मानसी, तो कैसी– 'म्हारै जीव री सौगन !' इत्तै सूं भरोसो नईं हुवै, तो "धरम री सौगन ! परमात्मा सूं मारयो जाऊं !!" अर सगळां सूं पछै– "जे म्हारी बात कूड़ी हुवै, तो हूं असल बाप सू पैदा को हुयोनी !!!" आ बात सुण्यां सूं नवा मोदा तो भिड़ते ई चित आवै, पण ..। सदेई पाकी में आय'र हुसियार रैवणा चावै, वै फेर

फळीज जावें । इण तरें आप दड़ाछंट कूड़ बोलता जावें, ए मन में सावधान– भई भगवान करें तो दिन ऊगते ई ाफी माग्योड़ी है, अबें तो कूड़ बोलूं जिती ई म्हारी है ।

कदेई-सी'क सेर नें सवा सेर मिल जावें जरां दाळ ळे नईं । जद सिरकण नें जागा नईं लाधें, अर आप देखें- ाज तो मिट्टी कोजी पलीत हुयी, हो जिसो चवड़ें आयग्यो, लमो उघड़ग्यो, इसी हालत में, जे कोई डील में निमळो ैसी तो आप हातापाई कर लेसी; पण, जे देखसी कें ातापाई कर्‌या सामलो चूरमो कर नाखसी, तो आप ोर-जोर सूं वकण लाग जासी– "बस-बस, मनें थारें सूं ात ई को करणी नी, थारें सूं बात करें जिको कम असल ो हुवें । थारें भवें हूँ मरग्यो, अर म्हारें भवें सामलो मरग्यो ।" जे कोई कंम देवें– "देखो माळीजी, काल फेर यां ई भेळा बैठसो, इत्ती बात बधावो मतीना," तो ापनें छिर चढ जावें–'जे हूं ईं सूं बोल जाऊं तो मैं माळण रा को चूंग्यानी, म्हारी मां रांड मनें फिरती लायी ।'

गळें री सोन-बगस (साउंड-बॉक्स) इत्ती जोरदार है कें केई घंटा ताणी बराबर सागी ऊंचें सुर मे बकबो- करसी, छाती में पौंच भी है– तमास्त-हमास्त रो तो पांच- दस मिट में ई गळो बैठ जावें ।

कारखानै रा आदमी दुपारै री छुट्टी में वारलै छातै नीचै बैठ जावै । आप बठै नित नवी खबरयां लावै । अेक दिन आप घर-बीती सुणावण लाग्या: "भंवर बाई साब रो ब्याव हुयो जद हूं अन्दाता रै मैलात में बीजळी रो इनचारज हो । म्हारो काम इसो अप-टू-डेट कै बारै सूं बडा-बडा अंजीनियर आया जिका फिटन देख'र दंग रैयग्या । वाटसन साव अन्दाता नै पूछ्यो– "आपरै मैलात में बीजळी रो अंजीनियर कुण है, हूं मिलणो चाऊं हूं।" अन्दाता पूछ्यो– "क्यूं, कोई कसर रैयगी ?" वाटसन साव कैयो– !"नईं, नईं, आपरै अठै तो रतन रेत में रगदोळीजता हुमी, आप कित्ती तिणखा देवो बीनै ? अन्दाता मान मान करनै बोल्या– "वाटसन साव ! थांनै माफी मांगणी पड़सी । म्हारै राज में रतन रेत में रुळ सकै ? हूं पारखू भंवरी हूं । म्हाराज कंवर रै बराबर इण अंजीनियर री कदर करूं । जीवूं जद बीयगो पाणी म्हाराज कंवर, पर रावै पाणी अंजीनियर रो थाट लागै ।" हूं अन्दाता रै कारै ई ऊभो हो । म्हारै माथै माथै हाथ धरनै अन्दाता बोल्या- "ओ है म्हारो अंजीनियर ! रैवै सादी गरला मे है, अंगरेजी भण्योड़ो भी कोनी, पण काम रै कारण आमो

भ्रा बात सुण'र स्रोता वितराम रा हुवे ज्यूं रैयग्या मन में सोचो हुसी- भ्रो किसो'क भागवान है जिको भ्रन्दाता रै मानीजै। म्हे ई जे इसा हुवता तो किसो'क!

सगळां नै टकटकी बांधे बैठ्या देख'र गुलछर्रामल फुरण्यां फूलाई, भ्रांख्यां रा मटका कर्‌या, पाघड़ी रो पेच संवार्‌यो, भ्रर च्यारा पासी निजर घूमाई भई म्हारी बात भ्रांनै किसी'क लागै है, सगळां रै घांटोघांट उतरगी का केई रै सळ रैयग्यो। जद देख्यो कै सगळा बोला-बोला बैठ्या है, जणै फेर चूड़ी चढाई- "भ्रन्दाता तो भठै तईं कैयो कै भ्रो तो गुल्लो (भ्रन्दाता मनै गुल्लो ई केवता) रीसाणो हुवणो को जाणै नी, पण जे कदास भ्रो रूठ जावै तो मनै ई रै पगां में पाग न्हाख'र मनावणो पड़ै। जित्ता ई वाइसराय भ्राया, कोई म्हारै मैलात री बडाई करतो को धाप्योनी, पण इयै रो सेवरो गुल्लै रै माथै है।" फेर कैयो भ्रन्दाता- 'वाटसन साब! लार्ड लिनलिथगो तो ई नै विलायत लेजावण रा नौरा काढ्या, पण में हाता-जोड़ी कर-कराय'र भीठ भठै राख्यो। जे भ्रो भ्रंगरेजी पढ्योड़ो हुवतो तो कोनै ठा किसा भ्राविस्कार करतो, भ्रर दुनिया रा किता भ्रंजीनियर इण रै पगां में नाक रगड़ता। पण, सोनै में सुगन कठै पड़ी है" कैय'र भ्रन्दाता

ठंडो साग लियो।

माघो मिन्ट ठैर'र– "मनवाई में तो थे सगळा मीजो, भई म्हानैं घड़गी जिकी बाड़ में ई बड़गी, पण थां में लम्खण कोनी कौडी रो ई। अर जे कोई समझै कै हूं तीसमारको हूं, तो म्हारैं सामनैं आवै। थे तो बिनैं सेत री मूळी हो, काल मरी, अर आज भूतणी हुयगी। म्हारैं खातर तो विलायत झुरतो हो, पण करमां में तो लिख्यो हो टकै-टकै रैं मिनखां सूं मायो लगावणो, जणैं अठै कारखानैं में पड़्यो दिन काटूं। पण फेर भी मिस्त्री ऊपर, फोरमैन ऊपर, ठस्सा तो आपां रा ई रैवै। कोंरी मजाल है कै बन्दै नैं होट रो फटकारो ई देय दै। जे एक कैवै तो दस सुणाऊं, मुरगी टैंट करदूं।"

इयां कैय'र फेर गुलछर्रामल च्यारूं खानी निजर फैंकी। मन मे राजी हुयो कै आज तो सागीड़ो मजमो जमायो– सगळा होट सीड़े बैठ्या है, जद जची कै और हाव बधाऊं– 'अर म्हारैं काम में नुक्स काढणियो जे कैई रांड जण्यो है तो म्हारैं सामनैं आवै।"

इत्ती सुणी'र का खूणैं मांय सूं एक कारीगर उठ्यो· "ओ रे ओ गूंग सांड! कीनैं सुणावै है तूं? निसरमो गधो! तनैं कोई नईं जाणैं जिकै रैं आगैं पड़छाव लगा,

तो थारी रग-रग जाणूं हूँ। 'अन्दाता रै मैलात में ोजळी रो इनचारज हो।' कदेई थारो बाप ई हुयो नचारज ? मैलात में पग ई धरयो याद श्रावै ? थारै जेसा सैकड़ूं लूनाड़ा फिरै। विलायत आळा तनै भुरता ा ? जींवतै नै ई ? जाट री बेटी, काकोजी नाव ! आज तो हूं टाळो राखूं, फेर जे गाळ-गुपत सुणली तो म्हारै जिसो कोई भूंडो को है नी। इसी करूंलो कै कुत्ता ई खीर को खासी नी। काल तईं तो कुळी री नोकरी खातर अरजी लिए बुड़िया खोतरतो हो, आज फिटर हुयग्यो जणै अवै फाटण लागग्यो। फाटै आपेई, पाव री हांडी में सेर कठै सू मावै ?"

गुल्लै रो मायो सूनो हुयग्यो—धूं-धूं करण लागग्यो। काळजो फड़क-फड़क करण लागग्यो, मूंडै री हवा उडगी। सोच्यो—कात्यो-पीज्यो कपास हुयग्यो, सगळी बातां माथै पाणी फिरग्यो। पण चुप रैऊं कोनी सागी बाप आय जावै तो ई। बोल्यो—"देख, बडो समझ'र थारो कायदो राखू, जे दूजो कोई बिच में बोल जावै तो थप्पड़ री देय'र मूंडो मुंवाय दूं। तनै ठा नी, ठिकाणो नी, अर हूं लाडै री मुआ, थोथो फंदड़पंच हुयोड़ो रैवै ! जे तू म्हारै सूं बोलग्यो तो तनै थारै नेम धरम री सौगन है, अर जे हूं बोल जाऊं

तो मैं म्हारी मां रांड रा को चूं'ग्यानी।" इत्तो कैंयो'र कारखानें री तीसरी सीटी बोलगी। सगळा फाटक में बड़'र आप-आप रै काम लागग्या।

आज गुलछर्रामल केई माड़ै मिनख रो मूंढो देख्यो हुसी, नईं तो गुल्लोजी बातां रा गुलछर्रा उडावै अर कर्यां बैठै ज़िका मूंढै रै सामो जोंवता रैवै, कोई आंख ई को उठावैनी। अबै चूड़ी चढावती बेळा मा माळीजी पैली देख लेवै कै बो झगड़ालू कारीगर तो कठै ई को बैठ्यो है नी। बो नईं हुवै तो फेर एकाएक कोई डर कोनी– सागी घोड़ो, सागी मैदान।

मक्खणसा

मक्खण-सा री उमर पचास कोई ढलाढीग-पचाढीग हुवैली, पण बाळां हाल तई टाबरां माळी करै। रंग तो रामजी रै घर सूं काळो ई घाली आयो, पण डील रा पूरा है– ऊंट सूं थोड़-गा'क नीचा रैवै। पगरखी रो मकूणो करपोड़ो ई समझो। ब्याव-सावै में माथै ऊपर मोटो-मोटो पेचो बंधाय लेसी, कोट नयो पैरसी, पण कोट रै माय गंजी का कमीज को हुवैली। धोती पैरसी घुमाऊ, पण बांधै इसी ढीली ढबळ जाणै अबार खुली, पड़ी नै खुली। मनै तो घणी वार औ डर लागै कै कठैई रस्तै बैवतै मक्खणसा री धोती धरती पड़ जासी अर मक्खणसा नागा होजासी। पण हाल तई तो, भाईतां रै भाग सूं, धोती पड़ती-पड़ती बचै है।

गाभा पैर-पैराय'र माथ मखमली पगां रो कंठो, अर गरै मोत्यां री पोतरी पैरै। ऐ गैणा है तो मक्खणसा रा बाप रा, पण दीसै है मांग'र लायोड़ा।

मक्खणसा रै पट्टा छंटावण री तो सौगन ई है, पण बिना एढं.संवार भी करावै नई। एक रै लारै सद्दर हुवै

जिण रा फेर कोई दूसरो मरै तद भद्दर मूं पाछा भद्दर ई हुवै। जे कदास मागनी-मागनी में कोई नईं मरै ग्रर मक्खणसा देसैं कै घर्णे तो गामैं में जट कोजी बयगी, ग्रर राज खातर दाडी घड़ी-घड़ी बार कुतरणी पड़ै, तो ग्राप केई डाणें, बाएती, माळी, मोदी, हरेक रै लारै भद्दर ही जावै, कारण, भद्दर री संवार करायां मोफत में चवन घसीजै, जट उतराई रो कौडो एक लागै नईं। पण घणी-सी'क वार केस ग्रर दाडी वध्योड़ा ई रैवै। गैरा पैर-पैराय'र ग्राप उभराणा पगां ई निकळसी। पग पावडां जिसा– वारै ई मास ब्याऊ फाट्योड़ी हुवै ज्यूं चीराळी-चीराळी रैवै।

मक्खणसा री खुराक

मक्खणसा रुपियै ऊमर जीमै, रुपियै ऊपर कांई जीमै वस फूल ई सूंघै, घर ग्राळा सगळा जीम्यां पछै ग्राप जीमण नैं बैठै जिको रोट्यां री ग्रोडी खाली कर देवै। बाबोजी जीम्यां पछै ठिया रैवै। जीमण री चाल मसीन रै बरावर तेज– डावै हात सू फलको लेवै जित्तै जीवणै हात सूं गब्बो कर जावै। पण घरे मक्खणसा धापै नईं। जद कोई जीमण-जूठण हुवै, तद ई इणां रै पेट रा सळ निकळै। जीमण में ई घणा ग्रादम्यां रो बैंधो हुवै तो धापै। पांच-

सात मिनख नूंरयोड़ा हुवै अर जे मक्खणसा जीमण नै पैली पूग जावै, तो का तो रसोई दूसर वणै, अर का पछै भावै जिका पाछा भूखा घरे जावै ।

मक्खणसा जद जीमण जावै तो साथै अंठो भी लेजावै । टाबरां री छोटी-सी'क गोयळयां तो भट भरीज जावै, पण मक्खणसा रै कूवै रो हाल तळो ई ढकीजै नईं, इण कारण वै देखै टाबर भूखा है, अर उणा नै ठोला सूं मार-मार'र जीमावै । ठोलां रै डर सू घर रा टाबर भी इणां रै सागै जीमण रै नांव सू कांपै ।

एक दिन मक्खणसा एक छोटै वेधै में जीमण नै गया । सेठाणी पैली च्यार लाडू पुरस्या, दूजी वार में दो, अर तीजी वार में एक लाडू पुरस'र पूछ्वां रो पूछण लागगी । मक्खणसा देख्यो आज तो काम कठन दीसै है, इयां टोपै-टोपै सूं कर्णै घड़ो भरीजसी ? सेठाणी पसवाड़ कर निकळी'र मक्खणसा कंय दियो– देय दो आठ लाडू ! 'आठ' सुणते ई सेठाणी रो काळजो तो फड़क-फड़क करण लागग्यो, पण जीमणियो मांगै ज्यूं पुरसणो तो पड़ै ई । मक्खणसा इयां आठ-छव, आठ-छव कर-करनै नीठ पेट भरचो ।

अेक दिन आप वेढवीं पूड्यां जीम'र आया । म्हैं

पूछ्यो—

"कित्ती'क पूड़यां खायी आज ?"

"कांई खायी, जीव सोरो कोनी जिको भायी कोनी आज तो ।"

"तो ई कांई तो खायी हुसी ?"

"खायी कांई, अै ई पचास रै मांय-मांय खायी हुसी ।"

मक्खणसा रै साव रै बेटै रो ब्याव हुयो, मक्खणसा नै भी जान लेयग्या । साव मक्खणसा नै डेरै में राखै, जीमण नै साथै नई लेजावै, पण मक्खणसा खातर दस आदम्यां रो कांसो पुरमाय'र मंगाय लेवै । एक दिन मांडै रो आदमी डेरै मे आय'र साव सूं बोल्यो– "कसूर माफ हुवै तो अरदास करूं ।"

"फरमावो सा, कांई हुकम है" साव कैयो ।

मांडी सँकतो-सँकतो बोल्यो– "डेरै में थारै आदमी तो एक रैवै, अर आप कांसो मंगावो दस रो, बाकी ए नव जणां नै तो देख्या ई कोनी ।"

साव बोल्यो– "अइया, आज आप एक ई कांसो ना भेजदा ।"

"घी हो, आप तो ठीक करली ।" मांडी गिड़गिड़ायो ।

साव कैयो– "नईं, नईं, रीस कोनी, आप बेफिकर रैवो।"

मक्खणसा नै साव आज जीमणनै साथै चालण रो कैय दियो। मक्खणसा नसा-पता लेय'र त्यार हुयग्या। सगळा जीमणनै गया, मक्खणसा ई गया। और लोग तो थोड़ी ताळ में जीम-जीम'र उठग्या, पण मक्खणसा हाल आधा ई धाप्या नईं। जामफळ आळो पूछै– "क्यूं दो देय दूं?" जद मक्खणसा कैवै– "हां, दस ई दिया, नईं तो अेठा पड़ जावैला।" चक्की आळो पूछै–"क्यूं एक तो देय दूं?" मक्खणसा कैवै– "बस एक-दो सू बेसी ना दिया, हूं धाप्योड़ो हूं।" लाडू आळो पूछै– "लाडू?" मक्खणसा कैवै–"थांरो तो मन राखणो पड़सी देय दो च्यार लाडू।"

जद मक्खणसा भांत-भांत रा खटका देखाळचा, तो जानी-मानी सगळा घेरो घालनै ऊभग्या। पैली आळो माढी मक्खणसा रै साब कनै आयो, बोल्यो– "मक्खणसा खातर तो आपनै बीस जणां रो कांसो मंगावणो चाईजतो हो, दस रो मंगाय'र तो आप लाई बामण रो फालतू पेट रोस्यो।

तीन सेर मीठै री होड—

अेक मजूर केई सूं सवा सेर मीठो खावण री होड करी। सवा सेर मीठो सामलै सूं खायीज्यो नईं जद दूणा

पड़गा निपग्या। मखूर रो हाथ वधग्यो, मक्खणसा नूं भिड़ग्यो– दो सेर मीठै री होड में! सोरा समझायो- 'अरे, दो सेर तो मक्खणसा उडाय जासी।' मखूर डरग्यो। गंचाताणी कर-कराय'र तीन सेर माथै होड पूगी– खाली मीठो, साथै घरको नईं। जे मक्खणसा जीतै तो दो रपिया इनाम; जे हारै, तो मिठाई रै मोल सूं दूणो चटीड़!

सीरमोवन-जामफळ रो एक-एक ठूंगो आयग्यो अर मक्खणसा हात साफ करणो सरू कर्‌यो। दो सेर उडाली जित्तै तो आपनै डकार ई को आयी नी। पण, मक्खणसा मोथा जीमाकिया है, जीमण री अटकळ जाणै नई। दो सेर मीठो खायो जित्तै अढाई-तीन सेर पाणी पेट में ऊंधाय लियो जिकै सूं पेट तणीज'र नगारो हुवै ज्यूं हुयग्यो। अबै आप घवराया– "अरे! जीत्यां सूं तो आसी खाली दो छिलका, अर जे हारग्यो तो पन्द्रै कळदार खुस जासी।" मीठै रो भाव उण दिनां अढाई रपियां सेर रो हो।

पण हाल तईं मक्खणसा एड्यां रै ताण बैठ्या जीमता हा। अबै पालखी मारणी याद आयी, कोट रा बटण खोल्या, अर वीं दिन संजोग सूं पजामो पैर्‌योड़ो हो जिण रो नाड़ो ढीलो कर्‌यो। अबै मक्खणसा फेर थोड़ा ससवां हुयग्या। मीठै रो ठूंगो मक्खणसा सूं आधो मेल्योड़ो

हो, जे सगळो मीठो दीखतो रैवं तो छाती चढ जावै
मक्खणसा पूछ्यो– "अबै कित्तों'क रैयो है ?" मक्खण
आंगो तो न्हांख दियो, पण दिलासा दिरावण सारू
कैयो– "बाजी मारली, थोड़ो ई है अबै तो।" अर मे
च्यार खीरमोवन पुरस दिया।

होड करण आळो मजूर घडी-घडी वार कै
"देख, उळटी ना कर दिए। जे करदी, तो पइसा
जावैला।" मक्खणसा नैं उळटी करावण सारू ई म
घड़ी-घड़ी वार उळटी रो नांव लेंवतो हो। मक्खणसा
हात तो बराबर चालै, पण माय मूं जीव घबरावै। उ
आंवती-आंवती रैय जावै। एक वार तो थोड़-सं
गुचळकी आय ई गयी; पण मक्खणसा री बध्योड़ी
अठै काम देयगी। मूंढै आडो हात देय'र मक्ख
गुचळकी नैं दाढ़ी में रमायदी। मजूर हाका तो कर
पण मक्खणसा ऊपर रो ऊपर उडाय दियो।

दो सेर खायो जितै तो बूंटी रा नसा सा
ऊग्या; पण अबै नकसा फीका पड़ण लागग्या। पसी
बाळा वैवै, डील झोळाझोळ हुयग्यो। मीठो खांवते-ख
कित्ती ई वार मक्खणसा हात में पाणी लियो कै फे
केई सूं मरतो-जीवतो होड करूं लई, पण तो ई म

कैवै– "थारै लाई रै मोफत में नुकसाण हुवणो लिख्योड़ो हो जिको हुयग्यो, अर रैयो-सैयो फेर हुय जासी। अबै तो मिठाई थोड़-सी'क रैयी हुसी।" आ बात कैंवता मक्खणसा छाकटा हुवै ज्यूं को दीसैनी, पण इयां लागै कै साचेई थांरै मन में मजूर रै खातर हमदरदी है।

आखर मक्खणसा इत्ता छिकग्या कै टाबर नै ठगावै ज्यूं ठगा-ठगा'र मीठो खुवावणो पड़्यो– अच्छया, अबै पाठ रैया है, अबै छव रैया है…। तो ई फेर, सूरज बाप री साख भराय'र मक्खणसा हात में पाणी लियो कै फेर म्हें केई सूं भोळै भूल'र ई होड नईं करूं। इयां करता-करता मक्खणसा तीन सेर मीठो मांय मेलग्या। मजूर रो मूंडो फसको हुवै ज्यूं हुयग्यो, पण मरतै भाक चाल्यो-टूंगां में रस बंच्योड़ो है जिको भी तीन सेर में सामल है, पीवणो पड़सी।" तमासो देखणियां कैयो– "रस री तो होड को ही नीं।" पण मक्खणसा देख्यो कै रस रै कारण गुड़ गोबर हुवै है, मे टूगो'र लिया सबड़का– "है… लै, भो रस!" इयां कैय'र सगळो रस सबड़ग्या।

मजूर दो रुपिया इनाम देय'र बोलो-बोलो टुरग्यो।

रंग ढंग–

मक्खणसा नै पोगाय'र असेई कोई उणां रा घर-

जायदाद मापरै मांय करवायलो। थताक लूंकड़ी कागलै नै धुर बणाय'र ज्यूं रोटी लेयगी, उणी तरै मक्खणसा कनै किन्नी ई सूंकड़ियां हूकै, भर सगळियां मापरै भाग माए थांई-न-कांई पावै, खाली नईं जावै।

एक डाकोत कैयो– "मक्खणसा ! थांरै भागै डाणा, रामपुरिया सैं पाणी भरै। थांरी पगथळी री ई होड नईं कर सकै। धरम-पुन में थांरै जिसो जीव राजा-म्हाराजायां रो ई कोनी।"

भरे वाह रे डाकोत ! तनै मक्खणसा नूईं री नूईं रजाई काढ'र देयदी। भाप सियाळै में गूदड़ो भाधो बिछायो भर भाधो भोढ्यो।

मक्खणसा रै घर में धान-चून जोवो तो ऊंदरा यड़ी करता लाधसी। यऊ जे धान लावण रो कैंसी तो दस वार कैयां भी सुणाई हुवै नईं; पण जे भाप धान लांवता हुसी, भर मारग में बढाई करणियो सामी-मोडो मिल जासी तो माधो-पड़धो धान दड़ाछट बांट देसी।

भाखी दुनिया मक्खणसा री दातारी रो डंको पीटै, ण घर भाळा कैवै– "तूं दरियै बायरो है, थारै में कौडी ा ई सऊर कोनी, बळी थारी दातारी मूंडी लागै !" मैं बोल क्खणसा सूं भलै पण कांकर भलै जद कै सगळा लोग

वांरी बडाई करता को धापैनी । इण कारण घर आळां सूं मक्खणसा री कमती बणें । जे कोई घर आळो वांनैं सीख देसी तो बा चोपड़ियैं घड़ै री छांट दई निकळ जासी । इत्तै सूं लारो नईं छूटैं । मक्खणसा बड़बड़ाट करता घर सूं निकळसी, जिकै रा थोड़-सीं'क दूर जावते ई जोर-जोर सूं गाळ्यां काढण लाग जासी । जे कोई चाला पीवणियो हुंकारा देवण लाग जासी, तो आप मूं-मूं रोवण लाग जासी, अर साचेई आसूं लासी ।

आप नोकरी करैं– जमादारी । एक रात आपरो पौरो कोयलां खानी हो । तीन माणस आया, दो तो आपनैं बातां में लगाय लिया, अर तीसरो कोयला पार करतो रैयो । मक्खणसा इसी जमादारी करैं । पण के मी आपनैं रात री दिपटी में राखणा पड़ै । जे दिन रं दिपटी में राखैं तो लोग इणां रो उदबुदो रंगढंग देख' "हाऊड़ो ! हाऊड़ो !" हाका करण लाग जावैं । मक्खणस रा तमासा देखण सारू मोकळा माणस भैळा हुय जावैं । इण तरैं मेळो मंडायोड़ो अफसरां नैं पौसावैं नईं, अर मक्खणसा री रोटी भी खोसी चावैं नईं, इण कारण रात री दिपटी देय'र मक्खणसा नैं धिकावैं ।

जे कदास मक्खणसा दिन रा कारखानैं पासी आय

जावै, अर मजूर, आपस मे सल्ला कर'र, 'हाऊड़ो-हाऊड़ो'
नईं कैवै, तो भी आपनै सुवावै नईं। मजूरां नै चुप देख'र
मक्खणसा एक दिन कैय ई दियो— आज सगळा अणबोल
है, जाणै माईत मरग्या हुवै।

लैण-दैण—

मक्खणसा रुपिया बौरै, बौरै काई, दुनियां नै लूटै
आनो रुपियो ब्याज कमावै! पण इणां रा संस्कार पोच
है—ब्याज तो इणां नै देवै ई कुण, मूळ पाछो चूकाय
इसो भलो माणस भी इणा रै ढूकै नईं। पण है मक्खणस
अलबेला। अबार ई थे जे एक आनै रुपियै रो लोभ देवो
तो झट थांनै रुपिया उधार देय देसी। राम दिरावै त
पाछा दिया, नईं तो चकन्दा कर जाया। मक्खणस
ऊंनावळा बोल'र तगादो भी नईं करै, अर धीरै कैय
रुपिया पाछा देय देवै इसा मिनख पड्या कठै है?

आप हैसाब पाई-पाई रो मूंढै राखै. चूक छदाम र
पड सकै नईं। जे मक्खणसा खुद केई कनै सूं रुपियो-टक्
उधार लेसी, तो पाछो तो देय देसी, पण देसी रुळा
रुळाय'र।

सागीड़ा तिराक

खेजड़ै री ऊंची डाळ सूं, आंख्यां मीच'र, आ

तळाव में गंठो ग्रोड़ै, गागीड़ो पाणी उछळै। ग्राप ऊनी-तिरणी तिरै, मुड़दा-तिरणी तिरै, तळाव रा घूम-घूम'र चक्कर काढै। पण मक्खणसा न्हायां पछै पेरण साह मार्थ दूजा गाभा नईं लावै, गागी ग्राला, पूर पेरे, घरै जावै, दीनै इमा जाणै न्यारै (ममाणा) सूं पधारचा हुवै, पण मक्खणसा नै जाणै जिका तो समझ जावै कै ग्राप तळाव सूं पधारचा है।

तगदीर सिकन्दर–

का तो मक्खणसा घर में पाणी लावै ई नईं, ग्रर जद लावण लागसी तो कूंडी री पट्टयां सूं टकराय देसी। माटा-भरवा, लोटा-कळसिया, सगळा भर देसी। बीजा माणस तो टूंटी कनै ऊभा बारी नै ग्रडीकता रैवै ग्रर मक्खणसा ग्रांवते ई जचै जिकी लुगाई नै झाल बूक्यों'र छेड़ै कर देवै ग्रर ग्रापरो घड़ो भर लेवै। घणी.सी'क लुगायां तो खिलखिला'र हंसण लाग जावै, पण जे कोई नवै नाक ग्राळी गाळ्या काढण ढूक जावै तो मक्खणसा नै डर को लागैनी, बै खुद ग्रापरो रेडियो चालू कर देवै।

मक्खणसा लूंबो लाया–

मक्खणसा टावर हा जद री बात है इणां रै सेठां रै घर में केई रो ब्याव हो। घर ग्रागै जलसो हयो, भगतण्यां

नाची । मवखरणमा सदेई गावणो सुणन नैं जांवता । एक दिन उणां री मां भी गयी । सेठां मां नैं पूछ्यो– "तनैं किमी गावणैं में ठा पड़ै है जिको ग्रायी है सुणन नैं ?" मां, इयां ई, नस सूं हंकारै रो लटको कर दियो । सेठां पूछ्यो– "ग्रा कांई गावै है वताव ?" हाकै रै कारण मां नैं सुणीज्यो– "कित्ता जणा करै है गावणो ?" मां जीवणैं हात री पांचूं ग्रांगळ्यां देखाळदी-भई पांच जणा है– "ग्रेक तो गावण ग्राळी, दूजो तबलै ग्राळो, तीजो पेटी ग्राळो, चौथो सारंगी ग्राळो, ग्रर पाचवी गावण ग्राळी री मां ।" वी बगत भगतण पंचम रै सुरां में ग्रळाप लेंवती ही । माजी री पांच ग्रांगळ्यां देख'र सेठां सोच्यो– डोकरी समझै दीसैं । सेठ राजी हुया, मुनीमजी कनैं सूं भट पांच रुपियां रो लोट इनाम दिराय दियो ।

माजी तो रुपिया लेय'र मैफल रै ग्रधबिच में ई घरे टुरग्या । जद छोटी-सो'क मवखणियो घरे गयो तो मां घड़पड़ायो– देख, तूं तो नित-हमेस रात री एक-एक-दो-दो बजाय'र ग्रावै, पण ठोकै भाग रैवै, हूं तो ग्राज ई गयी जिकै में रुपिया पांच इनाम रा लिग्रायी ।

मवखणसा सोच्यो– काल बात । ग्राप ई सेठां री ग्राजम ऊपर बैठ'र सोयां रै देखादेख नस रा लटका

करण लागग्या । सेठाँ री निजर वठीनै पड़ी, पूछ्यो- "अरे मक्खणिया, इत्ता लटका करै, तूं किसो समझै है, बताव, आ काँई गावै है ?" मक्खणसा बोल्या ई- "हूं समझूं क्यूं कोनी, मनै तो सगणी ठा पड़ै है। आ गावै है..." इयाँ कैय'र दोनूं हाताँ री दसूं आँगळ्याँ, दस रुपिया लेवण खातर सेठाँ रै सामी करदी । सेठाँ रो सभाव काँईं अकरो हो । नोकर नैं हुकम दियो- ईं मक्खणियै नैं बांध'र घोड़ाँ रै ठाण कनै गुड़काय दे । सदेई-सदेई अठै जाजम ऊपर बराबर आय'र बैठ जावै, अर गैला लटका करयोकरै, सऊर कोनी धूड़ खावण री ई ।

मक्खणसा थोड़ी ताळ ठाण री हवा खाय'र घरे आया । मन में विचार कर्‌यो- आ भगतणकी नईं आवती तो ना तो गावणो हुवतो, ना हूं लटका करतो, अर ना ठाण कनै गुड़कायीजतो । काल ईं रांड रो कोईं सूंघो-भूंठो तोड़'र लाऊं जणै जीव सोरो हुवै ।

सियाळै री रात ही । मक्खणसा भगतण रै पगथाइयै पाखै माथै पछरो ढीलो कर'र बैठग्या- अई आ इतो नाचै कूदै है, कठै-न-कठै तो कोई सूंघो पड़ ई जासी ।

भगतण नैं आंणाम इसी जोरदार, कै स्याम खांतो कर हुयग्यो, पण हाल अई नाक सूं पाणी पड़ै । मोतां

देख'र भगतण मक्खणसा रै चदरै माथै टेचो. न्हाँख दियो जिको बीजळी री सैचनण रोसणी में पळपळाट करतो मक्खणसा नै लूंबो ई लाग्यो । झट कर चदरियो मेळो'र मक्खणसा दिया ठोका । मौ घर गे बारणो खोल्यो कोनी जतै तो मक्खणसा कँय ई दियो– "तूं तो लायी काल पाँच रुपिया, हूं लायो हूं लूंबो !" घर में दियो जगायोड़ो तो हो नी । डोकरी चदरै में लूंबो जोवण लागी तो बारै में हात भरीजग्यो । मक्खणसा तो देख्यो मतै मलसी सवासी, पण पाँनी आयी गाळ्याँ अर ठोलै रो चौड़ ।

नसै-बाज मक्खणसा–

नईं जणै तो मक्खणसा नै दुनियां भर रो सोच । कणां ई रोवै, कणां ई हंसै, पण बूंटी रो लुगदो लियां पछै आपनै ईं दुनियां री सुध-बुध नईं रैवै । तो सूज'र तूंबो हुवै ज्यूं हुय जावै, आंख्या रा पट खोलीज जावै, चाल में इसी मस्ती आवै कै पांच मिन्ट पांवडो धरै । पग उठावतै इसी ठा पड़ै जाणै पगां रै री बंध्योड़ी है ।

पण है अबार मस्ती री बेळा– थे गाळयां काढ दो;

घुद्दा लगाय दो, मक्खणसा रै गीस नेड़ी ई को व्हैनी। आप बराबर मुळकता रैसी। हां, आ जरूर है कै वे कैसो– 'कानां रै लूगां री त्रिड़ग्यां ढीली' हुमगी, तो इण लूंग भट संभाळ लेसी। जे कनै ऊभा दस आदमी बारी-बारी दस वार कैसी, तो आप दस वार संभाळ लेसी। वे एक आदमी दस वार कैसी, तो ई पांच-सात वार तो संभाळ ई लेसी।

जद इयां मस्त हाती दईं मक्खणसा भूम भूम'र चालै, तो गळ्यां रा कुत्ता भुसण लाग जावै। पण हाती लारै कुत्ता घणा ई भुसै। फरक इत्तो है कै साचेई हाती रै कुत्ता बटकी को भरैनी, अर मक्खणसा रै निरी वार घाव काढ लेवै। पैलड़ै गे डंक आछो हुवै जित्तै दूजो त्यार! एक दिन तो सागी कुत्तो, मक्खणसा नै, एक गळी में आंवते अर जांवते, दो वार खायग्यो !

गण कच्चो–

जे कोई कच्ची छाती आळो अंधारै में मक्खणसा नै एकाएक देखलै तो काळजो गिरै छोड़दै, पण अचम्बो तो ओ है कै मक्खणसा रो आप रो गण कच्चो है। जद-कदेई रात रा गूनवाड़ मांय सूं एकलो आवणो पड़ै तो केई-न-केई

कैर-बोर्टी-खेजड़े-जाळ में पक्कायत कोई-न-कोई भूत-भूतणी दीस जावै। मक्खणसा कैवै – "जे दूसरै आदमी नै दीस जावै तो छाती फाट'र मर जावै। ओ तो हूं हो जणै पैली दाकल करदी जिणसूं भूत रो वस को चाल्योनी।" कदेई-कदेई मक्खणसा नै दो-तीन भूत भेळा ई दीस जावै, तद मक्खणसा री दाकल देवण री हीमत नईं पड़ै अर इणां नै ताव चढ जावै, दो-च्यार दिन घर में सूता रैवै। फेर भी लोग इणांरी भूत-पलीत री बात रो भरोसो नईं करै।

एक बार सिंझ्या रा आप तळाव सूं न्हाय'र घरे आंवता हा। सागै एक म्हाराज दूध रो गूणियो लियां चालता हा। म्हाराज भूत-खईस-डाकण-स्यारी रा झाड़ा तो लगांवता हा, पण मक्खणसा नै साचेई भूत दीसै, आ बात नईं मानता।

आज मक्खणसा नै साचेई भूत दीस्यो! मक्खणसा भाग्या, इसा भाग्या जाणै कोई पइयां लाग्योड़ा हुवै। म्हाराज रै माथे में इण रो अरथ रत्ती-भर भी नईं आयो। थोड़-सीक ताळ नै रोयो रो चक्कर काट'र मक्खणसा म्हाराज रै कनै कर सेंपूर चाल सूं निकळ्या। म्हाराज

देख्यो– आज तो साचेई दाळ में काळो है– म्हाराज थोड़ा आगै गया, जित्तै मक्खणसा फेर दड़बड़-दड़बड़ करता, सागीड़ा हांपयोड़ा, पसवाड़ कर निकळया। म्हाराज सोच्यो– आज तो मक्खणसा में साचेई भूत बड़गयो दीसै, अर म्हारै कनै दूध है इण कारण म्हारै बार-बार चक्कर काढ़ै है, जे कदास हूं भूत री पेट में आयग्यो तो ओ दूध कींरै आडो आसी ?

भाड़ागर म्हाराज च्यार सेर दूध धरती माता नै पाय दियो।

मक्खणसा नै तीन दिन ताव आयो, म्हाराज नै पांच दिन !

गवैया मक्खणसा अंगरेजी समझै—

मक्खणसा गवइया चोखा है, पण ज्यूं कंयो कूंभार गधे मई चढ़ै, उणी तरै मक्खणसा भी कंयां सूं गावै नई। मक्खणसा रो कंठ मीठो है, राग री मोड़ भी जाणै, पण जाणै है 'रबर छंद'। रबड़ छन्द में भी आप तुकान्त रो ध्यान राखै। नमूनै वास्तै—

'स्वबन दिया है, बीती जाती है उमरिया।
दिल नहीं प्रेम नहीं, सन्नों रो प्रेम नहीं,

सिर पर धरी रे,
मूरख तनै क्यों,
वृथा उमर गमाई,
उर्जन, नर्जन, तर्जन,
अब क्यों नी पटकै

.........पाप की गठरिया।"

बिच में केई सबद फालतू कैय'र लारै जांवतो 'उमरिया' री तुक 'गठरिया' सूं मिलाय देमी।

कारखानै रै साब लोगां रा बंगलां कन कर निकळै जद मक्खणसा पैली सूं ई गावणो मरू कर देवै। रस्तै में मिलै जिकै नै आप कैवै–

"म्हारै गावणै सूं साब री मैम आज बौत राजी हुयी।"

"थांनै काईं ठा ?"

"म्हारै सामनै ई तो मैम वडाई करी साब रै आगै म्हारी।"

"वे किसा अंगरेजी समझो हो, मैम तो अंगरेजी में कैयो हुसी ?"

"अंगरेजी समझूं क्यूं कोनी, मैम कैयो– देखो गुट मैन, यो फिस्केट, म्हाराज इस फ्रन्ट बिचारा कैसा अच्छा गाता है।"

"आ तो सफा खोटी अंगरेजी है।"

"हूं किसो अंगरेजी पढ़योड़ो थोड़ो ई हूं। इत्ती तो हिरदै री उकत सूं समझग्यो। पण म्हारो गावणो जे मेम रै दाय नईं आयनो, तो म्हारै सामनै देख'र वा हंसती कां वास्तै ?"

सोळवों सोनो–

मक्खणसा काळा है, कोजा है, डरांक है, घणखाऊ है, पण चोर-जार कोनी, इण कारण बडा-बडा रावळां री जिनानी डोढ्यां जिणां में चिड़ी रो जायो भी नईं बड़ सकै, मक्खणसा खातर खुल्यां है। बठै जे सोनो ई पगां में पड़यो हुसी तो आप उण नै धूड़ बराबर समझसी। पारकी चीज नै पारकी अर आपरी नै आपरी समझै, इण कारण मक्खणसा मक्खणसा हुंवते थकां भी सोळवों सोनो है।

डाकण

बात घणा बरसां री है जद कै एक गूंभारियै में एक डोकरी तेला-लूणी री हाट लगाये गुजराण करती ही। परणीजते ई विधवा हुयगी। सासू-सुसरा समै साथै सरग सिधारग्या। मा-बाप कीरा अखी रंवै ?

एक दिन, जद श्रा विधवा हुयी, सैर में कूको फूट्यो-श्ररे ! इसी कैर री मौत तो श्राज तई को सुणीनी। वा छोटी-सी'क विधवा बरसां रा वार सैवती श्राज बूढी डोकरी हुय'र 'माजी' वजरण लागगी। माजी वजै तो कूवै में पड़ो, श्रौस्था श्रायां थांन-म्हांनै ई लोग बूढा बाबा (श्रथवा बूढी माजी) कैवण लाग जासी, परण श्रफसोस री बात तो श्रा हुयी कै लोग माजी नै 'डाकण-डाकरण' कैवरण लागग्या। श्रा दुनिया केई रो लारो भालै ई नईं; जे भाल लेवै, उणनै, नईं हुवै तो ई, डाकण बणाय'र रैवै। घर-बार श्राळो भी म्हारै ध्यान में सुगायां है जिरणां नै लोगां डाकण कैवणो सरू करघो, श्रर श्रवै बै सरवातै डाकरण परणीजगी। श्रा माजी तो सायरण कुळ में एकली ही। तन रो गाभो इण रो बैरी हो, इरण हालत में जे दुनिया

कंवे 'डाकण-डाकण' तो कांई इचरज ?

छोरा-छोरी माजी री हाट सामें सूं निकळण री हीमत नईं करता। जे यठीनें कोई काम हुंवतो तो पसवाड़ली गळी, आंटो खाय'र जांवता। जे कदास केई छोरें नें मारग में माजी मिल जांवता, फेर तो बस, साम निकळणो बाकी रेंवतो। भींत्यां तो भाटां री हुवें इण कारण मांय घसीजे नईं, पण जे पसवाड़ै तळाव हुंवतो, तो छोरा-छोरी माजी रें सामें जावण बिचें तो, म्हारें ख्याल सूं, तळाव में डूबणो कबूल कर लेंवता। टाबरां रो खायो-पियो सगळो, माजी रें दरसणां सूं, हराम हुय जांवतो। माजी रा एकर दरसण करयां खराखरी कित्तो लोयी छीजतो इण रो में लेखो तो नईं लगायो, पण टाबर तीन-च्यार दिन मांदा जरूर रेंवता।

जिण टाबर नें माजी मारग में मिलता, बो इण बात री खबर, घरे जाय'र आपरें माईतां नें पुगांवतो। माईतां रें बडो भारी सोच हुंवतो। कोई-कोई माईत आपरें टाबरां नें माजी रें हाटड़ै लांवता अर कंवता—'माजी! छोरें रो कठेई ऊंधे-सूंधे चक्कर में पग पड़ग्यो ... है। सात जात रो थुथकारो घलावणो है, थे ई थोड़ो ...ो तो घाल दो।' माजी नें ठा तो ही कै थुथकारो

क्यूं घलावै है, पण तो ई, काळ री कुट्योड़ी डोकरी, थुयकारो घाल देंवती, अर दो-तीन दिनां में टाबर ठीक भी हुय जांवता।

कोई-कोई माईत घणी अकड़ाई लगांवता- 'तूं डाकण है, घाल म्हारै टाबर नै थुयकारो!' अबै थुयकारो घलावणो किसो सैंज काम हो! माईन हाका करता- 'देखो, रांड डाकण लोगां रै टाबरां नै भखै। सैंकड़ूं गरज्यां करली तो ई थुयकारो को घालैनी। थारै बाप रो कांई धन लागै है थुयकारो घालण मे?' अै हाका सुण'र गळी में राणो-राण माणखो भेळो हुय जांवतो। वां में सायद ई कोई इसो हुंवतो जिको माजी नै डाकरा नईं समझतो।

जे कदेई कोई लुगाई आपरै टाबर नै गोदी लियां जांवती, अर सामनै माजी मिल जावता, फेर देखो मजा- मां आपरै टाबर नै झट गाभै सूं ढकती, अर भींत खानी अपूठी फुर जांवती। पण टाबर ऊपर मां इत्तो हक क्यूं जमावै? नानी रो भी तो हक हुवै- माजी तो टाबर री मा री मां सूं भी बडा हुवैला। एक छोटो-सो'क फूटरो टाबर उणां रै सनकर निकळै, अर मायां माजी सूं लुकावै; इण नै माजी घोर अपमाण मानता अर बदळै में टाबर री

मां नै गाळ्यां काढणी सरू कर देंवता ।

इण तरै छोटा टावर माजी नै देसणनै भी नई मिलता । जद कदेई कोई भूल्यों-भटक्यो अणजाण मिनख आपरै टावर नै माजी रै हाटड़ै सानी लिमांवतो, तो माजी उण नै सादै ढंग सूं नई देखता । वैग्यानिक ज्यूं जिनसां री सूक्ष्म अनवेक्षण करै, उणी तरियां माजी आपरा दोनूं ऊंडा नैण टावर रै डील में गडोय देंवता ।

दुकानदार माखीचूस हुवै, पण माजी टावर नै पतासो-भुजिया देंवता, माथै रै हात फेरता, बुक्को लेंवता । पण माजी रा संस्कार किण देख्या ? टावर री माईत जद दस पांवडा टुरतो तो माजी रा पाड़ोसी उण माईत नै बताय देंवता कै माजी कुण है ! कोई-सो'क ई इसो हुंवतो जिको पाड़ोस्यां री सीख री परवा नई करतो; अर तो सगळा थुथकारो घलावण नै पाछा आंवता । माजी गाळयां काढता, पाड़ोसी मोफत में तमासा देखता– वां दिनां बीकानेर में वोलतो बाईसकोप नई हो ।

एक दिन अठै तई नौबत आयगी कै माजी थुथकारो नई घालण माथै सफा अड़ग्या । मामलो इत्तो बधग्यो कै कचेड़ी जावणो पड़्यो । जज साब डाकण-स्यारी में भरोसो नई करता इण कारण थुथकारो घलावणियै नै आंख

देगाळ'र फटकार लगायी- ये लोक एक अनाथ डोकरी नै संतावो, थांनै सरम को आवैनी ?

टावर रै बाप हात जोड़'र अरज करी- "जज साव ! हूं आप री गोरी गाय हूं, आप माजी कनै सू थुथकारो घलवाय दो।" जज साव मानग्या, बोल्या- "माजी ! थांरो कांई लियो ? भै कंवे है तो घाल दो थुथकारो। हूं कंऊं हूं। वडै रो बडपण घटै थोड़ो ई है।" माजी कायदो राख दियो- 'थू-थू' करयो, जद माईन बोल्यो- "सा, हाल तई थूक टावर मायं पड़्यो कोनी।"

सगळा मिनख, जज साव समेत, हैराण हुयग्या जद माजी साचाणी थुथकों न्हांख्यो तो टावर आपरी आंख्यां उघाड़दी।

जचं आ है कै का तो मौको ई इसो पीवतो कै माजी रै थुथको घालतां ई टावर ठीक हुय जांवता, अर नईं जद, जे आज रै तरक्कदार जुग में तरक सूं सोचां, तो माजी रै थूक में पक्कायत इसी कोई तासीर हूवैली जिण सू टावरां रा कस्ट कटता हा, पण साची वात किसी है, ई रो बेरो मनै अजूं तईं कोनी।

मनै सावळ चेतै है कै एक दिन माजी जद म्हारै नानाणैं रै घर खानी आंवता हा, तो हूं, अर म्हारी स्व० बैन

गवरा बाई, म्हे दोनूं गळी में रमता हा ! म्हे दोनूं बा
दिनां टाबर ई हा । म्हां सुण राख्यो हो कै आ डाकण है
अर टाबरां रो काळजो काढ लेवै।
माजी आंवता

दो
मग
सं
मोळे
थायोने
मामने
दोईना

ग्राज पैलड़ी वार माजी ग्रापरी ऊमर मे सुण्यो– 'मैं थ
है।" माजी रैं नैणां में जळ छळकग्यो। बोल
"मेघराजजी! लखदाद है थांरी छाती नैं। दुनिया
डाकण कैवै, ग्रर थां गुलाब-सा टाबर निधड़क हुय'र म
ग्रागै लाय'र मेल दिया।"

माजी म्हारै मायां ऊपर जद हात फेरण ला
तो म्हां देख्यो– माजी ग्रबै म्हांनै खासी, ग्रर नानैज
ग्राज कांईं जचगी जिको बोला-बोला ऊभा है! म
म्हांनै ग्रेक-ग्रेक राणी छाप पइसो देय'र जद दु
घर सूं बारै निकळग्या, तद मैं हात-पग हिलाय'र संभा
जणैं ठा पड़ी– हां, हूं तो हाल जोवतो ई।

माजी देयग्या जिको पइसो इत्ता बरस तो
मनैं सांभ'र राख्योड़ो पड्यो हो। तारलै साल एक
नैं चाव लागगी जद एक लुगायी तीन दिनां खातर लेज
गो कैय'र गयी ही, जिकी ग्राज पाछी ग्रावै।

छैलजी

छैलजी रो 'छैलो' नांव पिंडत री कढायोड़ो नईं हो, पण इणां रो रंग-ढंग देखनै लोग "छैलो-छैलो" कैवण लागग्या। बुगलै री जात गामा, ऊपर सूं गैरी लैन। मुट्ठी में मावै जिसो मलमल रो चोळो, अर धोती रो पोत मासण जिसो। मुसमल रै पट्टै री पगरखी, बिकी सात भर पैरयाँ बाद भी इसी दीमती जाणैं आज ई मोलायी है। मूंछ्यां काळी भंवर, वटदार। केस कुदरत सूं तो सीधा हा, पण आंटा केस छैलजी नै आछा लागता, इण कारण केसां मे वळ घाल'र उणां नै जमावण तईं घंटा-सवा घंटा, सरदार लोगां दईं, पाटी बांध्योड़ी राखता।

टाबर हा जद सूं घर रै काम-काज में तो मन लागतो; पण पढण में अकल काम नईं देंवती। दूध री हांड्यां चिलकायोड़ी राखता, बिलोवणो कर लेंवता, मां- ... । दाबता, तेल मालस करता, अर उणां सूं ... लेंवता।

... मी माईत इणां नै सफा ठोठ राख्या नईं । पोसाळ घाल्या– लिखमा मारजा री; दो पहला ...-मिरच्यां री पूड़ी दुपारै खातर सागै देवतै।

मारजा पैलड़ी संख्या एक रो आंक (१) पाटी में
दियो। छैलजी ऊंधो एको लिख'र मारजा कनै लेयग
मारजा धोलण मे कांई मगरा धणा हा। बोल्या–
कांई बाप रो माथो लिख्यो है ?" छैलजी लोग
गाळ्यां काढणी तो टाबरपणै मे ई सीखग्या हा,
आप कोई री गाळ-गुपत नई सुणता। मारजा री
माथै रीस तो इसी आयी के मारजा रो मिणियो
नां'खूं। पण ओ काम बूथै सू परबार हो। छैलजी रै
में बिना चौखट री पाटी ही, जिकी सूं खेंच'र चेपी मा
रै पुटपड़ा में, फेर थूक मुख्यां में अर पार ! मारज
माथो खुलग्यो। लोयी रा वाळा वैयग्या। छोरा पक
सारू लारै भाग्या जित्तै तो छैलजी कठै रा कठै ई तेत
मनायग्या।

उण रै बाद छैलजी कोई भी पोसाळ रो मूंढो
देख्यो।

छैलजी मोटियार हुया तो माईतां एको-घोड़ो
दियो। छैलजी रै एकै-घोड़ै री कयूं बात करणी !
माथै हात फेरो, तो हेटै तिसळै। एको करै चमच
पळपळाट। आडो आदमी उणां रै एकै में चढण री

लेंवता। घोड़ै रै ठाण में बेवळू ऊंची-ऊंची राम्ता। ठाण री सगळी रेत रोजीनै छाणता, जिण सूं ठाण इसो माफ रेंवतो कै जे मोती भी पड़्यो हुवै तो झट लाध जांवतो। घोड़ै नै दाणो भरपूर देंवता। उण दिनां बीकानेर में सेठ लोग तीन-धड़ां रो जीमण भी खूब करता, अर जीमण में ऊवरियोड़ो खांर घी अर खांड रो सीरो मांय-त्रारै एक रुपियै रो आठ सेर विकतो। छैलजी रो घोड़ो मीरै सूं छवयोड़ो रेंवतो।

छैलजी घुड़दौड़ भी करता, एक-दो कोस री नईं, लांबी, दस-बारै कोस री। छैलजी रा वडा भाई वकता-ग्रंरे, कठैई चोट-फेट आय जासी, अथवा घोड़ै नै चाव लाग जासी। पण छैलजी मघजी नै मनाय'र राजी कर लेंवता। छैलजी री दौड़ रा समंचार सुण'र सइकड़ूं लोग भेळा हुंवता, एक सागीड़ो मेळो मंडतो, अर दुकानदार आपरी दुकान्यां लगांवता। छैलजी आपरी ऊमर में मोकळी वार. दौड़ लगायी, पण जीत सदा इणां रै पागड़ै रेंवती। लोक-सभा रो सदस्य चुणीज्यां पछै ज्यूं घर में मोकळी बधायां आवै, इणी तरै री बधायां घुड़दौड़ री जीत माथै छैलजी रै घरे आंवती, अर जीत सूं दूणा पइसा ' री गोठ्यां में खरच हुय जांवता।

छैलजी जद तीन धड़ां में जीमण जांवता तो सीरो दातां सूं चावता नईं। सीरैं री गोळी वणायी, श्रर गळै सूं हेटे गुड़कायी। जद सीरो पाछो श्रावणो सरू हुंवतो' तो पतळी दाळ रो सबड़को लेय'र फेर गुड़कावण री मसीन चालू। इण रैं बाद सीरो-चावळ लगाय'र जीमता। छैलजी री सीरैं री खुराक तो चोखी ही, पण घर में दाळ-रोटी साधारण मिनख जित्ती ई जीमता।

श्राज भी जद छैलजी रो जिकर चालै, तो संगळिया निमकारो न्हांख'र कैवे– "छैलै जिसा मिनख कठै पड़्या है ?"

बाबूजी

जानकीदासजी म्हारै घर कनै रैवै, लोग वांनै बाबूजी बाबूजी' कंया करै। इस्कूल में पढता जिण दिनां आपनै 'बाबू' सबद सूं घणी चिड़ ही। आप कैवता– "बाबू तो ऊंठ नै कैवै।" दसवीं पास हुया, हैडमास्टरजी सागीड़ो साटीपिगट दियो– 'छोरो पढाई में बौत तीखो है, खेल-कूद में उस्ताद है। इण नै चावै किसैं ई काम में घाल दो, घटिया साबत को हुवैनी। हूं चाऊं ओ एक दिन घणी जम्मेवारी री खुरसी सांभै अर ईंरो भावी जीवण सुखी रैवै।"

जानकीदासजी सोचता हा कै नोकरी कठै लागूं, जित्तै ई हवाई सेना में भरती खातर सरकार रो नूंतो आयग्यो अर दसवीं पास करी जिण री वधाई भी सागै ई! मन में घणो हरख-कोड अर घमण्ड हुयो– म्हारै खातर आज सरकारी जागायां खाली पड़ी है। घर आळां नै चिट्ठी देखाळी तो बोल्या– अरे वा रे डोफा! आ ई कोई नोकरी है? दपतर में जे बाबू हुवै, तो तो फेर ई देखां भई आराम री जागा है, बैंत री खुरसी माथै बैठै, पंखो चालै, टाटा छिड़कयोड़ा रैवै।

जानकीदास नै घर आळां रो माथो घूम्योड़ो हुवै ज्यू लखायो। घणो ई कँयो लाई– हूं किलरक को बणू नी, पण सगळां च्यारां खानी सूं नाड़ दबाई जद माथै में जची कै जीवड़ा तनै ई बाबू होणो है– ऊंठ ! जद मालम पड़ी कै एक सरकारी दफ्तर में केई बाबू भरती करसी, तो जानकीदास भी गयो, पण ठीक टैम सूं दो मिन्ट मोड़ो। फाटक ऊपर चौकीदार ऊभो हो, घणा बरसां रो रगड़ीज्योड़ो। नवो रंगरूट देखतै ई लखग्यो कै भरती खातर आयो दीसै, फेर रौब गाठण में क्यू कसर राखतो हो।

जानकीदास रै इस्कूल मे घणा ई इम्तयान दियोड़ा हा, सदेई फस्ट आंवतो, आज भी कीरी औखाद कै उण सूं ऊपर निकळ जावै। सवाल सगळा खरा, डिकटेसण बिलकुल ठीक, लेख सागीड़ो, अनुवाद बढिया, अर अंगरेजी बात-चीत में फरवंट। इस्कूल में तो फस्ट आवणै पर भी मास्टरजी कदेई सौ में साठ-पैंसट सू बेसी लंबर नईं देंवता, पण आज सौ मांय सूं नुवें लम्बर आयां सू जानकीदास फस्ट आय'र घणो हरखायो।

जे दसवीं पास कर'र कालेज में भरती हुंवती, तो पुराणा लड़का भलेई मजाक उडावो, बी.ए., एम.ए. आळा;

गए फस्ट-ईयर फून तो सगळा सरीसा हुवैं। दफ्तर
जानकीदास एक और ई तरै री माया देखी– पुराणा बा
लोकां तो सोच्यो कै उडतो पंछी आयो है, पण थोड़ा दि
रा भरती हुयोड़ा बाबू भी जानकीदास नैं रमतो रा
समझ बैठ्या। बाबू लोकां सोच्यो– वे खुद तो मां रै पे
में काम सीख'र आया; उणां नैं कैण ई सीखायो नईं, पर
जानकीदास सफा भोदो है, डोफो है, इण तरै वे आपस में
बात करता।

थोड़ा दिन दफ्तर में काम करयां पछै जानकीदास
जूना बाबुवां रा कान कतरण जोगो हुयग्यो। घणा
हुसनाकां नैं तो अबै चिड़ी कर'र उडावण लागग्यो।
दफ्तर में जे कोई सामान्य कार्य-क्रम हुंवतो तो वो जानकी-
दास री सल्ला सू हुंवतो। अबै जानकीदास पुराणो बाबू
है। रगड़ीजते-रगड़ीजते पत्थर ई घसीज जावै, जानकीदास
तो ठेट सूं ई हुसियार हो।

जानकीदास तड़कै वेगो उठ'र पाणी-रा घड़ा लावै
गायां-रो काम करै, गोबर भेळो करै, थेपड़्यां उथळै, गंवार
देवै, कुतर न्हांखै, गायां रै हात फेरै, गायां नैं दूवै अर
जरूरत पड़ै तो बिलोवणो भी कर लेवै। टाबरां नैं न्हवावै,
कपड़ा धोवै, पढावै अर जरूरत-पड़्यां रोटी-पाणी, बरतण-

चौको कर लेवै। काम-काज री वेळा टाबरां री मां रो बोदो-पुराणो धोती-ग्रोढणो डील रै वार-कर लपेट'र बेधड़क रैवै– फाटण रो डर नईं, फाट्योड़ै रो कांई फाटसी ? डील ऊपर गिंजी'क बंडो भी नईं चायीजै। खांधां ऊपर कोई लीरो न्हांख लेसी, उघाड़ो भी नईं दीसै ग्रर सरदी-गरमी सूं बंचाव भी रैवै।

ग्राप सोचता हुसो कै इसो जानकीदास तो दफ्तर ग्राळां खातर जोकड़ होणो ई चायीजै, पण नईं, ग्रा बात नईं है। दफ्तर री टैम ठाठ न्यारा है, वऊ रा पूर लपेट'र गयां काम थोड़ो ई चालै, वठै तो पोजीसन सूं जावणो पड़ै। पूर लपेट'र तो चपरासी भी नईं जावै, बाबूजी कांई चपरासी सूं ई गया-बीता है ? दफ्तर जावै कोट-पेंट में। कमीज तो सदेई घरे धोयोड़ो ई पैरै, कोट छठै-छमास धोबी कनै धुवावै, सियाळै में नईं, ऊनाळै में जद पसीनै रै स्याळ री पापड़ी सूं गाभो करड़ो लकड़ हुय'र बड़कण लाग जावै। पेंट री छिब न्यारी है– धोय'र सुकोय दी, फेर सोंवती वेळा बिछावणां हेटै दाबदी। घे-म्हे तो कैसां– परे ग्रा तो सळां री कूचो हुयगी, पण जानकीदास कैसी– ग्रसल उतरती हुयगी।

इण बात सूं ग्राप समझग्या हुवोला कै जानकीदास

कोई वायै ग्रादम रै जमानै रो मिनख नईं है जिको उणरी सार समझतो नईं हुवै । समझै धणो ई है, थां-म्हां सूं बेनो, पण रूपली पलै तो रोई में चलै । जे धोवी कनै धोवाय'र इकांतरै गाभा पळटणा चालू करदै तो काल टांगड़ा क्रारतै हुय जावै । इण कारण टैम देख'र चालै, सीरख सारू पग पसारै, वगत देख'र नईं विगजै जिको वाणियो ई गिवार ।

लारला दिन चितारै जद जानकीदास उदास हुय जावै । एक टैम ही जद छैलो वण्योड़ो रैवतो, हात सूं लोटो ई नईं भरतो । जद कोई लखपती नईं हो, पण फेर भी हात उरलो हो, कारण कंवारो हो, ग्रवै घर माळी तो है जिकी है ई, पण वधेपो भी मोकळो हुयग्यो, ग्राधी दरजण टावर तो ग्रवार है ग्रर ग्राये साल पारसळ त्यार ! जानकीदास नै डर है कै छव वरसां में गिणती दरजण तई पूग जासी । जे साचेई दूणा हुयग्या तो जानकीदास कुवो-खाड करसी'क, घर छोड़'र लंगोटी लेसी'क, कांई करसी ग्रा जानकीदास जाणै, का जानकीनाथ जाणै ।

टावर ग्रा नईं देखै कै वावूजी उणां रै ई कारण लल्लू-भिगदर हुवै ज्यूं रैवै । उणां रो सोचणो संभव भी नईं, कारण टावरां तो ग्रापरै जलम सूं वावूजी नै इसा ई

देख्या। वांनै तो गाभै री जागा गाभो, दई री जागा दई, दूध री जागा दूध, घी री जागा घी, देवरगा ई पड़ै, चावै बाबूजी कठैसूं ई लावो । मोजा लावै तो छव जोडचां, बूट लावै तो छव जोड़यां, एक छोटी-मोटी हाटड़ी मोलावणी पड़ै । पण जोर कांई करै । बाबूजी नै ठा है कै घणा टाबरां में दळदर रो वासो हुवै, पण आराकारा कोरा सारा ? परमात्मा रै घर री लीक्या तो पूरी हुय'र रैसी ।

टाबरां नै तो बगत माथै डरा-धमकाय'र पोटाय तो सकै है, पण बाप नै कांई कैवै ? गाय दूजो चावै ना दूजो, दूध रो भाव चावै दो सेर हुवो चावै पूणी दो, उणां रै तो अछेर दिनूगै अर अछेर सिंझ्या चाईजै ई । माईतां जलम दियो है, पाळ'र बडा करया है, वांरी सेवा करणी टाबरां रो फरज है, इण कारण बाबूजी दूध तो पावै पण मांय सूं जीव सोरो नईं । मा बूढी डोकरी, दूध-घी रो आडो तो नईं करै, गाभा भी फाट्या-पुराणा दावै जिसा ई पैर लेवै, पण कोई साधू-सन्त घरे आय जावै तो पाछो भूखो नईं जावण दै-- अभ्यागत री सेवा गिरस्ती रो धरम है ।

अै तो थोड़-सी'क चीजां है जिकी गिणायी है, बाबूजी नै और ई कुण जाणै किसी-किसी बात रो सोच है। नोकरी रै पइसा सूं तो घर रो खरचो अबार भी

चालै नईं । पचीस-छाईस तारीख सूं ई लेणायत पेग घालण लाग जावैं, अर एक तारीख नै आय'र छाती ऊपर जम हुवै ज्यूं ऊभ जावैं । बक्त-टावर दीन-हीन ज्यूं मामा देखबो करै, बाबूजी दटवो भड़काय दै, फेर महीनै भर उधार सूं ई काम चलावैं ।

बरसां रै साथै केस धोळा हुयग्या, गोडा ढीला पड़ग्या, अर बाबूजी अबै बडा बाबूजी बजण लागग्या। तिणसा जे च्यार आना थांती बधी तो खरचो बीस आना बधग्यो । बूढा मां-बाप अबै नदी कनारै रा रूंख है, पण खाली हवा रै भकोरै सूं टूट'र नदी में बैय जावैं अर खेल खतम हुय जावै आ बात नईं । एक-एक नै आयो करण सारू कम सूं कम दो हजार रोकड़ी चायीजै । बऊ आपरा गैणा देवै नईं, घर जे अडाणै धर दियो तो माथो पटक'र मरयां भी पाछो छूटै नईं । बापोती है, हात सूं गमावणी भी चावै नईं । मां-बाप ई क्यूं, दो बेट्यां अबै बडी जूर हुयगी, परणावण सावै, अर फेर भी दिन बधती रात बधै, रात बधती दिन बधै, जिकी बाबूजी री छाती माथै दो पाड़ हुवै ज्यूं लखावै ।

आ बात मानी कै बाबूजी पैली, इसकूल रै दिनां में घणा हुसियार हा, पण जद आटै-दाळ रो भाव मालम

करणो पड़ै तो भलां-भलां रा तोता सूक जावै । इण हालत में जे बाबूजी चेताचूक हुयग्या हुवै तो कांई इचरज ? दफ्तर घर सूं आघो है इण कारण बाबूजी साइकल तो राखै, पण साइकल री हालत किसी'क है, आ ना, पूछ्या; आ कलम जे कोसीस करै तो भी बखाण नईं कर सकै । लो री कलम लो री साइकल री निन्द्या तो नईं कर सकै, पण संखेप में, बाबूजी कनै दो पइयां रो खटारो है जिण नै घीसता, हातां में घीसता, बाबूजी घणी वार जाया करै । जद जमानो ई रूठग्यो, बाळपणै रा साथी दांत ई धोखो देयग्या, तो साइकल क्यूं नी रूठै ? कदेई राजी हुवै जद साइकल खणखण-भणभण, खड़खड़-भड़भड़ करती टैमसर बाबूजी नै दफ्तर पोंचाय देवै ।

दफ्तर में बाबूजी घणा चिड़ोकला बजै । कोई छुट्टी री अरजी लावै तो गळै पड़ जावै, फाइल फंक देवै । इसो बरताव पुराणा बाबुवां साथै नईं हुवै । उणां सूं तो बाबूजी रो रूं कांपै । जद-कदेई कोई पुराणो बाबू अड़जावै, तो आप आतम समरपण कर देवै– इत्ता बरस तो काढ दिया, दो-च्यार बरस और रैया है, सावळ काढण दो तो निकळ जासी, नईं तो आज ई अवकास लेय'र घरे बैठ जाऊं ।

हूं तो म्हारै घरम सूं कैऊं कै केई रो बुरो करणो चाऊं नीं कोनी, थे लोग फेर भी तंग करो तो थांरी मरजी है।

चपरास्यां माथै बाबूजी घणा ई नाराज हुवै। वै कोई घरे काम करण नैं नईं आवै, तो नोकरी सूं काढण री धमकी देवै। चपरासी देखै पुराणो आदमी है, आपानैं विगाड़'र काईं करणो है ? जिकै दिन घर सूं लड़ाई कर'र आयोड़ा हुवै वी दिन तो चपरास्यां रै पूरी आफत हुय जावै।

कदेई-कदेई आप कोई कागद अठीनै-वठीनै धर धराय'र भूल जावै, दफ्तर में बाबुवां अर चपरास्यां नैं धकण लाग जावै। जद जोवै तो कागद खुद रै कनै लाध जावै अर बाबूजी घणा सरमाणा पड़ै— "अरे भई, कदेई कदेई म्हारो माथो तप जावै जद हूं थोड़ो गरम हुय जाऊं पण म्हारै कैयोड़ै री थे रीस ना करया करो।" आ बात सुणी जद दफ्तर समझ लेवै कै बड़ै बाबू आपरी गळती कारण माफी मांगली।

बाबूजी दोवड़ो चस्मो राखै लिखती वेळा नैड़ै री, जिण रो फ्रेम रही-सी'क हुवै। जद नाक री डंडी माथै सो ऐनी आगो हुवै, चस्मो उतारै, अर बढ़िया फ्रेम री काढ़ै सांकर, दूजो चस्मो नाक माथै चढ़ावै। नाक री डंडी

सगती सरच हुय जावें । फर'र धूरमो हुय जावें । दोर सगळो गूनो लगावें । मन में तो आवें कै थाली रें बळर दई दिन-भर रहूं, पण फेर भी पेट रै पाटी बांध्योड़ी रागणी पड़े, इसी नोकरी सूं तो निकमो बैठणो चोखो। घरे आय'र साइकल सूणां में मेल देवें अर मार्चें मार्थे गुड़ जावें । आधी घंटा तई लोथपोथ सूना रैवें, पाणी री गिलास पीवें, टावर हात-पग दाबें जणे सगती वावड़ें अर पाछा जीवता हुवें ज्यूं दीसे ।

बाबूजी री घणी मनस्या ही कै टावरां नै डाक्टर बणाऊं, अंजीनियर बणाऊं, पढाई करावण सारू बिलायत भेजूं, पण अबें ठा पड़ी कै वे मनसोबा फालतू है । आप कलम-घसाई करें ज्यूं ई टावर करता दीसें, पण इण में जोर कांई चालें । केई रो घर फाड़'र तो रुपिया लावण सूं रैया, केई रो खजानो तो लूंटण सूं रैया ।

आधो सिरकांवते-सिरकांवते भी एक बेटी रो ब्याव तो नैड़ो आय ई गयो । ब्याव में खरचा-बरचा भरपूर हुया, पण जानकीदास री जान नईं निकळी अो कुसळ मनावो । काळजो वळण में, अर लोयी छीजण में तो कांई वाकी रैयी कोनी । पण जे रुपियें नै पाणी दईं नईं वैवावें तो बेटी रें सासरें आळा राजी नईं हुवें; अर जे उणां सूं

मंडतै मेळै ई चासणी खड़क जावै तो ऊमर भर रो टंटो। इण कारण बेटी रै ब्याव में लाई जानकीदास री टाट मोकळी कूटीजगी।

बरात राजी-खुसी पाछी गयी परी जणै जानकीदास नै धाप'र नींद आयी। पण जित्तै तईं सगळा टाबरां नै नईं परणावै, जीव हेटो नईं हुवै। सोच हरदम वण्योड़ो रेवै। घर में गधै जित्तो खोरसो करै, दफ्तर में बरावर पीलीजै ई है, पण फेर भी जिण वगत दफ्तर सूं आय'र आध-पूण घंटा सुसताय लेवै अर छोटा-सा'क टाबरिया आय'र बार-बार लटूंब जावै, उण वगत जानकीदास उणां रो हमजोळी हुय जावै, तोती बोली में बोलै, कूड़ेई-कूड़ेई रीमाणो हुवै, फेर पाछो राजी हुवै, रमतियां में जीमण-जूठण करै तद इण दुनिया रै सगळै दुखड़ां नै पळ-छिन सातर बिसर जावै अर इयां सोचै कै हूं भी मिनख हूं अर मिनसा जूण रो थोड़ो-घौत सुख म्हारी पांती भी आयो है। पण जानकीदास आ भूल जावै कै इण तरै आपरै टाबरां सागै खेल करणो ई मिनख जूण रो सुख नईं है, आपरै टाबरां सागै तो छोटा-मोटा सगळा जीव-जिनावर भी खेल करै, अर घणा-घणा खोवणा।

हां एक दूजी चीज भी है जिण सूं बाबूजी नै मस्ती आवै, अर बा मस्ती जिनावरां मायं नईं व्हावै। दफ्तर सू आयां पछै बाबूजी थोड़ो नसो-पतो करै जिण सूं रोटी भी माय जावै अर फेर नसै में पड़या-पड़या मस्ती में रात काट'र दिन ऊगै जद सागी धन्धै में पाछा जुत जावै।

फदड़पंच

थांरै जचै तो थे बोलो, नईं जचै तो ना बोलो, जचै तो बुलावो, नईं जचै तो ना बुलावो, पण जे थारै घर में कोई काम-काज, एढो-नुखतो हुसी तो फदड़पंच बिना बुलाए आय'र करणै काम-काज में लाग जासी इण री जे आपनै ठा पड़ जावै तो हूं होड करण नै त्यार हूं। घर-गिस्ती में इसो कोई काम नईं है जिण रो काम-चलाऊ सूं वेसी ग्यान आपनै नईं हुवै। जे दूजा मिनख काम-काज करता हुसी तो झट खोट काढ'र आप बिच में हात घाल देसी। पण सफा ठोठ नईं है, इण कारण लोक इणां रो सिक्को भी मानै। कोई पाछो टोकण री हीमत नईं करै-भई थे हुवै ज्यूं देखबो करो, बिच में स्याणप ना करो। पण जे कदास कोई रोक-टोक कर देवै, उणरो लारो छूटणो सैंज नईं। सगळां नै सुणाय'र आप कैवै -- 'अबै सदी इसी आयगी, लोक सागी बाप रो ई आंकस' को मानैनी, थे-म्हे किसी गिणती में हो ? जलम रा देवाळ है जिकां नै ई आजकाल रा टाबर आंट में राखै। माईत जे माईतपणो जतावै तो सीधो गळी रो रस्तो बतावै, अर

कंठ-मिठाई सुवायण नैं त्यार रैवै । जिकै देस में इसा सपूत जलमैं बो फेर चढ़ोतरी क्यूं नी करै ? सारैं जांतै इण तरैं रा व्यंग कस नांखै ।

इसै मौकै मायं घर-धणी तो ठंडा-मीठा घालण री कोसीस करै, ग्रर वारला ग्रायोड़ा देखैं— काम-काज सोरै हुसी,-चलतो-फिरतो रेडियो ग्रायग्यो । पण जे ग्राप सुएनैं कै मनैं चलतो-फिरतो रेडियो कैवै, फेर देखो मजा- रेडियो थांरो बाप, थांरो दादो । रेडियो कैवण ग्राळै रै माथै मारूं गेडियो ।

जे कोई इणां री बडाई कर देसी, उण रा तो ग्राधा भाग समझणा चायीजै । ग्राप कैवैं — थारैं जिसैं मिनखां री मनैं ग्राज सूं बीस बरसां पैली घणी जरूरत ही जद कै हूं मम्बाई जूट ग्रसोसिएसन रो सभापती हो । उण बगत मनैं जिका ठीक-सर मिनख मिल्या, बै ग्राज हजारूं रपिया बटोरै है । पण मनैं चायीजता हा हजारूं ग्रादमी, थारैं जिसा सुपातर । ग्राजकाल री सदी में थारैं जिसा टाबर मौठ-निरावळ ई लाधै ।

मरणैं, परणैं, सभा-सोसायटी रै कारण घणो-सो'क तो ग्राप री टैम रुध्योड़ो ई रैवै । बिना बुलाए तो जासी, पण जे बुलासो तो मिन्ट एक री फुरसत कोनी— इण

भाल'र थांनै पांच-दस मिन्ट खोटी जरूर कर देसी। क्यां वास्तै ? आ बात बतावण खातर कै आज आपनैं किसी-किसी जागा जावणो है, अर जे नईं गया तो कीरा-कीरा ओळभा आसी, अर देस रै उत्थाण री समस्या में कित्तो भारी नुकसाण पूगसी। थारै जे आगै जरूरी काम खोटी हुवै है तो ई इणां रा मैंनेजमेंट तो सुणना ई पड़सी। पण कदेई-कदेई मारकेट सफा डल हुय जावै, अर इसी हालत में आप चुपचाप घर में आराम करै, आ बात सभाव सूं बारै है। हात-पग हिलै जित्तै आराम करण री सौगन है। रात नै नींद ऊपरियाकर फिरण लाग जावै जणै ई बिछावणां भेळा हुवै। तो फेर बजार सुस्त हुवै जद आप कांई करै ? निकमो नाई पाटिया ई मूंडै। केई सैंधै रै घरे जासी परा, पटीनली-बटीनली बात छेड़सी, मौको देखतै ई भट उण रै केई दूजै सूं वैर पलावण री कोसीस करसी। ज्यूं इण सैंधै रै घर में लाय लगावै, उणी तरै आगलै रै घरे जायनै उण रै भी धूंसकी देवाळ ई देवै। जद दोनां में तणा-तणी हुय जावै, अर फेर नैणां गूं रतन बरसण लाग जावै, उण बगत आपरी सागीड़ी पूछ हुवै, अर आप पाछा राजीपो करांवता फिरै।

कुड़ा तो हुयग्या, पण हाल डोल में कसर है।

लड़ाई-झगड़ै में झट बूकिया चढाय'र मैदान में कूदरा नै त्यार रैवै– मनै केई रो डर कोनी, हुसी ज्यूं दीसी जासी, मरसां अर मारसां। जाणूं तो हूं कै सामलै नै ई विन लासूं, पण जे दस घरूं अर एक खाय लूं तो भी कोई बात कोनी, लड़ाई में जावै जिका मार सूं थोड़ा ई डरै। राड़ में तो मार ई पांती आवै, कोई लाडू थोड़ा ई बंटै।

जे कदास आपनै फदड़पंच सूं काम हुवै अर बै आपनै नईं लाधता हुवे, तो आप आंख्यां मीचे कचेड़ी जावो परा। बठै बारलै बाग में कोई-न-कोई कूड़ी-साची गवा त्यार करता हुवैला। आप कूड़ी गवा देवण में घणा हुसियार है। चोखा-चोखा वकील आपरी सल्ला लेवै अर आपनै मैनतानो देवै। आपरी फीस भी ऊंची घणी, इण कारण साचै मामलै आळां नै तो इत्ती मोंगी गवा पोसावै नईं, अर आप कूड़ी पाळटी री गवा देवै, सफा साची हुवै ज्यूं, अर सामलो वकील'क हाकम जचै जिसा पेचील सवाल पूछो, बै आप खातर डावै हात रो खेल है।

जद इणां री पाळटी मुकदमो जीत जावै, उण बगत आप रुपिया तो सामलै कनै ठोक-पीज'र मोकळा लेय लेवै पण रुपिया लियां पछै कैवै– अरे भई, थे लोग सा साधारण आदमी हो, धान खाय'र दिन काटो, थां

मटका करै है, एक दिन जे म्हारै सागै बारै निकळ ज्यावै तो ठा पड़ जावै कै कीरैं घणो काम है, पण आ बात मन में ई सोच'र रैयग्या, मांय रो मांय पीतो गिटग्या। गिटै आपेई– भूख लागै जद किसा थे-म्हे जीमासां ? घळो तो बीनणी आगै ई मांडणी पड़सी। बा जे कोरा सुरयोड़ा फलका अर पाणी सूं बघायोड़ी दाळ भी पुरससी, तो ई पेट रो देवता तो सान्त हुय जासी।

रँडवो

राम रूठै जिको रंडवो हुवे । परणीजते ई, जवानी में रंडवो हुय जावै तो कोई धोखो कोनी, पण ढळती ऊमर मे रंडवापो मिनख रो सगळां सूं वडो दुसमण है । कारण, खळाखळ रुपिया खळेट करते थकां भी भलै घर रो मन भांवतो टाबर ढूकै नई ।

म्हारै भाएलै रै नानाणै कनै एक म्हाराज रैवै–हीन रा ऊंठड़नाथ, बूकिया फौलादी, पीड्यां पत्थर री । पढाई मण री बोरी तो खाख में घाल'र बजार सूं घरे लेआवै; जे कोई होड करै तो दो बोरयां एकै सागै ला दकै । पण सभाव भोळो है । बजार में लोग कूड़ी होड कर-कराय'र म्हाराज कनै सूं धान घरे म्हंखवाय लेवै, पद म्हाराज होड रा पइसा मांगै तो बात हंसां में घाल देवै– "म्हाराज थे कोई मामूली मिनख थोड़ा ई हो, कळजुगी भीमसेन हो, थे तो दो छोड'र च्यार बोरयां भी कै सार्थे उठाय सको हो । बैठो, ठंडो जळ पीवो ।"

टंडो जळ पियां सूं म्हाराज टंडा हुय जावै, मन में सोचै भई हूं साचेई भीमसेन हूं।

म्हाराज नैं पगागां में एक बरस पटनो हो बर बामणी दरगो देयगी। म्हाराज कैवै– "बा जीती जिते म्हैं तो थांनै होट रो फटकारो ई को दियोनी, गतियां सूं थोरी मुट्ठ्यां भरयोडी ई राखी, कदेई बीरो एक ई को उलांघ्योनी मर मोकळा सुख दिया।" पण पाडोसण दुणकलो न्हांख देवै– "घणा ई दुख दिया बापड़ी नैं।"

आ बात सुणने ई म्हाराज रै माळ छूटै, मर दस-पन्द्रै दिनां ताणी इण बात रो सागीरथ करता रैवै– "म्हारै जिसी सोरी राखणियो कोई है, तो बोलै मूंडै सूं! अथवा कोई आ समझती हुवै कै हूं घणी लाडेसर हूं, तो बा म्हारै सामनै आवै। म्हारै घर में ओ सागीड़ो ऊंचो मोल, इस्प्रिंगदार पिलंग जिण रै माथै बैठणियो फदाफद उछळण लाग जावै। पिलंग ऊपर माछरदानी, रात नैं सोयां पछै माछर रो जायो पिलंग में मूंडो ई नईं घाल सकै। लुगाई जींवते थकां बीस-बीस, पचीस-पचीस गायां भैंस्यां म्हारै घर में दूजती ही। जद बा खेत जांवती, तो बैली जोताय'र जांवती, मर हूं घोड़ै असवार हुय'र जांवतो।"

"रुपियै-पइसै री कूं'ची, सब-कुछ उण नै ई भोळायोड़ी ही। कवै कंवण घाळां रा हिया फूट्योड़ा है जिको केवै के उण नै दुख देवतो। जे म्हारी लुगाई नै दुख हो, तो फेर दुनिया में सुखी लुगाई लाधणी ओखी है।"

म्हाराज री बात लागै तो भपा साची है, पण पाड़ोसण केवै के लायण रै जामू-रा-जामू उपाड़ देवतो। कदेई पैरण नैं चोखो गाभो दियोनी, ना कदेई लाड-कोड सूं बतळायी। बा तो मरती बगत इण मगरण सूं बोलण री मन में ई लेयगी, पर भो धक्कड़पज हुवै ज्यूं हुयोड़ो रैवतो। बा मरती सराप देयगी के कोढ़िया! जे म्हारी आतमा चाळी है तो म्हारै मरयां पछै तनै लुगाई रा सपना ई आसी, तूं लुगाई-लुगाई करतो मर जासी, पण तनै लुगाई को मिलैनी।

म्हाराज बूढ़ा'क पाड़ोसी बूढ़ा, था तो ठा नईं, पण पचार पचावन बरसां री ऊमर में भी म्हाराज च्यार-पांच हजार रपिया देय'र भी ब्याव करण नैं त्यार है। जे कदास कोई चोखो टाबर म्हारै ध्यान में आवै, तो झटपट चिट्ठी-पतरी लिख दिया, हजार-पांच सौ म्हानैं भी मिल जासी। पण इण बात रो पक्कायत ध्यान राखजो के टाबर

घराणैं-ठिकाणैं रो हुवै, अर आंवते ई घर सांभ लेवै। जे कोई नागी कुत्ती आय जावै, तो तीसूं दिन फजीता हुवै, इण कारण टाबर सूवो भी हुवणो चायीजै। जे कोई लुच्ची-लफंगी आय जावै, तो म्हाराज नैं इण बात रो पूरो-पूरो डर है कै कदेई गैणा-गांठा लेय'र नव दो इग्यारै नईं हुय जावै। आ वात म्हाराज पैली सूं खुलास करै है कै जे कोई बदमास छोरी आयगी, तो फेर हूं गम नईं खाऊंलो। म्हारै हात री जे एक पड़गी तो तीन दिन पाणी नईं मांगैली।

इण तरै ब्याव री अमर जोत म्हाराज रै मन में रात-दिन जगमगाट करै। पण म्हाराज रा सेठ घणा निरदयी, जिणां नैं म्हाराज ऊपर रत्ती भर भी दया आवै नईं। म्हाराज ब्याव री वात मांड'र मीठा सपना लेवणा सरू करै, दूगर परणीजै, उजड़्यो घर पाछो वसै, बीनणी री घमघमाट घर में सुणीजै, म्हाराज हालरियै-हूलरियै नैं गोदी रमावै, फेर, सीड़ी आय'र रवड़ो रै प्यारै री मनवार करै, अर म्हाराज रो सरीर द्वापर रै भीमसेन जिसो हुय जावै — आ आगली सपना में आय'र कमरै री दरड़ नईं मारो टाणगय'र उछळण लाग जावै, तो सेठ — "म्हाराज, बस करो, हुवा ब्याव हुयग्यो थरै!

ब्याव न कोई ध्याव ! बडो ब्याव बाकी रैयो है जिको म्हे
कुणं ई लकड़ा में कर ग्रासां।"

म्हाराज रो संसार सूनो हुय जावै, गाल ढीला
जावै, ग्रांख्यां, थोड़ी-थोड़ी, मारनै भैसं जिसी
ण लाग जावै, ग्रर संस्कार माड़ा है, ग्रा सोच'र
ज छाती ग्राडो भाटो देय'र रैय जावै।

पाड़ोसण म्हारै तीन-च्यार महनां सूं सेंधी ही, पण 'राम-राम माजी', 'राम-राम भाई' इण सूं बेमी बोल-वतळावण म्हारै अर माजी रै बिचाळै नईं ही । थोड़ा दिनां में सेंध वधगी, अर एक दिन माजी मनै भुग्राजी री पोथी रा थोड़-सा'क पाना सुणाया। पाड़ोसण आपरै जीव री सौगन दिरायी कै भुग्राजी री वात चवड़ै नईं हुवै । मैं हुंकारो भी भर लियो, पण अबै पाडोसण मरगी, मरी नै खासा बरस भी हुग्या, अर म्हारै सूं भुग्राजी री वात कैयां बिना रैयीजै भी कोनी, जद हूं देखू हूं कै अबै बा सौगन उतर-उतरायगी, इण हालत में जे हूं भुग्राजी री बात सुणाऊं, तो मनै कोई आंट लखावै कोनी ।

पाड़ोसण वारणो ढक'र, फेर अठीनै-वठीनै, ऊपर-नीचै, च्यारां खानी, भाक, फेर बारणै री भोगळ संभाळ'र धीरै-धीरै कैंवण लागी– "देख, आ बात तीजै कान ई नईं पूगणी चाहीजै ।" मैं भरोसो दिरायो, जणै माजी वात सरू करी–

"सिंध में म्हारो अर भुग्राजी रो घर कनै-कनै ई हो । हूं तो आंनै है जिसा जाणू हूं । बठै जणो-जणो आं में पइसा मांगतो हो, पण बांनै निपटावण में अै भी बडा हुसियार है ।

दूध आळो कंवतो– "माजी म्हारो हैंसाब करदो, तीन-तीन मइना हुयग्या।"

भुआजी– तू भोलोढोलो है, थारै कांई परवा है, तीन मइना ई तो हुया है, का तीस बरस हुयग्या ?

दूध आळो बड़बड़ाट करतो जांवतो– पइसां बिना गायां रो पेट कियां भरां, जे आंवतै मइनै पइसा नईं दिया तो मनै बंधी बंध करणी पड़सी।

साग आळो– भुआजी, म्हैं सौ-सौ वार कैय दियो– म्हारै खटाव कोनी। हूं म्हारा पइसा अवार रा अवार लेसूं। आऊं जद ई कंवै "काल आए, काल आए" थांरो काल तो कदेई आवै ई कोनी।

भुआजी रै घरे कोई सगी समधण आयोड़ी ही, उण रै सामनै ईजत राखण सारू भुआजी बोल्या–

'अरे गोवन्द आज मिन्नी डाक'र आयो दीसै है। थारै-म्हारै बरसां सूं बौवार है, कदेई तूं तगादै रो नांव को लेवैनी। पइसा थारा अखरे-अखरे। अवार ई लेजा भलेई। सौ रो लोट है, खुला लाघसी ?

इण तरै साग आळै नै ठंडो-मीठो घाल'र भुआजी बईर कर देंवता।

कपड़ै आळो– घर रै बार कर घेरा घालते-घालतै

म्हारा तो तळिया घसीजग्या, अर थांरै हाल टरकावण सिवाय दूजी बात ई कोनी ? माल म्हारै बाबैजी रो तो हो कोनी। सेठ सदेई ओळभो देवै कै तैं इसी च्यार सौ बीस लुगाई नैं कपड़ो उधार दियो पण क्यूं दियो ?

भुआजी तर्राटो लाय'र बोल्या– वळचो माजनो थारै सेठ रो। च्यार सौ बीस तूं, थारो सेठ, अर सेठ रो बाप ! मनैं इसी ठा को ही नी कै थे एक कौडी रा मिनख हो। हूं थांरा पइसा एक घड़ी-पल खातर ई को राखूनी। ले जाए थारा पइसा एक तारीक नैं।

कपड़ै आळो– आज तारीक तो दो ई हुयी है। इयां तांईं आंवते ई सगळी तिणखा रो गब्बो करग्या ? भांसाट्टी सिवाय दूजी बात ई कोनी। परमातमा आगै जीव वणो है। क्यूं कूड़ बोल-बोल'र पापां रा भारा बांधो !

फेर धीरै-सो'क 'आछी लुगाई सूं पानो पड़्यो' वते-कंवते गाभै आळो जांवतो परो।

परचूण आळो– क्यूं माजी, आज दो तारीक है, थां ज रो पक्को बैण करचो हो, आंख्यां री सोगन खाय'र।

भुआजी कनै जाय'र धीरै-सी'क बोल्या– अबार प (धणी) घर में है। जोर सूं ना बोल। जे हाको सुण यो तो कैसी– !!टकै-टकै रा आदमी तगादै आवै।" हूं

सिझ्या आपेई पूगता कर देमूं । सदेई-सदेई थोड़ो ई नटीजै, आँख्यां री सोगन खाय'र बैण करयो हो तो मनै किसी म्हारी आँख्यां खारी लागै ? थारै पांच-सात रुपियां खातर हूं म्हारी आँख्यां गमासूं ?

वरतण चौकै आळी– पांच महना हुयग्या 'काल-काल' करते ।

भुआजी– तूं किसी लोक है, म्हारै टाबरां जिसी ई तूं है । थारै-म्हारै कोई पइसा री नातो थोड़ो ई है ।

व० चौकै आळी– ओ तो थांरो माईतपणो है, पण गाय जे घास सूं भाएला घालै, तो खावै कांई ?

भुआजी– लै, दो रुपिया ले लै अवार तो, फेर हैसाब करसां जणै देख लेसां ।

व० चौकै आळी– भूत री ठीकरी में न्हांसदो दो रुपिया । कोई खैरात बांटो हो का किरियावर करो हो ?

भुआजी– वयू, नकूडो घणो बाजण लागग्यो दीसै आजकाल । आयी जद तो गाय हुय'र आयी, अर अबै म्हारो ससम बणी चावै है ?

वरतण चौकै आळी– म्हारो नकूडो टोरया तो थे थांरी जाणो । पइसा चूकियां री कमाई रा खाऊं, लोकां रा हड़प-हड़प'र हजम को करूंनी । मनै म्हारा पइसा

दे दो, नईं तो म्हारं सिरसी कोई भूंडी को है नी ।

भुम्राजी– जा रांड ! पइसा देय'र भूलगी कांई ? तू म्रायी जिकै दिन ई म्हैं तो थारो ग्यान गिण लियो कै कोई गईवाळ दीसै, पण म्राप (धणी) रै कैयां सू राखली । तैं म्हारी नूईं री नूईं धोती चोरली, ग्रर 'म्रापरा' सोनै रा बोताम थारं सिवाय कठै ई टळधा कोनी । रुपिया मांगती नैं तनैं सरम को म्रावैनी ? ईजतदार लुगाई हुवै तो इसो काम कदेई को करैनी । तू तो ढकणी में नाक डुबोय'र मरै जिसी बात है । पैली म्हारी जिनस्यां रा रुपिया म्रठै घर, पछै मांग थारा पइसा ।

बरतण धोवै म्राळी पूत-खसम री गाळ्यां काढती-काढती गयी । जद कदेई दोरी कमाई रा पइसा याद म्रांवता, तद भुम्राजी कनै जावती, घणीसारी गाळ्यां काढिम्रांवती, म्रर चौगणी सुणिम्रावती ।

म्हाजन– का तो मगळै घर रा म्हारं मठै माय'र सलड़्यां गांवता कै– थे ई काम काढमो, नईं तो बेटै री ब्याव म्रटक जासी, ईजत रेत मे रळ जासी, म्रर म्राज हूं पइसा पाछा मांगूं जद थानैं बोलण नै ई फुरसत कोनी । बपूं, थे कोई म्हारं माथै मांगता हा जिको लेय'र हजम करग्या ?

एक वार तगादो आय जावै जिकै में ई मरण हुय जावै, अर थे लोक इसा खोटी नीवत रा, कै थारै तगादै रो कोई असर ई कोनी !

भुआजी– "नीवत खोटी ?" आ कांई जाण'र कैयी। (बेटै-धणी नै धीरै-सी'क हेलो कर'र) देखो, ओ कांई कैवै है। (फेर म्हाजन नै) पण बना, थारो दोस कोनी। म्हारी दिन-दसा आज इसी ई है। आज म्हारै तन गे गाभो ई वैरी वण्योड़ो है, तूं आलतू-फालतू बात सुणावै जिकै में तो इचरज ई कांई ? म्हारै तो आपजी रो बीमो करवायोड़ो है। कम्पनी सू आंवते पाण थारा रपिया फण्ण देणा फेंक देसूं। जे कूड़ बोलूं तो माईतां रै माड्योड़ै में बैठी हूं।

इसा कित्ता ई तगादै आळा भुआजी रै घरे आवता, पण भुआजी मूंढो देख'र टीको काढता रैवता। भुआजी बजार में निकळता तो फूंक-फूंक'र पग धरता। किसै पासी जावणो है, आ सावळ सोच'र जांवता, भुआजी अचाणचक कोई गळी में नईं जांवता। एका-एक गयां चोर-जार रो डर तो नईं हो, पण लैणायत रो खतरो खासा रैवतो। जे सोच-विचारनै निकळता, तो ई आठ-दस सूं तो भेटा हुय ई जांवता। पण

भुआजी री घाणी नैं समदार। धां रै घेरै मां इर्ग रो रत्ती भर भी मगर नईं घांवतो, भर साधारण मिनख मिटणियां जिगा घेरै मायं माव देखाय नैं भुआजी अंगट घपया जरूरी काम रो मिस करनें लेणायतां सूं दांतो छोडांवता।

एक दिन एक लेणायत घरे भाय'र धरणो देर दियो। रुपिया दियां बिना उठूं ई नईं। सागै एक गुंडा भी लायो। जमीं मायं मोकळा सोट पटक्या। मोहल्ले में राणोराण लोक भेळा हुयग्या।

पाड़ोस्या बिच में पड़'र बीं दिन लेणायत नैं तो हातां उठाय दियो, पण फेर भी भुआजी रो मन वर बस्ती सूं काठो धापग्यो। और कठैई जाय'र रैवण रो मनसोबो करता हा। सिंध में घर हो जिको भी बड़ो राख्योड़ो हो। वठै मबै भुआजी नै कांईं करणो हो! नूईं काया, नूईं माया।

इण मौकै पाकिस्तान रो रोळो हुयो भर भुआजी भापरो करजो वठै छोडनै रातो-रात भाग निकळ्या।

इत्ती बात सुणाय'र माजी एक वार फेर सौगन ... कै भुआजी री बात जाहर नईं हुवै। फेर मांरी ... गांमी भर मधर-मध रहग्या।

थोड़ा दिनां पछै एक दिन फेर माजी भ्रायग्या
(म्हारै कमरै कनै ऊभग्या । म्हारै श्रदीतवार री
ट्टी कारण फुरसत समझ'र ई वै ग्राया हा । जदपी
छुट्टी में करण सारू मोकळो काम भेळो कर राख्यो
, पण घरै भ्रायोड़ा माजी नै बैठण री मनवार
र्‌या बिना कियां सरै ? माजी इरी नै भ्रडीकता हा।
ट पसवाड़ै पड़ी बोरी माथै बैठग्या । जद बै बैठग्या
ो हूं कलम मेज माथै मेल'र बोल्यो–"कांई हुकम है
ाजी ?"

माजी बोल्या–"थारी रळी आयगी, जद मिलण
ै निकळगी ।"

हूं बोल्यो–"ग्राछो काम करयो । ठंडो पाणी
ाऊं ?"

माजी कयो–"पाणी तो हूं भ्रबार पीय नैं भ्रायी हूं,
तिस कोनी । घर में भ्रौर कुण है ?"

"घर में तो कोई कोनी । क्यू कुण चाहीजै ?"

"नई चाहीजै कोई कोनी, तू चावै तो मुग्राजी
री बात थोड़ी भ्रौर सुणाऊं ।"

पारको मैल निचोवण री मनस्या तो ही कोनी,
पण माजी रो मन राखण सारू हूं रुची देखाळतो बोल्यो-

"हां, हां, सुणावो माजी ।"

माजी बोल्या–"पैली वारणो जड़, पछै वात म' करूं । जे भुम्राजी नै ठा पड़ जावै कै म्रां री वान त मैं कैयी है, तो मनै चीर गेरै ।" इयां कंय'र डोकरी खुद उठ'र म्राडो ढक्यो । फेर मनै पूछ्यो– थारै काम तो खोटी को हुवैनी बेटा ? हूं तो निकमी हूं जणै इयां ई म्रायगी ।"

मैं माजी नै "काम खोटी" रो उथळो तो नईं दियो पण कैयो– हां, म्रवै सरू करो माजी ।"

माजी थोड़ी म्राख्या खेची जाणै कांईं चेतै करता हुवै । फेर बोल्या– लै म्राज छगन दरजी री बात सुणाऊं । म्हारो घर तो म्रारै चिपता-चिपत हो इण कारण सगळी बातां री मालम पड़ती रेवती ।

दरजी घरे म्राय'र कैयो– "बाबूजी कठै है ? म्राज रो बैण धरम री सौगन खाय'र कर्योड़ो है । मिनख खातर तो धरम सू ऊंची कोई जिनस कोनी ।"

भुम्राजी– बाबू तो दफ्तर सूं म्रायो कोनी, म्रवै [illegible] है । घड़ी म्रध घड़ी नै म्राय जाए ।

[illegible] पण साईकल तो म्रा पड़ी है नी । साईकल घर बाबूजी म्राया कोनी, म्रा ठीक हुयी !

भुमाजी सू भट देणो कांई उथळो नईं बण्यो। इण बात री मालम छगन नै घाले बिना बोल्या- न ! तूं तावड़ै में आयो है, थारो मायो तप्योड़ो पंखी लै, हवा खा।"

छगन बोल्यो- मनै तो हवा खांवतै आज दो बरस । धापग्यो हवा खांवतो-खावतो। आज भी थे मनै धान्या खावो हो, पर मनै जचै कै बाबूजी पकायत है।

भुमाजी बोल्या- "म्हारी समझ लियां पछै हूं कदेई ोली कोनी, पर आज इत्ती-सीं'क बात खातर झूठ ? जे घर में हुवै पर कंय दू 'है' तो किसो फागी है ? बाबू ? गाव री मेम री हालत कायळ हुयगी ारण गाव गुड़ भोरा-भोर आपरी मोटर मे बैठाय'र लेयग्यो। मनै तो सोच यो है कै बाबू दिन भर रो है, जीमण खातर ई आयो कोनी"।

छगन रै भुमाजी री बात गावळ जची तो कोनी, करणो काई ? कमर मार्थ डायोडो हाथ बठै धीरै-धीरै बारै निकळग्यो।

भाजी बोल्या- हूं एक बात कैणी भूलग्यो ही। जद आवणो होस्यो, तो कोई आवै सू देख'र ई भुमाजी

बैटै नै डागळै भेज दियो अर कैयो 'दरजीड़ै सूं हूं आपे
निवेड़ो कर लेसूं'। अबै जद दरजी गयो परो तो भुआजी
बैटै नै हेलो कर'र हेटै बुलाय लियो।

छगन नै टरकायो जिकी जीत माथै बेटो मां रै
बडाई करण लाग्यो ई हो का बैरी दरजीड़ो फेर आ
बळ्यो! "माजी क्यूं दुनिया नै धोखो देवो? अबार तै
थे कैवता हा कै घर में कोनी, अर मैं पूठ पोरी जिते
साल में त्यार!"

यासूं मूं तो कोई बोल बण्यो नईं। पण भुआजी नै
घोनी में हगवणियों सायद ई कोई जलम्यो हुसी।
मांस काढ'र बोल्या–यासूं तो पिद्दोकड़ै सूं माय'र अबा
घर में बड़्यो है। हाल तो चोळो ई खोल्यो कोनी, डील रो
पसीनो ई सुकायो कोनी। मनै भरोसो नईं हुवै तो ज
देखलै का गगरमी पड़ी है पिद्दोकड़ै में।

छगन समझ में पड़्ग्यो, सायद पिद्दोकड़ै सूं आयो
हुवै। अर इण समझ रै कारण आधै मिन्ट तांई बो
हुमसुम ऊभो रैयो। भुआजी नै मौको मिलण रुकार छगन
रै आधै मिन्ट री सान्ती मोकळी ही। वै तण'र बोल्या
ई ... मोटा में आज रो अमर आयो बिना
... आदमी मतैई मुंगो हुवो, आवै ...

वळ-मळांवतो हुवो, थे भट पइसा मांगण ने आय जासो ।

छगन कंयो– माजी बस करो । सोभा आयगी । जात बखाणते थांनें सरम को आवेंनी ? मिनख जात सूं ऊंचो को हुवेंनी, करम सूं ऊंचो हुवें । थे ऊंचें कुळ में जलम'र भी जे लोकां रैं पसीनें री कमाई माथें हराम रो चित देय'र बैठ जावो तो इसै ऊचैं कुळ सूं आप रैं काम सूं काम राखणियो, नीचें समझ्योड़ै कुळ मे जलमणियो, साव ऊंचो है ।

बन्नू मजाक में पूछ्यो छगन ! सतसंग में जावै दीसै नू नो ।

छगन तड़क'र बोल्यो– म्हारैं सतसंग सूं कोई लेखादो कोनी । हूं म्हारा पइसा मागू हूं । अर जे सीधें रस्तें नईं दिया तो मनैं कचेड़ी री सड़क देखणी पड़सी ।

भुआजी बोल्या– म्हारैं घरे आय'र तैं म्हारी ईजत खराब करी है । लैण-दैण रो हेसाब भाई-बीरां सु निकळै, राड़ करयां काम थोडो ई चालैं । मिनखपणो तो थारैं में है ई कोनी । तूं तो हिड़किये कुत्तें दई पाथरो बटको थोडतो ई हुवैं । सामलै मिनख री ईजत रो तो कांई ध्यान राखै'क नईं । थारी अर म्हारी ईजत एक सरीसी तो कोनी ।

छगन बोल्यो– थास्ते लागग्यो ईजत रै । थे भा

बतावो, पइसां रो कांई कँवो हो ? क्यूं बाबूजी, आज रै बैंण रो कांई हुयो ?

भुआजी– अबै रुपिया थारा कचेड़ी में ई मिलसी। आ पड़ी कचेड़ी, जा करदे दावो।"

भुआजी री बात कैय'र माजी खासा थकग्या हुवै ज्यूं लखाया। मैं पूछ्यो– "माजी थकग्या ?" माजी भीत रो सायेरो ले लियो, फेर बोलण लाग्या, इत्तै में छापै आळै बारै सूं हेलो कर्‌यो। हूं छापो लेवण खातर उठ्यो। बारणो खोल्यो तो टाबरां री टोळी, जिकी आपरै नानाणै जीमण नै गयी ही, हाका करती पाछी घर में आयगी।

माजी रो फेर सुणावण रो मन तो रैयो, पण टाबरियां री च्यांय-म्यांय, अर फेर भुआजी री गुपत बात ! इण कारण माजी लकड़ी सांभ'र फेर डावोड़ो हात गोडै माथै देय'र ऊभा हुयग्या।

म्हैं कैयो– "आज तो घणी किरपा करी माजी।"

इण बात सूं माजी राजी हुया। डब्बी काढ'र तमाखू री चिमठी सूंघता बोल्या– "अच्छा बेटा ! अबकै अदीतवार नै फेर आंसूं।"

पुई भाले पूग जांवता, का बळधा-गाडी मार्थ जांवता परा। अबार रा टाबर ज्यूं च्यारां खानी चक्कर काढै है, इसी जरूरत वां दिनां घूमरण री पड़ती कोनी।"

मैं ऊंतावळ सूं पूछ्यो– "ठीक है, टाबरपणो तो बिना पगरखी काढ दियो, पण समझरणी अकल आयां पछै तो पगरखी पैरी हुसी ?"

उथळो दियो– मोट्यार जवान हुयां सू ब्याव हुयो, अर ब्याव हुवने ई सासरै रैवरण लागग्या। सासरै में परवार मोकळो, रामजी री दीन–सुसरो, दादे सुसरो, काकै सुसरो, बडिया सुसरो अर सात जेठ। जे पगरखी सह करपोडी हुवती तो ई पगरखी हात में लियां-लियां चालरणो पड़तो, कारण सासरै में आ माईनां रै आग कर आ पगवाड़ कर तो पगरखी पैरया निकळीजै कोनी। वां दिनां बडा री इसी कारण ही। अबै तो कुरण पूछै है बडा नै ? अबै तो सड़क मार्थ चवड़ैधारै मिनख-लुगाई हात मूं हात सूंवे चालै, पगरखी खोलरणो तो निवाय निगोरै।

मैं कैयो– भाभी, अर उमरालो निरणो पाछलाय . निगरिये है तो अबै पगरखी क्यूं नी पैरो ? अबै

तो थांरा दुसरा ग्रर जेठ कोई कायम सायद ई रैया हुसी ।

माजी ग्राप बोल्या– "म्हारै सू बडा सगळा सिधारग्या । हूं एक ई ग्रभागण रैयी हूं । म्हारो तो मौनरी चिट्ठी ऊंदरा लेयग्या दीसै है । ग्रर पगरखी रो तै पूछ्यो, तो हूं ग्रवार री चलम में तो हूं कोनी । म्हारै तो पगां रै उमाणा रैवण सू इसा तळिया बंधग्या कै ठंडै तातै री म्हारै पगां नै कांई ठा ई पड़ै कोनी ।"

खूमो बरफ आळो

रंग कोयलै जिसो काळो, कोयलै सूं भी बेसी काळो, काळै नाग जिसो। डील अबै तो कस बायरो है, पण चढती जवानी में डील में करार हो। पट्टीदार गाभै रो बंडो अर धोती खूमै री पोसाक। माथै में तेल मोकळो सींचै। सीयाळै में तो घाणी सूं कढाय'र खींचड़ै सागै ताजो तेल खावै—तिल्ली रो। ईंसू हाडां में बारमास पौंच बणी रैवै, इसो खूमै रो विस्वास है।

खूमो पैली तो एक पेवटी में ठंडी बरफ राखतो अर मिझ्या तई छव आना, आठ आना कर'र घरै आय'र सुख री नींद लेंवतो। पण मोंगाई कमर भांग दी। अबै आठ आना, छव आना सूं काई पार पड़ै? इण कारण खूमो अबै बरफ रो गाडो करण लागग्यो। बरफ घरा'र घालण खातर भांत-भांत रा संचा राखै, पान, बिड़ी अर और केई तरै रा। पइसै रो, दो पइसां रो अर आनै रो। गाडै में च्यारूं मेर चौखट में खण करायोड़ा जिकां में बोतल्यां री लैण। दो-तीन बोतल्यां में तो सरबत अर बाकी में रंगीन पाणी।

खूमो कैवै— दुनियां रंग मार्थ रीझै, इण कारण

रंगील बोतळयां रो देखापो करणो पड़ै । म्हारो काळो रंग भी सुगलो है इण कारण हूं रंग-रंगीला गाभा पैरूं । गाभो मिनख री ग्रैब नैं ढकै ।

गाडै रै हेटै एक टोकर लटकै जिको, गाडो चाल्या सूं, ग्रापेई बाजै । टोकर रो टण्णाट सुणतै ई छोरा-छापरा ग्रापेई घरां मांय सूं पइसा लेय-लेय'र ग्राय जावै । खूमो खूब फुरती सूं छत्ता-पान ग्रोर बणावै, तो ई टाबर ऊंतावळ ग्रर खड़भड़ाट करचा विना नई रैवै । कदेई-कदेई इण खड़भड़ाट में टाबरां रै हात सूं खूमै री बोतळ भी फूट जावै । बो टाबरां रै माईता नैं ग्रोळभो नई देवै । टाबरां नै धमकाय'र भगाय देवै ।

खूमो टाबरां री उधार भी करै ग्रर सगळा टाबर ग्राप-ग्रापरा पइसा ग्रापेई लाय'र खूमै नै देवै ।

जद मेळा-खेळा हुवै तद खूमो गाडै नै सजाय'र ले जावै ग्रर ग्राप भी सजधज'र जावै ।

सैंकरीन रै जमानै मे भी खूमो सरबत में खांड घालै, सैंकरीन घाल'र मीठो नई करै । बो कैवै– टाबर म्हारा, जिसा ई दूजां रा । हूं म्हारै हात सूं जैर को छोळ सकूं नीं ।

बरफ रो गाडो करतां ग्रबै मोकळा बरस हुयग्या, ग्रर गाडै नै भुक'र धकेलण कारण खूमै री कमर भी

धोम्या सूं भागून कुडगी। खूमो कैया करै—कमर आपैई कुडै, सुराक तो मिलै कोनी। सुराक री पूलछो तो सुराक सूं ई चालै। जे मनै रोटी मावळ मिलै, दो पइसा घी मूं, तो म्हारी कुड़योड़ी कमर भट पाधरी हुजावै।

खूमै री खुराक भी ठीक है। जीमण में लाडू-चूरमो, पूड़ी- साग हुसी तो चूरमै सिवाय बीजी जिनस रै हात नईं लगावै। धीरै-धीरै जीमतो रैसी, अर ज्यूं ऊंठ पेट में पाणी भेळो करै, बिया खूमो भी जीमण में एक दिन धपटवां माल खाय'र फेर दो दिनां री नक्की कर लेवै।

अगलै दिन खूमो नांगै में हो अर आपरै बेटै रो सायेरो ले राख्यो हो। मनै देखते ई बोल्यो— "अस्पताळ जाऊं हूं, कमर रै इलाज सारू। मावळ हुयग्यो तो फेर आय'र राम राम करसूं, नईं तो ओ ई आखरी राम-राम है।"

मारजा

मारजा सू बडा ग्रर छोटा सगळा भाई परणीजग्या पण मारजा हाल कंवारा है। हाल भी ऊमर घणी कोनी, चाळीस-इकताळीस हुवैली, पण छोरचां रा माईत जाणै मगळा ग्राधा है। मारजा जिसो हिस्ट-पुस्ट, हट्टो-कट्टो कमाऊ जवान, वांरी ग्रांख्यां हेटै ई ग्रावै कोनी। पण जिकै दिन फेरां री रात रो जोग है, वी दिन बिना बुलाये कोई ग्राय'र मारजा री गरज्यां करसी।

नगरपाळका तथा सरकार री इस्कूलां सैर में मोकळी हुवगी पर भी मारजा री पोसवाळ सागीडी चालै। सो डेढ सौ छोरां सू कम मारजा री पोसवाळ मे कदेई नईं रैवै।

छोरां री फीस मारजा न्यारी-न्यारी कर राखी है खाली बाणीको– एक रुपियो, वाणीको-हिन्दी– दो रुपिया, जे साथै ग्रंग्रेजी, तो तीन रुपिया। ऊंची इस्कूलां रा परधान गुरु भी मारजा री तिणखा सू ईसको करै।

मारजा री इण सफळता रो कारण है मारजा री मैनत। बारै मास दो वगत इस्कूल लगावै। केई छोरै री हीमत नईं कै प्रार्थना री बेळा हाजर नईं हुवै। जे कोई मोडो ग्रावै, तो माईत नै सागै लेय'र ग्रावो, एकलो ग्रायां मारजा माफ नईं करै।

सगळा पाढा लिखणा अर माळणी बांचणी सगळां छोरां सारू जरूरी। ऊंठा, ढूंचा, सवाया, सैरा, पूणा, सगळा पाढा छोरां री जीभ माथै पड़्या है। बडा-बडा सवाल, जिकां नै इस्कूलां रा छोरा पाटी-बरतणै अथवा कापी-पेमसळ सूं करै, मारजा री पोसवाळ रा छोरा दड़ाछंट मूंढै बतावै, चिमठी बजावै जित्तै में!

मारजा कोरा मारजा ई कोनी, गवैया भी है— मीरां, तुळसी अर कबीर रा मोकळा पद उणां नै याद है। म्हनै में दो एक्यां अर दो आठ्यां, इण तरै च्यार छुट्यां रासै। छुट्टी रै दिन सतसंग में जावै अर बठै मारजा री घणी आग हुवै। पण मारजा जिमा पढावण में हुसियार है, बिसा गावण मे कोनी, तो ई लोक मारजा कनै गवावै। जे नईं गवावै तो मारजा रीम कर लेवै— म्हे तो कोस भर रा चलाय'र आया, मे गिणा न माधी, दैयां गिणी न तावड़ो, ब्याव-गिणो न सावो, एवो गिणो न टांकड़ों, भूख गिणा न निस, मरणो गिणो न परणो, अर थे म्हारै कनै गवावो ई कोनी! बात था है कै मारजा रै गळै में ल्याग कोनी, अर पाम बाड़ना हुवै ज्यूं मारजा सतावै इंग कारण भिनख तो मगम्भगी मानर भलेईं मारजा कनै गवावो, सुणाया में भाव-भगती बेमी हुवै। बै भजन माथै

ध्यान देवै, कंठ मीठो हुवो चावै वाडो।

एक दिन मैं मारजा नै पूछ्यो– "क्यूं, ब्याव रो कांई जुगाड हुयो'क नईं ?" मारजा बोल्या– जोतस कूड़ो कोनी। आज सूं बीस बरसां पैली एक पिंडत म्हारी जलमपतरी देख'र कैयो कै ब्याव रो जोग तो तेवतरी में ई कोनी। बीं वगत तो मनै पिंडत री बाणी मूरखाई री लखायी, पण आज हूं देखूं हूं कै म्हारै बराबर कमावणिया समाज में इण्या-गिण्या मिनख है फेर भी म्हारो ब्याव हुवणो तो आघो रैयो आज तईं कोई मांगो तक को आयो नी। ईं सूं मालम पड़ै है कै जलमपतरी में जोग कोनी। अर जोग सूं परवार तो कोई करम हुवै कोनी।

मारजा रै सगपण नईं ढूकण रो कारण सायद उणां रो सनकी सभाव भी होणो सकै है। मारजा रो छोरां नै हुकम है कै जद मारजा मसाणां में न्यारै गयोड़ा हुवै तो छोरा भी बठै आवै। अर साचेई मसाणां रै पसवाड़ली बगेची में निरी वार मारजा रा छोरा हाका करता सुणीज्या करै।

मारजा रै भायां मारजा नै पाल दिया कै थे आ मूरखाई ना करो, पण मारजा मरजी रा राजा है, वै कैवै कै "जद टाबरां रा माईत नाक में सळ घालै कोनी, तो थे टोकण आळा कुण ?"

मसाणियां अचारजजी

इकोलड़ो डील, गरागरी कद, माथै में खासा धोळा केस, लांबो चोट, ठोडी माथै कोई-कोई केस, पण मूंछ्यां बडी-बडी, ऊमर पैंतीस-छत्तीस, लिलाड़ माथै बडी सारी टीकी, पैरण नै चोळो, धोती अर देसी पगरखी। बीकानेर रेलवाई दफतर में अचारजजी बाबू है। घर रो भार आपरै ई माथै है, इण कारण ई मुगाई में दोरो-सोरो काम चलावै। नाव है वल्लभदत्त।

गळी-गवाड़, पास-पडोस, में कठैई कोई मौत हुसी, तो लोक अचारजजी नै पक्कायत तेडो आसी। बेरो पड्यां पछै अचारजजी पुरस्योडी थाळी भी छोड दै अर पग में पगरखी घाल्यां बिना ई मुड़दै रै घर खानी भाजे। पण फेर भी आप अांट में बीस-पचीस रुपिया घालणा नईं भूलै, कारण, कदेई-कदेई मुड़दै खातर लकड़ां रो जुगाड़ भी आपनै आट सूं करणो पड़ै। जे लारला देवै तो आप लेलेवै, नईं देवै तो आप मांगै कोनी।

मुड़दै री सीढी कसण में आप बेजोड़ है। किसी

ल्हाम खातर कित्ता जाडा बांस लावणा, कित्ता भाघा गाता जचावणा, कित्ता भ्राटा लगावणा, इण विद्या रा भ्राप भ्रद्धा जाणकार है। जाणकार हुवै भ्रापेई– भ्रो इसो काम है जिकै नै साधारण लोक तो ऊभा-ऊभा देखता रैवै, भ्रर प्रचारजजी नैं भ्रो भूंडो काम महनैं मे भ्राठ-दस वार करणो पड़े। इण रो भ्रसर भ्रो हुवै कै कदेई भ्राप दफ्तर मोडा पूगै भ्रर कदेई भ्रापनै समूळी छुट्टी लेवणी पड़े। इण कारण भ्रारी छुट्टयां तो मुड्दा बाळण मे ई पूरी हुय जावै, व्याव-मादी खातर लेवण गारू नीठ निरावळ भ्रापरी छुट्टी उवरती हुसी। मसाणा मे तो भ्रापरा दरसण हुंवता ई रैवै, पण व्याव-सावै भ्रथवा दूजै एढै-टांकड़ै माथै भ्रापरी सूरत दीखै नईं, इण कारण लोका भ्रापरो नांव थरप राख्यो है– प्रचारजजी मसाणियां।

भ्ररथी बांधण रै सिवाय चिता बणावण में भी भ्रापरी खास हुसियारी देखणी में भ्रावै– किसै मुड्दै खातर, किसै रोग रै रोगी खातर कित्ता मण काठ लागसी, भ्राप मोळै भ्राना ठीक बता सकै है। पण कदेई-कदेई इसो भी मौको भ्रावै जद सांधियां रो टोटो हुवै। इण हालत मे प्रचारजजी रो निमळो ढांचो मुड्दा ढोवण री भी भ्रनोखी

खिमता देखाळै । मुड़दा ढोवण रै ग्रलावा ग्रापनै केई वार,
मसाणां सूं खासा ग्राघी टाल सूं, लक्कड़ भी ढोवणा पड़ै,
पण, फेर भी, मुड़दै खातर ग्राप वेटै रो व्याव छोड़दै, इसो
ग्रापरो नेम दीसै !

इसी निस्वारथ सेवा करण ग्राळां रो देस में धाप'र
तोड़ो है, इणी कारण ग्रापारी ग्राजादी सावळ पनपै
कोनी । जठै पइसो दीसै बठै, जुध्ध-खेत री ल्हासां माथै
गीधां दई, लोक मँडरावण लाग जावै । बीकानेर री
ग्रस्पताळ में रतनगढ रै एक सेठ रो मोटियार बेटो पूरो
हुयग्यो । प्रचारजजी नै समाचार पूग्या । ग्रस्पताळ ग्राया
नो देखै— मृतक री सोळै-सतरै बरसां री बैन विगै सूं
मायो पटकै, पण मुड़दै रै चलाणै सारू वीरै कनै पइसां रो
पळ नहीं, इण कारण गळै री घोलड़ी सोनै री सांकळ
काढ'र बी प्रचारजजी ग्रागै मेल दी । काठी छाती माळा
प्रचारजजी रा नैण भी भरीजग्या । छोरी रै माथै हाथ
फेरनै वां धारठ पाछी करदी, ग्रर मसाणो ग्राप री ग्रांट
सूं करग्यो । ग्रा बात न्यारी है कै छोरी रतनगढ जावती
प्रचारजजी रो ठिकाणो लेयगी, ग्रर वीं मणिग्राडर सूं
रुपिया भेजाय दिया, पण वै बदाम दूणां री ठौड़ केई दूणै

रै हात धौलड़ी सांकळ पड़ जांवती, तो फेर पाछी रसीद काढ'र कुण देंवतो ?

आ सेवा करतां अचारजजी नैं पन्द्रै-सोळै वरसां सूं बेसी हुयग्या हुवैला । अर अवार तक बाळयोड़ा मुड़दां री जे अै गिणती राखता, तो सायद ओ भी एक रिकार्ड कायम हुय जांवतो । पण अचारजजी नाव खातर, रिकार्ड खातर, सेवा को करैनी । मिनख है, इण कारण मानखै री सेवा करै ।

व्यासजी

कद सरासरी सूं मोछो, पण डील बंधेजदार। ऊमर पचावन सू आगै, साठां नेड़ी पूगगी, पण हाल, जे मूंछ्यां मूंडाय'र कैय दै कै टावर कंवारो है, तो ओपै। ब्याव तीन करया, पण व्यासजी रै भाग में लुगाई टिकण री जोग कोनी। अबार भी छड़ा है, तीनूं री तीनूं दगो देयगी।

व्यासजी जवानी में कळकत्तो कमायो, पण अबै, लारला बोळा बरसां सूं अठै ई एक छोटी-सी'क दुकान करै, अर टैम काटै। भगवान री दया सूं बेटा कमाऊ है अर पोता-पोत्यां सूं घर भरयो है।

व्यासजी भोर में बेगा उठै अर भोरा-भोर कबूतरां रै पींजरै पूगै। सगळै पीजरै नै बाळ्यां-बाळ्यां पाणी ऊंधाय'र कंचन री जात कर देवै, फूस-फरड़ो, टीच-टांच खूणैं-खचूणैं भी रैय नईं सकै। फेर आप बेमार कबूतरां तथा बचियां नै छोटै पीजरै मांय सूं बारै काढै अर छोटो पीजरो भी साफ करै। रोगी कबूतरां रै घावां माथै दवा-दारू रो.भी परबन्ध करै।

पींजरै री सफाई रै अलावा कबूतरां रै चुग्गै रो भी

ग्राप सोच राखै। दो-दो, च्यार-च्यार ग्राना मांग'र ग्राप दाणां खातर पइसा भेळा करै। परमारथ काज एक डबल खानर हात पसारण में भी ग्राप लाज नईं करै।

ग्राप ग्रापरै धड़ै रा सिरपंच है ग्रर पंचायती री वगैची रो सगळो काम ग्रापरै माथै ग्रोढ राख्यो है। एढै-मुकतै माथै चाहीजै जिका बरतण-भांडा गिण'र देवणा, फेर पाछा गिण'र लेवणा। कोई टूट-फूट नईं गयो हुवै ईंरी भी ग्राप निगै कर लेवै। न्यात रै जीमण-जूठण में ग्राप काम-काज सारू भी सगळा सू पैली पूगै इण कारण व्यासजी रै पूग्यां पैली खांड नईं गळै।

जीमण में कासा-भाणा भी ग्रापनै करणा पड़ै— जात-न्यात ग्रर कारू-कमीणां रा। ग्राप कारुवा रो गळो नईं रोमै, ग्रर उणां रा वाजब कासा करै।

खावण-पीवण रै काम में तो ग्रौर भी मोकळा लोक हात बंटाय लेवै पण ग्राप एक इसो भी काम सूंप राख्यो है जिण मे कुजकोई हात नईं घालै। ग्रर वो है– खफण फंड रो काम। इण फंड मे खफण, सिणिया, बांस, फूल्यां, मुगटा, नारेळ, खोपरा, छड़छड़ीलो, चन्नण, तुळछी ग्रादी ग्रन्तसमै में चाहीजै जिकी सगळी चीज्यां लाधै। पैली ग्रां चीज्यां खातर बजार में ग्रठीनै-वठीनै

दस ठौड़ टकरचां खावणी पड़ती अर दाग में अकारथ मोड़ो हुय जांवतो।

इण फंड रै कारण आप रात नै कठैई, बिना घरआळां नै कंये, बारै नईं निकळ सकै, ना निरवाळी नींद ई ले सकै कारण औ फंड कोई जात विसेस रो तो है नईं, कोई भी आय'र आप नै भर नींद मांय सूं जगाण'र ऊभाण सकै है।

इण फंड रै अलावा ममाणां में लकड़ां री बगेची री भार भी आपरै माथै है। पीपळ, खेजड़ रै इस्टाक रो ध्यान राखणो पड़ै।

स्यामजी री बोली ऊंतावळी है। जे कोई काम आप रै मन-भावतो नईं हुंवतो दीसै तो आप बठैई जोर-जोर सूं बकण लाग जावै, पण पेटै पाप कोनी। कोई हुवै जिकी होठै दरमाय देवै।

सवै देखणी आ है कै समाज री सेवा में रात-दिन एक करणियां स्यामजी मान'र समाज काईं करै। स्यामजी नै माण-सतकार री भूख कोनी। वै आ चावै कै वारी आंख्यां रै सामनै बारै सगळै काम नै संभाळणियो आगै आवै। हाल तो स्यामजी जवाना नै छेड़ै बैठावै है, पण वै उण्यां नै सोच है तो ओ ई है कै सारै सूं काम कुण

सँभाळसी ?

इण रै सिवाय व्यासजी रै एक सोच और है। मफत फंड रो काम तो दोरो-सोरो चाल ई सी, पण उणां नै सौ बरस पूग्यां पछै छोरा नै मोफत में कुण पढासी। घर रा लखपती कोनी, पण फेर भी विद्या रो दान मोफत देवै।

व्यासजी कनै जे थे चंदो मागण नै जासो तो पाधरो कैसी– देवण-दिरावण नै तो म्हारै कनै काईं है कोनी, पर सरीर सूं सेवा चावो, तो जित्ती बण सकै, वा करण नै हूं त्यार हूं।

परमातमा व्यासजी री जवानी समाज रै भाग सूं बणायी राखै !

इन्द्रा

सांवळो वरण, बडा-बडा नैण, नैणां मायं चम्क अर नैणां में अनोखी पवीतरता। पूरो कद, डील में हिस्ट-पुस्ट, चैरे माथै तेज– सन्त-महातमावां रै हुवै जिसो। लखपती री बेटी, मील-मालक री धण, बनीस-तेनीस ऊमर, नांव इन्द्रा।

घर में, सासरै अर पीरै, भोर में सगळां सूं पैली उठै। नौकर आपरै घर सूं आवै जित्तै उणां रो आधो काम इन्द्रा आपरी मरजी सूं कर देवै। बिछावणा उठाय'र बारी सावळ जेट चिणै। माचा ठौड़सर मेलै। कमरा भड़कावै। अेठा, बासी, बासण मांजै, राजी-राजी, हरखां-वती, जाणै इण काम में उणनै आणंद री प्रापती हुवै।

सासरै में देराण्यां जेठाण्यां, अर पीरै में बैनां-भोजायां जद बासी डील फिरत्यां हुवै, उण बगत तक में इन्द्रा बासी काम पछै न्हावा-धोवा कर'र पीरै में मां-बाप, अर सासरै में सासू-सुसरां री सेवा में हाजर हुय जावै। उणां रै खातर चाय-दूध रो परबन्ध करयां पछै ठाकुरजी री सेवा में बैठै। मा-बाप, सासू-सुसरां नै जींवता देवता

भंडै ग्राळो बाबो

मनै बांरी जवानी याद कोनी. ठेट सूं किड़कावर
। ई याद है । लिलाड़ वड़ो-सारो ग्रर माथै ऊपर धा
वण्योड़ी एक भारी-मारी वडी, ऊंची, ऊपर सूं सांक
ो जिण माथै भात-भात रै रंगा मे ग्रनेक देवी-देवता
नाव ग्रर चितर माड्योडा ।

कोट माथै मोकळा तुकमा लगायोडा जिकां में गं
ाई रुपियै रै मिवाय तोळियामर, कोडमदेमर भैरूंजी
ुरम तया रामदेवजी ग्रर बायाजी रा पगलिया हुव
ुवना मगळा चांदी रा ।

हात में एक वडो-सारो केसरिया-कसूमल
त्रिरं रो डंडो भी मोकळो वजनी हो ।

बाबै नै देखने ई छोरा-छोरी कंवना– "भंडै
वाबो ग्रावै, यो हो भंडै ग्राळो बाबो ग्रावै ।" मगळा
बाबै ने चाव मू देखना ।

गणगोर ग्रयवा बीजा मेळा में बाबो गोने रा
लगावता, घणी बडोड़ी टोपी पैरना ग्रर सांवै रं
भंडो धारण करता जिण मू मेळै मे मगळा नै
[illegible] मेळै में ग्राया है ।

कै बखाण में नईं आवै। वीरो एक पेटंट गीत है–

"स्वर की गति मैं क्या जानू,
एक भजन करना जानूं।"

पण सचाई आ है कै इन्द्रा सुर री गत अर भजन करणो, दोनूं काम मांतरी भांत जाणै। जद आ बीजै कंठा सूं भजन सुणै तो आपेई उणारा नैण मूंदीज जावै अर सुरता भगवान सू जुड़ जावै।

इन्द्रा लौड़ी है, आगली रो एक बेटो है जिकै नै गोदी री ऊमर सूं लेय'र अबार तईं इन्द्रा पाळ'र बडो करयो है। माईं मां री दुभात इन्द्रा रै नैड़ी ई अड़ी कोनी। आपरी बेटी सूं इण बेटै रो लाड सवायो राखै।

भंडे आळो बावो

मनै बांरी जवानी याद कोनी. ठेट सूं फिड़कावरी दाढ़ी ई याद है। लिलाड़ बडो-मारो अर माथै ऊपर धान री बण्योड़ी एक भारी-भारी बडी, ऊंची, ऊपर सूं सांकड़ी टोपी जिण माथै भांत-भांत रै रंगा में अनेक देवी-देवतावां रा नाव अर चितर मांड्योड़ा।

कोट माथै मोकळा तुकमा लगायोड़ा जिकां में गंगा-माई रपियै रै सिवाय तोळियागर, कोडमदेसर भैरूंजी री मूरत तथा रामदेवजी अर बाबाजी रा पगलिया हुंवता। हुंवता सगळा चांदी रा।

हाथ में एक बडो-मारो केसरिया-कसूमल झंडो, जिण रो डंडो भी मोकळो वजनी हो।

बावै नै देखतै ई लोग-लुगाई कैवता— ''भंडै आळो बावो आवै, ओ हो भंडै आळो बावो आवै।' सगळा टाबर बावै नै चाव सूं देखता।

गणगोर अथवा बीजा मेळा में बावो सोनै रा तुकमा लगावता, घणी बडोडी टोपी पैरता अर बावै वडै आळो झंडो धारण करता जिण सूं मेळै में सगळां नै मालम पड़ जावती कै बावो मेळै में आयो है।

ज्यूं-ज्यूं बावै री ग्रौस्था ढळती गयी, नवी टोपी हळकी घड़ीजती गयी, भंडो भी ग्रोछो हुंवतो गयो। ग्रौर तो ग्रौर, दाड़ी भी ग्रोछी हुंवती गयी।

बावै री भारी टोपी जे ग्राडो ग्रादमी ग्रोढ़ै, तो माथो वरणाट करण ढूक जावै, पण बावै नै वा हळवी फूल जिसी लागै— इत्ता वरसां रै ग्रभ्यास कारण।

गळी रा नागा छोरा बावै सूं घणा डरचा करता, कारण सूधा छोरां री भींड़ बोल'र बांडां छोरां नै बावो फटकार देंवता।

बावो खास-खास चौरस्ता माथै ऊभता, ग्रर जे स्रोता लाधता, तो जोर-जोर सूं, उपदेस री वातां सरू कर देंवता। बावै री बोली सुण्यां पछै तो घरां मांयला भी लोक निकळ-निकळ'र बारै ग्राय जांवता। ज्यूं-ज्यूं लोकां री तादाद वधती, बावै री बोली, सगळां नै सावळ सुणा-वण सारू, जोर पकड़ लेवती।

बावो जनैमरजी रै मिन्दर में रैया करता। मिन्दर री पूजा करता, रुखाळी राखता। बावै रै दिनां में मिन्दर मोकळो चमक्यो। मिनख-लुगायां रा गट मच्योड़ा रैवता। दिनूगै, सिंझ्या भजन-कीर्तन हुंवता। हुवै तो ग्रबै भी है, पण बावै री छिब बावै सागै गयी!

कामेरी

वैज्ञानिक विश्वेश्वरैया नैं जद पूछ्यो– "थे कित्ता घंटा काम करो ?" तो बोल्या– "चौईस घंटा, पूरा चौईस घंटा।" निस्चैई वां सोवरा री वगत भी चौईस रै मांय मामल करी है, कारण सोवणो भी एक काम है। पण इत्ती बात जरूर है कै उणां री नींद घणी ओछी हुवैली। नैपोलियन घोड़ै री पीठ माथै बैठ्यो एक मिन्ट खातर आख मीच लेंवतो, अर धीरै नीद री गरज पल जांवती। निद्राजीत होण रै कारण अर्जुन नैं भगवान कृष्ण "गुडाकेश" कैय'र सम्बोधन करयो। विश्वेश्वरैया दई कामेरी चौईस घंटां काम करै कोनी, बोनापार्ट दई एक मिन्ट री नीद सूं भी उण रो काम चालै कोनी, अर ना वीरै कनै अर्जुन जिसी नीद जीतण री कोई पदवी, पण कामेरी चौईस घंटां में कुल दो घंटा नीद लेवै, बाकी बाईस घंटां जागै अर काम करै– एकै ढाण !

अंधारै-अंधारै चीज-वसत रै काढै-मेलै में कामेरी नै ऊनाळै अर चौमासै में बिच्छू खाया करै। कामेरी पीड़ री पक्की है, तो ई दांत भींचतां-भींचतां उणरो रोज पाडोस्यां रै कानां तईं पूग जावै। महनै में एक-दो वार जैरी रो डंक लाग लागै, पण कामेरी नै दिवलै री चूंचकी रो हुक्म कोनी। कामेरी सासू आगली वऊ है।

आभै में लाली फट्यां पैली कामेरी आपरी गाय रो काम निवेड़ लै। बंधी रो दूध देय'र आवै, अर आवेई ऊंच-ऊंच'र पाणी रा घड़ा लावै। कामेरी मैनतण, अर पक्की पिणिहारी है।

वाणिया रै घरे बिलोवणो करै अर रसोई करै। घरे आंवती छाछ री तपेली भर'र लावै, अर रुजगार सूं घर रो काम चलावै। कामेरी कमावणी है।

सेठां रै घर मे सौ भांत रै मिनखां मांय कर निकळै, पण कदेई उणरै आचरण माथै छांटो नईं लाग्यो। कामेरी चरितवान है।

आपरै घरे कामेरी रसोई करै। सासू-सुसरां री चाकरी करै। उणा रा गाभा धोवै, अर वांनै पइसै भर घी सूं रोटी घालै। कामेरी धरम-परायण है।

दिन में मोल रा पापड़ वटै, धान-चून आछा करै

ड़ो-धणो टांको-टेभो करै। आवती-जावती, गळी सूं
वर मेळो करै। कामेरी कामेड़ी है।

सिझ्या फेर घरे रसोई, सेठां रै रसोई, अर गाय री
काम करै, फेर पापड़ां में लाग जावै। सूर्यां सूं पैली भी
लीमणो पीवै। बीच में तीन-च्यार बार, दस-दस मिन्ट
तातर उठै। चिड़ी रो जायो गळी में हुवै कोनी। अर वा
तीन-च्यार कड़ायां पोठा मेळा कर लेवै। कामेरी थेपड़्यां
रो विरावड़ो विण राख्यो है। वा थेपड्यां वेचै, अर
चाहीजै तो घर में बाळै। कामेरी खटणी है।

जद तीज-तिवार या होळी अथवा चौमासो हुवै तो
कामेरी जूना-जूना लोक-गीता री झड़ लगाय देवै। बीस
लुगायां में कामेरी रो कंठ साफ सुणीजै। कामेरी गीतारी
है।

साल में दो वार, होळी-दियाळी, बिना मजूर री
लायना, ऊंची-ऊंची स्याया, निसरण्यां रोप'र कामेरी
सिजनै गू पोत'र घर नै दई री जान करदे। कामेरी
पोतारी है।

कामेरी नै हाल में कलम झालणी को आवैनी, पण
एड़ै टाकड़ै हाता में सेंधी रा मोर इसा मोवणा मांडै, जाणै
मोरिया मूंडै बोलसी। कामेरी मनारी है।

रात-दिन धंधं में जूत्योड़ी होणं पर भी आड़ोस-पाड़ोस री लुगायां नै काम सातर नटण सार जाणं कोनी। कामेरी भिळताऊ है ।

मामूली ताव-तप री कामेरी रै काम मार्थ असर नईं पड़ै, अर लूठी बेमारी कामेरी सूं डरै । कामेरी निरोगी है।

कामेरी सासू-सुसरै अर धणी री पेट पाळै, पण उणांरी जीभ मार्थ कामेरी री बडाई में एक सबद पण आवै नईं । जे कोई पाड़ोसण कामेरी री बडाई करदै तो भी सासू-सुसरा नै बरदास नईं । बै टोकै– "म्हांरै टाबर नै बिगाड़ो ना ।" इत्तो ई नईं, घर आळा कामेरी सूं लड़ै जिका पाखती मे– "काईं करां तूं कामेड़ी है तो ? घर में आय'र धबेपो कित्तो'क करघो ?" कामेरी चुपचाप सुण लेवै । कामेरी अप्रसूत है ।

मां-सा

आडै वाणियै रै घरै जलम लियो, पण जलमपतरी में जोग घणो ऊंचो होण रै कारण सासरो किरोड़पती सेठ रै घरै हुयग्यो। रंग गऊं वरणो हो, पण सेठ कैयो म्हारै फूटरी सू मतलब कोनी, आ जिण कुळ में जासी वीरी घणी विरधी हुवैली। साचेई, सेठ रै कुळ में इणां री कूख सूं बेटा-बेट्या, अर फेर पोता-पोत्या, दोईता-दोईत्यां सूं घर भरीजग्यो अर लोक इणां नै मां-सा, मां-सा कैवण लागग्या।

गरीव बाप रै घरां जलम्यां कारण मां-सा नै गरीवी रै दुख रो पूरो अनुभव है, अर इणी कारण आप दुखी रै दुख सूं पसीजै। जाचक री रुपियै-पइसै, गाभै-लत्तै, धान-चून सूं सायता करै। अड़फवाऊ मांग पेस करणिया भलेईं खाली आवो, और तो सगळा आधी-पड़धी आस पूरीज्योड़ा पाछा फिरै। जागा-जागा लगायोड़ो पइसो आपरी दानी पिरकरती री साख भरै।

घर में नोकर-चाकर बेमेघा है, पण मां-सा नै घड़ी एक आराम करण नै बेठा नईं लाधै मोकळै परवार में

कोई मांदो है, कोई जारे में है, कोई पैलड़ी ग्रम्यानरण मां है, कोई परदेस सूं ग्रायोड़ो है, कोई परदेस जावरण ग्राळो है, कोई ग्रसपताळ में भरती है, पण इसो कोई नई जिए री साळ-संभाळ मां-सा नित हमेस नई लेवै। ग्रापरै हात सूं पाटा-पोळी ; जापायत रै सीरो, वईर हुवण ग्राळां रै मीठो-चूठो, ग्रापरै हात सूं करै, ग्रथवा ग्रांख्यां सामनै त्यार करावै।

धोबी ग्रासी तो कपड़ां रो हैंसाब ग्रापनै देखरणो पड़ै, जड़ियो ग्रावै तो हीरा-पन्ना काढ'र देवणा पड़ै, ग्रांख्यां रै ग्रागै जड़ाई करावै, सोनार नै सोनो तोल'र देवै, दरजी नै गाभा काढ'र देवै। ग्रै सगळा काम एकै सागै हुंवता रैवै, मा-सा री निजर हेटै, कोई ग्रा हीमत नई करै कै थोड़ो गोटाळो करू, कारण मां-सा री ग्रांख्यां में लूरण घालरणो मैज कोनी। पण जे कदास कोई लूरण घालण री चेस्टा करसी, ग्रर बीरी मा सा नै मालम पड़ जासी तो भी बीनै माफ कर देसी। इण कारण मां सा रै घर में नोकर तथा काम करणिया बेगा बदळीजै कोनी। सागी मिनख-लुगायां टिक'र काम करै।

तड़कै सू लेय'र रात तक इण तरै मां-सा काम में हूब्योड़ा रैवै। गगनी गूं परवार किरत रै कारण थकावट

य जावै अर आपनै बैठे-बैठे थोड़ी भपकी आय जावै,
ड मूंडो लालर सूं ढक्योड़ो रैवै इण कारण कनै बैठे जिकां
भट मालम नईं पड़ै।

जे थकावट मेटण सारू आप मिन्ट-दो मिन्ट आडा
वै अर उण बगत मिलण सारू कोई साधारण मिनख
ाई आय जावै, तो पसवाड़ै बैठे जिका आयोड़े नै पाछो
ाडण खातर कैय देवै— "अबार आराम करै, आंख
ाग्योड़ी है, फेर आया।" पण मां सा रै कानां में अै
ब्द पड़तां पाण भट बैठा हुवै— अै तो चलाय'र आया,
र हूं मिलूं नईं, आ कियां हुवै ?

बामणां अर साधू-सन्ता रो आप पूरो भाव राखै।
परवां माथै उणां रा चरण धोय नै सरधा सूं भोजन
करावै, एकै पग रै ताण ऊभ'र। तिलक काढै, दिखणा
देवै, हुळस'र बांरो कुसळ-मंगळ पूछै।

मां-सा सूं दुसमणी राखण आळो तो कोई धरती
माथै नीठ लाधे, पण तारीफ आ है कै बीनै भी मां-सा
आपरो दुसमी नईं समझै। धरती माथै मां-सा रै केई सूं
बैर भाव है ई कोनी। मां-सा री बोली में इमरत है।
बडो हुवो या छोटो, सगळां सूं नरमी अर मिठास सूं बात
करसी। रीस तो आपरी ऊमर में सायद ई कदेई मां-सा

नै आयी हुवैली।

आपरो नित-नेम, पाठ-पूजा तो सदेई करै ई है, पण जे भजन सुणन रो संजोग बण जावै तो आप घर रा सगळा काम छोड देवै, इत्तो आपनै भजनां सूं प्रेम है।

इत्तै काम-धंधै रै बावजूद धार्मिक-ग्रन्थ देखण सारू भी वगत काढ लेवै। भगवान री दया सूं चेतो घणो जबरो है— एक बार बांच्योड़ी बात पत्थर मायली लीक हुयगी। इण कारण जद कदेई सतसंग री चरचा चालै तो आप गूढ सूं गूढ बातां सरळता सूं कैय जावै।

आं ग्रन्थां रै पढण सूं आपरो आतम-ग्यान भी विस्तार पायग्यो। गिरस्ती में रैय'र भी आप मोह बंधण में बंध्योड़ा हुवै जिसी बात कोनी। करम करणो चाहीजै फगत इणी वास्तै आप करम करै। करम थांरै अधीन है थें करमां रै अधीन कोनी।

जँवारोजी

"राम राम सा।"

"वाई राम राम सा, कोई टावर ढूकावोनी उस्तादां।" वारोजी बोल्या।

"टावर ?" मैं अचूवें सूं पूछ्यो– "आपरी वाई नर या भाये गानर ?" जवारोजी बोल्या– "थांनै ठा गेनी, म्हारी लुगाई चलगी नी।" मैं माफी मांगी अर दनळापण करी। जंवारोजी बोल्या– "मरी नै अढाई-तीन महना हुयग्या। थारं तो घणा लोकां सूं मेळ है; थांरी पहचान हिन जावै तो गरीबां रो भलो हुजावै।" मै पूछ्यो– "आपरी ऊमर कित्ती है ?" वै बोल्या– "थावळ तो याद कोनी, पण पैंताळीस तो हुवैली। थे घर रा हो। थांरै सामनै कूड बंयां काई फायदो। भाप माळै नै तो हुवै जिमी बात बंच देवणी चाहीजै। दूजां नै तो हूं म्हारी ऊमर बत्तीस-तेतीस सूं वेगी बताऊं कोनी। लोक तो कंवै– 'थे बत्तीस-तेतीस रा दीखो ई कोनी, तीसां रै मांय हुवै ज्यूं लागो।' पण इत्ती पोल चिरावणी भी ठीक कोनी।

इसी बात करी पर जंवारोजी पांती में पजूग्या

मै पूछ्यो– "धांसी कद सूं आवण लागगी ?" वै बोल्या– "आज पैलड़ी वार ई आयी है, और तो कदेई खूं-खूं करण रो ई काम कोनी ।"

हूं बोल्यो– सरू हुंवते ई आ इत्ती जोरदार हुयी है, जद थांनै खांसी सूं खतरो है, झटपट केई वैद-डाक्टर नै देखाळो, नईं तो धांसी पाजी बेमारी हुवै । कैवत में कैवै है नी–

कळै रो मूळ, हांसी,
रोग रो मूळ धांसी ।

जंवारोजी बोल्या– "घबरावण री कोई बात कोनी, इयां तो मनै आठ-दस बरसां सूं आवै, पण म्हारो आ बिगाड़ कांईं को सकैनी ।"

"पण जद धांसी आवै तो थांरी पांसळयां सगळी फूल जावै, आंख्यां निकळ'र बारै पड़ण लाग जावै, अंर थे कैवो बिगाड़ कांईं को सकैनी ?"

"हां, जे बिगाड़ती तो आज थांनै बातां करण सातर जंवारो लाघतो कोनी । कदेई बीरी सीढ़ी निकळ आंवती । आ तो पळ्योड़ी धांसी है, जंगळी कोनी ।"

मै पूछ्यो– "काम-धन्धा कांईं हुवै है आजकाल ?"

'काम-धंधे रो आपांनै करणो कांईं है । दाळ-रोटी

लिये वो त्यार खड़ो है। माईतां रै दूधां भरी तळाया हुवो। घणो ई छोडग्या है बापड़ा। म्हारी ऊमर में तो, जे ऊभो हुय'र खाऊं तो ई, खूटै कोनी। अर ना कोई लारै आवै जिकी रै कोई कमी रेवै। आसी जिकी राजस करसी। एक लाख रोकडी बंक में जमा है, भलेई कोई पास बुक देख सकै है।"

मैं पूछ्यो– "वो घर वेच्या पछै दूजो किसी जागा चिणायो है ?"

"अआर हूं चिणाऊं कोनी। घर चिणासू ब्याव हुया पछै। जे चिणायलूं, अर आवै जिकी रै दाय नईं आवै, तो फेर मुवैं घर में तोड़फोड़ करावो। इसो अलड़ो गुड़ भीत्यां रै लगावण नै म्हारै कनै कोनी। जरूरत मार्थ तो एक री जागा पांच लगावण में भी जीव दूखै कोनी, पण फालतू एक कौडी मनै बरदास कोनी।"

"जे ब्याव रो विचार है तो थोड़ो डौळियो सावळ वणावो। मार्थ री जट उतरावो, दाड़ी रो घास बढावो, मिनखाचारै रा गाभा पैरो, पगरखी पळटो। पगां मे ब्याऊ फाट्योड़ी देख'र ई सामलै रो मन फाट जावै।" मे कंयो।

"पइसा कठै सूं लाऊं ?" जंवारोजी बोल्या।

"एक लाख रो पछै कांई अचार घालसो ?"

"सारा मांय सूं एक पाई ई छेड़ूं कोनी। वा रकम तो आसी जिकी नै पूरी री पूरी सूंपणी है।"

"मिनखाचारै तो थे एक लाख रै ब्याज सूं ई रैय सको हो। बंक रै ब्याज सू ई दो अढाई हजार री माल पड़ती हुवैली।"

जंवारोजी बोल्या– थे ब्याज री बात छोडो। घणो आसी तो सोरा म्हे रैसां, थारै तई पांती आवै कोनी, जे थोड़ो आसी, तो दोरा म्हे रैसां, थानै फोड़ा घालां कोनी। थे तो असली बात माथै आवो, टाबर बतावो, टाबर।"

हूं बोल्यो– "मिनखां खातर तो टाबरां रा घाटा कोनी, अर जिनावरा नै आपरो टाबर देवै, इसो हियै रो फूट्यो, आंख्यां रो आधो कोई विरळो ई माईत हुसी।" म्हारो वाक्य पूरो हुया सू पैली ई जंवारोजी मनै छोडग्या। म्हारै कठोर बोला माथै मनै मोकळो पसतावो हुयो, पण तरकस सू नीसरयोड़ो तीर सायद पाछो आय जावै, मूंढै सूं निकळयोड़ा वायक पाछै बावड़ै कोनी।

लारलै महनै हूं दूध लेवण नै गयो तो देख्यो– जंवारैजी रै घर आगै तप्पड़ बिछायोड़ो, ऊपर पाल ताण्योड़ो अर एक पिंडतजी कथा बांचता हा– सायद . . . . । बैठक माथै हाल तईं पिंडतजी रै सिवाय

र कोई नई हो। में पिडतजी सूं जंवारंजी रै व्याव
वत म्हारै सूं हुयोड़ी बात री चरचा करी। पिडतजी
या– अरे भाई, जंवारो बडो मजाकी जीव हो। कीरी
लुगाई मरगी, अर कुण दूसर व्याव करै ? जंवारो तो
ती बेळा तई अखन कंवारो हो। जवानी में मांगा भी
या हा, पण वो तो आ ई कंवतो–

जंवारो रैसी कंवारो।

लाधू

फूटरो-फरों, मातो-ताजो, गोरो निचोर, मोट्यार जवान, जे माछा कपडा पैरायां हुवै, तो लाधू राजा रो कंवर हुवै जिसो दीसै, पण कुण कपड़ा पैरै, अर कींरी बात ! एक वार कमीज गळै में घाल्यां पछै धोवण सारू भी वारै काढै कुण ? मिनान रो तो नांव ई ना लो । जद मैल री थर सूं गळ'र, अर पैरीजने-पैरीजते पमीज'र सांघा कनै सूं कट'र कमीज हेटो पड़ जावै, साथै ई धोती फाट-फूट'र बाघां मांय कर नागो दीसण लाग जावै, तद लाधू रा गाभा बदळीजै । न्हावै, संवार करावै, पट्टा छंटावै, नवो घडो पैरै, नवी धोती पैरै, नवी पगरखी पैरै ।

लाधू पाच माग री हवेली रो एकलो मालक है, पन मोडै गळी में है— ऊनाळै में पाणी री टूटयां रै दरदंड री टंडी जागा में, अर सियाळै गळी में सिगड़पोड़ै पाटै हेटै, पटै गळी रा कुत्ता कूदाळी मार'र लाधू रै मट'र साफी रात गरमास पुगावै । घर में लाधू प्यार-दव महनां सूं एकर नीट बड़ती हुसी । घर में मन किया लागै, पण तो

पर टावरां नै लेय'र पीरै रैवण लागगी। अबै घर में
ड़ां सूणो दळदर जम्योड़ो है, धूड़-फूस, कबूतरा-चिड़ियां
री टीच्या, मरयोड़े कबूतरां अर चिड़िया री पांख्या अर
गैर घणी-सूगली चीज्यां। इण कारण लाधू बारणो
ढोल'र झट पाछो जड़ देवै, अर गळी नै ई आप रो घर
मान राख्यो है।

पण गळी मे रैवण रो स्रो मतळब कोनी कै वो भूख
काढ़तो हुवै अथवा माग'र खावतो हुवै। जिकी भी दुकान
माथै जाय'र ऊभसी, बठै ईंनै मू-माग्यो सौदो उधार मिल
जासी। पइमां खातर कोई भी दुकानदार ऊंतावळ नईं करै
कारण लाधू रा बाप सेठ हरचरणजी मरता लाखूं रुपिया
रोकड़ी छोड़ग्या। बै लाधू रै सुसरै रै कबजै मे है। लाधू
सुसरै सूं रीसाणो है, पण तोई सुसरो साल मे एक बार
लाधू नैं ब्याज री रकम मांय सूं आधी आपरी बेटी खातर
राख'र आधी रकम भेजै है। लाधू रै हात में रकम आंवते
पाण सगळा दुकानदारां नै मालमू पड़ जावै, अर लाधू
सगळां रो, पइसै-पइसै रो हैंसाब कर देवै। तारीफ आ कै
लाधू नै साल भर रो सगळां रो हैंसाब बराबर मूंढै याद
रैवै।

उधार चूकायां पछै ई आप नवा गाभा भर नवी

पगरखी पैरें । पगरखी पैरयां सूं पैली, आगली जूती फाटण रैं कारण, लाधू रो पग उभगणो रैयोड़ो हुवैं, अर अबैं पगरखी पैर'र लाधू आपरा गर्दई रा थहूर काढें। मन में पगरखी थोड़ी लागैं, फेर फाला उपड़ें अर फूटैं, पछैं पग फलफलीज जावें जद लाधू पगरखी री एड़ी मरोड़'र मरदानी सूं जिनानी बणाय नाखैं अर खोड़ांवतो-खोड़ांवतो चालैं। इसी पगरखी किना'क दिन हालैं ? इण कारण लाधू साल में घणा-सा'क महना उभगणो ई फिरैं।

आगला टाबर हाता माय सूं मूस्यां पछैं, "लाध्यो, लाध्यो" कर'र नीठ लाधू बडो हुयो, अर मेठजी री आस पूरीजी कै म्हारो काम संभाळ लेसी। काम संभाळण री माईत तो मन मे ई लेयग्या। हां, माईता मरयां पछैं थोड़ा वरसां तईं, जद लाधू बीनणी समेत घर में रैवतो हो, मास्टर घरे बुलाय'र पढण री भी चेस्टा करी। पण विद्या रो जोग लाधू रैं करमां में पूरो नईं हो, इणी कारण जद मास्टर पढावण नैं जांवतो तो लाधू रैं अड़चण पड़ जांवती। जद दानखानैं मैं सूत्यो हुंवतो तो बीनणी कनैं सूं कैवाय देंवतो– "मास्टर साब ! अबार तो आप सूत्या है, काल आया।" कदेई जद मास्टर घरे जांवतो तो लाधू घर में मां रै जायें जिसो हुंवतो। जद बारणैं री खड़को

गुणीजनो, नो घर में केई भोतड़ी अथवा थभलियै लारै लुकयोड़ो, मूढो काढ'र कैंवतो– मास्टरजी आज तो छुट्टी राखो। छुट्टी रास्यां भी जद मास्टरजी रा पइसा पक्का, तो फिर पछै मास्टरजी नैं कांई चाहीजै। खैर। हाल भी लाधू एक इसो मास्टर जोवै है जिको वीनैं हिसाब-किताब में इत्तो हुसियार करदै कै आपरै बापरी रकम री पाई-पाई वो सुसरै री नास्यां मांय कर कढवाय लै।

लाल बावो

"पवनसुत हड़मान री जै" इयां जै बोल'र लाल-बावो पवन-वेग सूं, एक ठौड़ सूं दूजी ठौड़ मार्थ जाय ऊभतो। गाभा सगळा लाल– डील रो कुड़तो लाल, जिको लाल बिरजस में घाल्योड़ो हुंवतो। मार्थ ऊपर मोर मुगट, लारलै पासी हड़मानजी दईं पूंछ रो बणाव। असवाड़ै-पसवाड़ै दो बडी-बडी, भारी-भारी टोकरयां, जिकी बावै री चाल सार्थ टणण-टणण बाजती।

म्हे टाबर थका तो बावै नै साचेई हड़मानजी जाणता ई हा, पण बूढा-ठाडा भी बावैजी नै हड़मानजी रै समान आग'र हात जोड'र सनमान करता। बावै रै हात मे आधो कमण्डळ आटै खातर हुंवतो जिण में छोटा-मोटा सै आपेई बिना मागे आय'र आटो घालता। कमण्डळ भरीजतां ताळ नईं लागती अर आटो भोळी मे ऊंधाय'र बावो फेर फदाक मार'र उड जावतो। इण तरै बावो एक दिन मे किनो आटो भेळो करतो, आ तो ठा नईं, पण फेर भी एक दिन रो अन्दाजो मण सूं घाट तो कोनी।

अबार सूं थोड़ा बरसां पैली फेर बावै नै देख्यो।

बावै रै सरीर में लारली सगती कोनी, लोकां रै मनां में लारली भगती कोनी। अबै बणाव तो सागी है, पण मूरतणियै दई खण-खण चाल सूं बावो नीठ मारग मापै। बिना मांग्यां घालणियां अबै रैया कोनी अथवा जे पैली माळा कायम है, तो ई समै सायै स्याणा हुयग्या। अबै बावो बापड़ो मांगै है, तो ई पेट लिवाड़ी नीठ हुवै।

जद बावो जवानी में इत्तो आटो भेळो करतो हो, बा दिनां भी बावैरी लुगाई बावै नै लकड़ी सू कुटचा करती ही, पोठा चुगांवती, थेपड़चा थपवांवती अर पाणी मंगवांवती। अबै बावै रा हलण थकग्या। बा करकस्या जे हाल जीवै है तो राम जाणै लाई बावै री कांई दगा करती हुवैली।

भोपीजी

पांगळां नैं पग देवैं, मूलां नैं हात, आंधां नैं आंख्यां, बेकारां नैं नोकरी देवैं, कंवारां रो ब्याव करावैं, बांजड़यां नैं बेटा देवैं, रोग्यां नैं निरोगा करैं, कचेड़ी रा मुकदमा जीतावैं, गम्योड़ी चीज्यां लधावैं, इम्त्यान में पास करावैं, मन रो सगळो सोच मेटैं, अर सकळ मनो-कामना सिद्ध करैं– हरखू दादी !

दादी एक छोटै गांवड़ियै में रैवै अर बठै भी उण रा भगत पूगै । पण पूजा गुण री हुवै, नईं तो थांन्हां नैं तो कुत्तोजी ई पूछै कोनी । गांवड़ियै रै जंगळ में भी दादी मंगळ कर राख्यो है । दिन ऊगै जिकी बगत सूं, दिन आथवैं इतै तईं आवण-जावण आळां रो तांतो बंध्योड़ो रैवै । जे हजारू नईं, तो सैंकड़ू रोजीनैं पक्कायत आवैं अर लाभ उठावै । आप सोचता हुसो कै आवै जिका एकला लाभ उठावै । नईं, बै किसा दादी कनै खाली हातां थोड़ा ई आवैं । तो कांई लावैं ? ओ कोई लागमो कोनी; सरधा सारू– "पत्रं, पुष्पं, फलं, तोयम् ।" पण कोई साचेई पत्तां अर पाणी सूं काम थोड़ोई चालै । दादी कनै लाभ री आस

लेय'र आसी जिका दादी नैं राजी तो करसी-क ? नईं, दादी नैं तो राजी करण री जरूरत ई कोनी। बा तो आयोड़ी चीज छींपै ई कोनी– असवाड़ला-पसवाड़ला हाजरिया आयोड़ी चीज-वसत सांभै।

आपरै सायद आ मानणी मे नईं आयी हुवै कै दादी सकळ मनोकामना सिद्ध करै। आ सगनी तो केई देवी-देवता में ई होणी सकै है। तो काई दादी कोई देवी है ? नईं, आपां रै दई हाड-मास रो डील है, औस्था आपांसूं खासा बेसी आयोड़ी है। मनै ठा नईं आप कित्ता वरसां रा हो, पण दादी रै ऊपर कर अस्सी ऊनाळा सू घाट को निरळ्यानी। तो भी आ बात जरूरी कोनी कै अस्सी वरस आयां सूं इण तरै री अनोखी सगनी आय जांवती हुवै, कारण घणाई लोग इसा देख्या है जिका इत्ती औस्था लेय'र भी आडै मिनखां जिसा रैया। हां, एक बात और, दादी में आ सिद्धी कोई आज ई आयी हुवै, आ बात भी कोनी। इण तरै लोगां री भलाई करते पूरा तीस वरस हुयग्या।

दादी विधवा तो ठा नईं, कित्ता बरसां पैली हुयी ही, पण म्हैं तो समझ पकड़'र दादी रै केसरिया-कसूमल अर हाती दांत रो चूड़ो पैरयोड़ा ई देख्या, अर थोड़ा

पैली तई दादी नैं सुवागण ई जाणतो। पण दादी नैं बायां घिरियाणी रो हुकम हो जिण सूं बै रांडो वेस नईं राखता। बायांजी रो ई दादी रै इस्ट हो, अर इण रै परताप सूं ई बा सगळां रा कारज सारती।

दिनूगैं-सिंझ्या, दोनूं टैम दादी बायांजी रै धूप खेंवती। मिन्दर रै आगलै चौक में नर-नारयां रा गट मच जांवता– सगळा आसामुखी। पन्द्रै-बीस मिन्ट तईं खूब धूमधाम सूं आरती हुंवती, आरती पूरी हुंवते ई– बायां घिरियाणी री जै– बोलीजती, अर बस, बायां री छेंयां दादी में बड़ जावती। अस्सी बरसां री डोकरी, जिण सूं लकड़ी रै सायैरै बिना एक पांवडो ई नईं धरीजतो, अबै छोटै टाबर दईं उछळण लाग जांवती।

दादी अबै परचो देवणो सरू करती। नमूनैं खातर–
एक लुगाई– खमा, धणी खम्मा !
दादी– थारै बेटै नैं ताव आवै है नी ए ?
सागण लुगाई– खमा, आवै, कस्ट काटो धण्यां रै।
दादी– ताव आंवते तीन महना हुयग्या ?

लुगाई रो गळो गळगळो हुयग्यो। मन में सोच्यो– अठै तईं ठा पड़गी, जद अबै आछो करणो कांई बडी बात है। बोली– "हुकम घिरियाण्यां, अबै तो आछो करो।

खमा !"

"तै बायां री फेरी देवणी क्यूं छोडदी ए ?"

"खमा, हूं काल सू सरू कर देसूं ।"

"सवा महनें तईं फेरी दे, रोजीनै सवा सेर गऊं भर पाव भर घी चढाया कर, थारो संकट मेटसां ए ।"

बूढो-सो'क एक आदमी हात जोड'र– "खमा धिरियाण्यां ।"

"अरे थारी कोई जिनस गमगी रे ?"

"खमा धिरियाण्या ।"

"सांकळ गमगी, सोनै री ?"

"खमा" कैय'र आदमी रा रूं खड़ा हुयग्या । डोकरै डंडोत करी, अर जमीं माथै नाक टेक दियो ।

दादी– "अरे तनै विधवा लुगाई माथै वैम है ? थारै डावै-पासी घर है ? गऊं भरणो रंग है ?"

डोकरै रै मन री बात मिलगी ।

दादी– " अरे जा थारी सांकळ लाध जासी, तूं बायां रो चूंतरो पक्को चिणाय दिये रे !"

आदमी– "हुकम, धण्यां रो ।"

सांकळ लाधगी, अर दूजै दिन चूंतरो चिणीजणो सरू हुयग्यो ।

इण तरै आठ-दस जणां नै दादी रोज परचो देवती जिण मांय सूं छव-सात तो पक्कायत साचा हुंवता। जिणां रा कारज सरता, वे तो दादी रै नेम सू आंवता ई, पण और भी कितांई जणा नै घेर'र लांवता, इण तरै दादी रै अठै सागीड़ो मेळो मंड्योड़ो रैवतो।

थे जे पूछो तो हूं दादी रो पक्को ठिकाणो भी बताय दूं, कोई बात पूछणी हुवै तो, पण अबै उणां रो ठिकाणो मालम करणो है फालतू, कारण बूढा माजी तो सात-आठ महनां पैलो बापजी री जोत में जोत मिलाय दी। अबै वणा री विधवा बेटी मिन्दर में धूप देवै है, पण वींसूं कामड़ो पार पड़णो मुसकल है।

आज भी हरगू दादी रै मरयां री ठा नईं होण रै कारण आपै-आपै सू जातरी आवै, पण जद ठा पड़ै कै बापजी जोत में समायग्या, तद निरास हुय'र पाछा परे जावै।

भरपताळ जावण दो, पी. एम. भो तो जीवै है।" इण तरै हाका करयां सूं भरपताळ रो डिसीप्लिन बिगड़ै इण कारण डाक्टर लोग काळू रै भरपताळ पूगतै ई कैवै जित्ता दिनां रो साटीफिगट भारया मीत'र देय देवै।

कारखानै सूं छुट्टी मार्थे, घरे भ्राय'र पाटा-पोळी खोलै, भर काळू घर रा सगळा काम करै, कसरत करै, कुस्त्यां लड़ै भर मोज करै। दिपटी मार्थे चोट लाग्यां सूं पइसा तो घरे बैठ्यां मिल ई जावै।

एक दिन म्हारै एक साथी रै घरे काळू भ्राय'र बोल्यो– "पांच रुपिया चाहीजै। म्हारी मां जलम भ्राठ्यां रो एकत करसी। डोकरी भ्रबै कित्ता'क दिनां री? जे परबन्ध नईं हुयो, तो मन में कांईं जाणसी?" साथी बोल्यो– "हाल तो भ्राठ्यां भ्राडा दस दिन पड़्या है।"

"दस तो पड़्या है, पण कोई ऊभा लक्कड़ां बेज थोडा ई घलै है।"

"ठीक है, तू फेर भ्राए।" कैय'र बीनै काढ दियो।

काळू साथी रै घर री फेरी सरू करदी, साथी पांच रुपिया देय'र लारो छोडायो।

एक दिन पाड़ोस में एक माजी कनै कूकतो गयो– माजी, काकोजी (बाप) मरग्या, भ्राज चौथो दिन है, भार

सगळो म्हारै माथै है । वारै दिन हुयां पछै तो हूं कारखानै मूं वढाय'र रुपिया देय देमूं । घणा रुपिया तो चाहीजै ई कोनी । च्यार सौ रुपियां में काम निकळ जासी । मेघजी कैवै– "भलेई हजार रुपिया लेजा, पण ब्याज दो पइसा रुपियो लागसी ।' इत्तो तीखो ब्याज आपा सू देईजै कोनी। कोई चोरा बौवार तो है ई कोनी । रुपियै सईकड़ै ब्याज में फरक नईं पड़ सकै । च्यार सौ रा च्यार रुपिया ब्याज हूं धामूत्र देवण नै त्यार हूं, पूरै सापतै मइनै रो ब्याज ।"

माजी री तिजूरी रै तीन ताळा हा । उणा कनै सूं बिना अडाणगत कोई रुपियो नईं निकळवा सकतो । पण काळू बिच-बिच मे घाम्या घाली कर'र इसी गरीबी देखाळी कै डोकरी च्यार रुपिया मांय मेल'र च्यार सौ काढ'र देय दिया ।

काळू रै बाप रै तेरवे दिन माजी बीरै घरै पूग्या । काळू नै तो बै सावळ जाणता, कारण मिन्दरां में जागणां में भजन गांवतो देख्योड़ो हो अर सेंधो हुयोड़ो हो, पण उण रै बाप नै कदेई देखण रो मौको नईं पड्यो । जद काळू रो बारणो भाग्यो, तो मांय सूं एक जणै माथ'र धाड़ो खोल्यो । माजी बोल्या– "काळू कठै ?"

"बारै गयोड़ो है ।"

"थे कांई लागो हो वीरै ?"

"हूं कांई को लागूनी ।"

"म्हारै कनै काळू च्यार सौ रुपिया उधार लेयग्यो कै म्हारो बाप मरग्यो, अर बाप रै बारै दिनां पछै पूगता कर देसू । आज बाप रो तेरवों दिन हुयग्यो ।"

"बाप रो तेरवों दिन हुयग्यो ? बाप तो हूं सामो ऊभो हूं, जीवतो-जागतो ।"

"थे काळू रा बाप हो, थां तो कैयो नी 'हूं कांई को लागूं नी ।"

"हां, म्हारै वींसूं बोलचाल कोनी ।" माजी माथै रै हात दियां आपरै घरे गया ।

चकमो देवण मे काळू आपरै अफसरां सूं भी चूकै नईं । एक दिन साब रै बंगलै जाय'र रोयो– "म्हारै तो बापूजी रो सरीर बरतीजग्यो, काठ-खफण रो ई सराजाम कोनी ।"

साब नै काळू री गत मालम ही– बोल्यो "साब रो म्हारै सागै मोटर मे बैठजा, हूं चाल'र लकड़ा नंखायदूं ।" काळू कैयो– "मनै तो सात पचास रुपिया रोकड़ी देवण री किरपा करदो, सायै हात्यां सूं तो हूं जात-बिरादरी मे ...सूं ।"

साव पूछ्यो– मनैं आ बताव कै थारो बाप कितवें
रै मरयो है ? क्यूं बापड़ै डोकरै रै बाय डांग'र लारै
ग्यो है ? जीवण दै कनी दो दिन ?"

काळू देख्यो– साव लड़ग्यो। बोल्यो– अद्धा
कलीफ माफ करया, और कठेई कोसीस करसूं।

एक दिन काळू म्हारै घरे आयग्यो– "अबार रा
वार बीस रुपिया चाहीजै।" जाणैं कोई म्हारै माथै
मांगतो हुवै ज्यूं। हूं पैली काळू रा कारनामा सुण चूक्यो
हो, इण कारण म्हारै सभाव सू परवार मैं कैयो– "काळू !
भलेईं रीस कर, चावै रोसो कर, हूं तो साची-साची बात
कैसूं– देख, जे तूं सऊकार हुंवतो, तो तनै थारो घर
छोड़'र बीस रुपिया खातर म्हारै घर तईं एक कोस री
मजल करण री जरूरत नईं पड़नी चाहीजती ही, अर जे
तूं कंवै– हूं चोर हूं– तो चोर नैं देवण नैं म्हारै कनै
रुपिया कोनी।

काळू कारखानै री दिपटी काढै, डंड-बैठक निकाळै,
कुस्ती लड़ै, डाव पेच लगावै पण वैरी नेणायता रै डर सूं
घी रो एक छांटो भी पेट में न्हांख नईं सकै। रात री
दस-इग्यारै बजी जद कै, भावण माळां रो सनरो नईं हुवै;
काळू भांवतो गाभै में लुकाय'र घीकणास लावै, अर

मालण, दूध, मळाई अथवा घी मूं हाड चीकणा करै।

काळू सोवै एक घर में, जीमै दूजै में, बैठे तीजै में, अर ठिकाणो बतावै चौथै रो।

कदेई-कदेई मारग वैवतै री लोक साइकल भाल लै, अथवा घड़ी में हात घालै। बांनै भांमापट्टी दे देवाय'र काळू जै रामजी री कर जावै।

कारखानै सूं आयां पछै काळू अंगरेजी फैसन रा गाभा– हैट, बूंट, पेंट, टाई डटावै, अर पाळ्यां-धाळ्यां में बिना नूतै ई ढूक जावै। बठै जाय'र चोर दई खाय-पीय'र आय जावै जिकी बात नईं, आला अफसरां दई नोकरां माथै हुकम भी लगासी। आपरी ऊमर में काळू एक-दो वार ई टोकीज्यो हुवैलो, और तो सदेई बेदाग निकळै, कारण आछा कपड़ा पैर्यां पछै वडो अफसर हुवै ज्यूं दीसण लाग जावै– स्यान सिकल सांवरियै सावळ दी है, अर मूछ्यां भी सफा-चट मैदान!

रो नेम, फेर घर में सगळां में बांट'र मावणी। जवानी में आप बूंटी भी मोकळी पींवता जिण मार्थं मीठो खायां बिना नसा नईं ऊगता।

दिसाली में आप एक दिन में हजार-हजार रुपिया कित्ती ई वार कमाया हुसी। आपरी ऊमर में मधजी लाखूं रुपिया कमाया, पण भेळा करण री विद्या नईं सीखी इण कारण इणां रा छोटा भाई भी न्यारा हुयग्या।

जद आछी कमाई हुंवती तो आप झट वजार में जाय'र कुत्तां नैं तीस-चाळीस रुपियां री जळेब्यां अर गाय-गोधां नैं घास नखांवता, मिंदरां में रुपिया चढ़ांवता, गरीबां नैं गाभा दिरांवता।

आप आयें साल लाटरी भरतां अर, जे निकळै तो, सगळां री पांती रो हैंसाव आगूंच लिख'र राख लेंवता अर सगळां नैं धनाम देवता, पण आपरी ऊमर में एक वार, भी लाटरी नीसरी नईं।

अड़सट री ऊमर में भी आप रा दांत बतीसूं कायम हा। नीम अथवा बांवळियै रै दांतण रो आपरै नेम हो जिण नैं आप ऊमर-भर निभायो, इणी कारण दांत पड़नो तो आघो रैयो, हिलकणो ई किसो'क हुवै!

आंख्यां नैं आप घी रो ताजो काजळ पाड़'र मांज्योड़ी

राखता जिण सूं जोत बराबर बणी रैंयी। रात नैं आप घासलेट रो चानणो नईं राखता– तिल्ली रैं तेल रो दियो। जे जगतैं लालटेंण कमरैं रो वारणो जड़योड़ो देख लेंवता तो घणा नाराज हुंवता। जगतैं लालटेंण रैं नैड़ो बेंठणो ई बै घणो हाणीकर बतांवता।

ऊनाळो हुवो अथवा सियाळो, आप भोर में बेगा उठ'र घूमण नैं जांवता। दरवाजैं बारैं बगेची में न्हावा-धोवा कर'र घरे आवता। आप नेती– धोती सूं सरीर री मळ सावळ चालू राखता।

पत्ती रो साग– पालख, पानामेथी अर चन्दळियो– आपनैं घणो रुचतो। आप दाळ भी रोजीनैं जीमता; अर पलका खीरां माथै अकरा सेक'र जीमता। पपीतैं रो पणो करता, अर कोरो भी खांवता। ऊनाळै में आमरस दोनूं टैम चालतो।

बाणीकै में आप. वडा अर गोळ-गोळ आखर लिखता। पाढा अर लेखा आपनैं चोखी तरैं याद हा। सतरंज अर चौपड़ रा आप जूना अर नामी रमार हा। आपरा चेला मोकळा लाधै।

चौमासै मे आप नरसंग सागर रैं तळाव माथै डेरा दियोड़ा राखता– तळाव में सावण घम'र कोई पाणी तो

सूगलो नईं करै है। जे कोई सावण री हीमत करतो, बीनै मघजी दाकल देय'र बंध कर देंवता। दाकल सूं नईं रुकणियो गाळ्यां सूं थमतो।

आपनै तिरणो घणो आछो आंवतो। घंटा-दो-घंटा आप आराम सूं पाणी माथै पड्या रेंवता। चौमासां में आप कित्ता ई डूबता लोकां नै झाल-झाल चोटा बारै काढ्या अर वांरा प्राण बंचाया करता।

मघजी ऊमर में भांग रो मोकळो नशो कर्यो। एक बार मम्बाई आंवती वेळा आपरै कनै जगात आळां पाव-भर बूटी पकड़ली, अर वै कानूनी कारवाई करणी चांवता हा। मघजी वानै समझाया कै आ तो वांरै रस्तै-रस्तै रो मावो है, इण सूं बेसी कोनी। पण जगात अर नसै रै मैकमै आळा कद मानण लाग्या? मघजी बोल्या– "जे थानै भरोसो नईं हुवै, तो हूं थारै सामनै ई म्हारी खुराक लेय लूं।" इयां कैय'र वै दो मुट्ठा भर'र सूकी भांग चाबग्या। तीजै मुट्ठै में मैकमै आळा हात जोड़ दिया– "महाराज बाबा, बस करो।"

पछै बुढापै में मम्बाई सूं घरे आय'र बैठग्या, पर दौलत कमाणी पण मरता नईं ग्या, तो आपनै पड़ता माथै करणा पड़ता जिका गैणा-गाठा बेच'र उतारीजता।

लिखमीनाथजी

टाबरपणें में आप एक हुणियार टाबर दीमता हा। इस्कूल रै दिनां भी आप आडे विद्यारथी दई नईं रैया-कळकत्ते विस्वविद्यालै सू आप दसवीं किलास पास करी, पिरथम सिरेणी में! जद काम काज लाग्या तो लूंठी जमेंवारी रा काम आप संभाळ्या अर वांमें गजब री खिमता देखाळी।

आपरा आखर छापे नै छेड़े बैठाणता। हिन्दी, अंगरेजी, गुजराती, बंगला सगळयां में जाणे मोती पोया हुवै।

गाण-विद्या मे परलै पार पूग्योड़ा हा, संगीत रा डाढा पारखी हा। राग-रागणी रै भेदां सार बारीकी सूं समभता। गळो आपरो विगड़्यो हो, अथवा ठेट सूं ई खराब हो आ ठा नईं, पण तो भी आप गांवता। जागणां में पूगता। आपरै बिना जागण अलूणा लखांवता। पेटी-बाजो आपरो प्यारो साज। टूट्यो-भाग्यो, रद्दी-सद्दी, किसो ई बाजो आपरै आगै मेल दो, बाजो नाचण लाग जासी, इसी आपरै हातां री करामात! सोनै में मंढावण जोगा

पड़तो, अर वै दुनिया खातर कोई काम री बातां बतांवता ।

वां जद कैयो– "हूं लिखमीनाथ हूं" तो दुनियां कैयो– "गैलो हुयग्यो दीसै है ।" दुनियां री इण भावना रो उणां रै माथै असर पड़ भी गयो, अर वै पैली भाळा सागी नईं रैया ।

"राम सा पीर री जै" सूं आप चिगण लागग्या– मई हूं साख्यात लिखमीनाथ बैठ्यो हूं, तो फेर और केई री जै बोलण सूं काई काम ?

एक बार आप नरसंगजी रै मिन्दर गया । मठै बाजो हाथ में लेय'र गुर छेड़्या, अर बारै सूं अवाज आयी– "राम सा बाबै री जै ।" आप बाजो बंध कर दियो । जद आप पाछा गुर छेड़्या तो फेर बारै री जै । आप उठ'र बारै गया । पण जै बोलणिया सगळा छाकदा ! पाटा माथै इया पड्या खर्राटा लेवै जाणै घोर नींद में है । आप फेर बाजो बन्द कर्‌यो अर फेर "जै" । अबै आप बाजो बन्द कर्‌यो । गळो बैठग्यो । सोरा बारै आय'र पाटै माथै सोवण रो मिस करणियां नै समभाय'र बोला राख्या । पछै आपरो भावणो हुयो ।

आगम में सुगामा भगतां नैं भैंगो देखणो– इयां ई

ईसा हुगी लिछमीनाथजी ! ई मैणै रे उथळै में आप गीत बणाय'र लाया जिण री एक-दो लैण इण तरै है–

> केश नहीं अब मेरे कारे,
> नैन नहीं मेरे रतनारे,
> अधर नहीं मेरे अरुनारे,
> सखियां कृष्ण कैसे स्वीकारें ?

पण फेर भी सख्यां करनै सू मनीजण री आपरी परख्न रैह्या ही। एक दिन आप जागण में मोर मुगट, पीतांबर, बंसरी, कुंडळ धारण कर'र पधारया। बंसी बजावती सी भांवती ई ही। लोका झूडेई-झूडेई हात जोड़्या, पगां पड़्या, जै बोली, अर आप राजी हुयग्या। कई केमरो मंगायोज्यो, अर आपरो फोटू उतरग्यो। फोटू 'मीरा' धारै में छप्यो, अर नीचै लिख्यो हो– नकली कृष्ण।

"नकली कृष्ण" री बात सू आपनै घणो दुख हुयो। धार छापै रै सम्पादक नै इण बारै रो एक पत्तर भेज्यो– पाछ सू पांच सौ बरसां पैली मीरां रो जनम हुयो अर बा म्हारै सू इल्को प्रेम करती आवती। बौ बखत गाई पीर गाया–

मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई.

जाके सिर मोर मुगट, मेरो पति सोई।

खुलै श्राम मनै श्रापरो धणी बणायो, पण मैं मीरां री श्रां फालतू बातां माथै ध्यान देवणो ठीक नईं समझ'र उण सूं पती-पतनी रो नातो नईं जोड़यो। मीरां मरती मन में लेयगी। अबै पांचसौ वरसां पछै जद मीरां म्हारो कृष्ण रूप देख्यो, तो बीरी लारली बळत पाछी तेज हुयगी अर बीं एक पत्रिका रै रूप में म्हारी निन्दा करी है, धिरकार है मीरां नै!

जागण में एक वार भजन गायीजतो हो—

मन मोहन मोहन श्राकर के

मुरली-धुन मधुर सुना दीजे।

श्राप घर सूं पधार्या तो इण भजन रा बोल कानां में पड़्या। पाछा घरे गया, मुरळी लेय'र श्राया, फेर बोल्या- "अबै म्हारा मुरळी वजावण रा दिन थोड़ा ई है, पण थे लोक हाल मनै मुरळी खातर तंग करो। थांरो भजन सुण'र पाछो ठेट घरे जाय'र मुरळी लायो हूं। लो सुणो मुरळी।"

श्राप कैया करता— गांधीजी नै अर जवाहरलाल नै, सगळां नै ठा है कै लिखमीनाथ रूप में म्हारो अवतार हुयग्यो, पण वै हाल ग्यान गिनारो नईं कर रैया है। ना

करो नईं करै तो, पण एक दिन पञ्चायत वैं म्हारैं पगां में आय'र पड़सी।

नरसंग चवदस रैं मौकैं माथैं एक वार आप दाढ़ी बधाय'र सिंघ जिसो विकराळ रूप वणाय'र पोट्ट् उतरायो, दसरावैं माथैं आप करणी रूप में जिनानी साड़ी पैर'र, एक हाथ में तिरसूळ अर दूजैं में मुण्ड री चोटी झाल'र पोट्ट् उतरायो।

लिरमीनाथजी जिसा मिनख विरळा हुवैं, पण दुख इण बात रो है कै जमानैं रा लोक इसैं मिनखां री बातां माथैं मावळ ध्यान नईं देवैं, अर इण तरैं आपां उणां रो घणेसो माठो तरियां गुण नईं सकां।

लिरमीनाथजी रो सरीर सान्त हुयें च्यार-पांच बरसां सूं घणा को हुयानी, पण विरमदणी लोक यानें इण तरैं बिसराया जावैं लिरमीनाथजी जिसो दनोरो मानवी इण धरती माथैं कदेई जलम्यो ई नईं हुवैं। वैं वैं विदेस में जनमता तो वांरैं बाबत पल्लिवित पोथ्यां छप जावती, अर ठावर-ठावर उणां नैं आदर मान मिलतो। म्हां नैं भी म्हां रैं मिनखां रो मान करणो चाहीजैं अर उणां री याद अमर बणावण सारू म्हां रो विसेस पाळणो चाहीजैं।

धोवण भाभी

ऊमर वरस चाळीस-इकताळीस, जवाड़ां रा हाडका दीसै, सफा मुड़दी हुवै ज्यूं लागै। बींरो धणी म्हारै सूं बडो हो, अर म्हारै सागै पढतो इण कारण धोवण मनै देवर मान'र गूंगटो काढै।

गाभा लेवण नै तद ई आसी जद पइसां री जरूरत हुसी। पइसां खातर आय'र घरणो देसी तो फेर सोटां री मारी भी उठै नईं। जे समझावां– 'काल ले जाए', तो कैवै भट्ठी घालणी है, सोडो कोनी, सावण लावणी है, कोयला खूटग्या, पौडर ई लागग्यो। सगळी चीज्यां जद एकै सागै खूट जावै फेर लायण रो बिना पइसां काम कियां चालै। पइसा लियां पछै फेर ठैरण रो काम कोनी।

इत्ता वरसां मे धोवण कदेई कपड़ा धोय'र जी सोरो करयो हुवै जिकी बात कोनी। कदेई कोई कपड़ो टीच सूं खराब लायसी, कैई री उस्तरी सावळ को हुवैनी, कैई रो रंग ... उडग्यो अर केई रै दूजै कपड़ै रो रंग लागग्यो। गाभा धोय'र लावै तो सायळ देखणा पड़ै, खातर ओळमो देवणो पड़ै, पण कांजा हुवै जिका

पाछा देवणा पड़े। धोवर्ण आपरी जाग में तो कोजा धोयोड़ां ने बीच में लुकाय'र लावे, पण सगळा संभाळ्यां पछै लुकै ?

ओळभो देवां तो कैवै– हूं तो धोय'र लिआयी जिका ई घणा समझो, तीन दिनां सूं ताव मे पडी ही। जे और केई रा गाभा हुंवता तो लावती ई कोनी। थांरा तो लावणा पड़े। थांरो डर लागै।

कोजा धोयोडा देख'र रीस तो घणी आवै, अर जचै कै अबै धोवण फोरस्यां, पण म्हारी धोवण खाली धोवण तो है कोनी, बा तो धोवण भाभी है, गाभा धोय'र देवे जिको भी एक म्हारै माथै पाड चढै है।

एक बार धोवण री सूगली धोवाई सूं उपथ'र मैं कपड़ा देवणा बंध कर दिया। पण म्हारो एकलै रो सारो थोड़ो ई है। धोवण घरे आय'र बकण लागगी–"हां, अबै बडा आदमी बणग्या जद म्हारा कपड़ा दाय थोड़ा ई आवै। अबै नवी धोवण धारसो भई, म्हारै जिसी अयगेली रा धोयोडा थांनै आछा थोड़ा ई लागै।"

बा पुराण बाचती रैयी, पण मैं पाछो उथळो नईं दियो।

धोवण ऊभी हुय'र खूंटयां माथै सूं उतार-उतार, सुगा साली कर'र आपेई गाभा भेळा कर लिया। थीरी इत्ती अपणायत आगै पछै हूं काईं बोलतो ?

पण धोवण रा गुण म्हारै पेट में है। टावरां री मां तो बिना खुजा संभाळे धोवण नै गाभा देय देवै, जे काम रा कागद-पत्तर हुसी तो पाधरा धोवण रै घरे पूग जासी। पण धोवण भाभी म्हारै गाभां रा खुंजा ध्यान देय'र आपरै हाता सूं संभाळै, अर खुंजा में रैयोड़ो कागद-पत्तर, पइसो-टक्को घरे लाय'र पुगावै। बीजी धोवण सूं इसी आसा कुण राख सकै ?

इण रै सिवाय म्हारै घर में धोवण नै दियोड़ा गाभां रो हैंसाब भी नईं रवै। कित्ता दिया, कित्ता आया, कित्ता धुपणा हा, कित्ता उस्तरी खातर हा, आछी तरै कोई याद राखै न चौपनियै में टूकै। पण धोवण भाभी रै परताप म्हांनै याद राखण अयवा टूकण री जरूरत नईं पड़ै। इसी बिलल्ली-सी'क दीसै जिकी लुगाई सगळै सैर रा गाभा मूंढै याद राखै, आ किनै इचरज री बात है ? जे कदास भाभी री जागा कोई बीजी धोवण हुवती, तो आज तईं में गोळ घाल'र चौगणा पइसा धोवाई में लेंवती, अर म्हारै हैसाब मे पोल देख'र गाभा गबळगट करती जिका पाखती में।

भाभी कपड़ा कोजा धोवै, पइसां खातर तकरार करै, अर मोकळो माथो पचावै, पण फेर भी आपरै टावरां रै अर म्हारै भाग री दस बरस बैठी रैवै तो घणो आछो, इयां हूं मन में कैया करूं।

जे कोई कँय देवँ– "नईं सा, ओ काम इयां तो कोनी हुय सकै नी।" तो फेर देखो तमासा–"इयां को हुय सकै नी? ओ अफसर रो हुकम है अर तूं कँवै हुय सकै कोनी ! बड़ै अचूंबै री बात है। पैली सोच तो लिया कर कै तूं कीसूं करै है। अबार तू अफसर सूं बात करै है। कदेई म्हारै कनै आवै जद ख्याल राखे।"

इणै उपरान्त भी जे कोई डरतो-डरतो कांई कँयो चावै, तो आप बात बंध कर देसी। अच्छा, ठीक थारो काम कर। तनै समझावतां-समझावतां म्हारो गळो खराब हुयग्यो, अर तूं हाल समझ्यो ई कोनी मे कांई है थारै? अक्कल तो नेड़ कर ई ... कोनी।"

पण जे कोई बाबू धड़ाधड़ पाछो पु... वीरै माथै भागचन्द ठस्सा नईं जमावै।

भागचन्द आपरै दफतर नै कदेई-... है। निरखण में बारीक बातां तो बाबुवां ... कारण भागचन्द रै पल्लै माड़ी ई पड़ै, ... मोटी-मोटी कमरयां तो काढ सकै है, "कमरो बौत गूगलो पड़्यो है– भीत्यां रै ...कुनो भी आपरी धुरी साफ रासै; थे...

"ई रिजस्टर री गत्तो टूटग्यो। दूसरो बंधवावणो चाहीजै। थे लोक उकत सू काम को लेवोनी। हूं जे इत्ती-इत्ती वातां बतावतो रैसू, तो म्हारो काम कुण करसी ?
वाबू तो अफसर रो काम करण सूं रेया!

"आगै सारू जे मैं दफ्तर में इसो खिडावो-पिडावो देख लियो तो हूं एक आधं नै घरे बैठायां बिना नई रैऊंलो। हूं थारो अफसर हूं, मालम है थांनै ?"

पण भागचन्द री नाड जाणन माळां वींनै पटाय भी मावळ राख्यो है। वै ऊंगी-सूंई पाटी पढाय'र बडा-बडा काम भी चिमठ्या में कढवाय लेवै। एक वार नौकरी में भरती करती बेळा आप वाबू लोकां रै टावरां नै फेल कर कर'र काढ दिया। सगळा भेळा हुय'र साव कनै गया–
"हजूर ! आपरै राज में म्हारा टावर जे भरती नईं हुसी, तो फेर वांनै भरती करणियो धरती माथै कोई जलम्यो ई कोनी।"

बाबू थोड़ी देर में आय'र बोल्या– "साब ! आपरो हुकम कुण टाळ सकै है। वै तो वंवै है कै साब रो हुकम चायीजै। साब मालक है। करता-धरता है।"

"अछ्या ? तो जावो मिसल लिआग्रो।" अर फेर करचोड़ै सगळां टावरां नै पास कर दियो।

जिम्मेदारी री जागा माथै काम करतां थकां भी एक अफसर में जिकी गंभीरता चायीजै, उण रो आप में धाप'र टोटो है। आप जलम्या जिकी वगत बेमाता कनै गंभीरता सायद खतम हुयोडी ही इण कारण पांती नईं आयी। बडै अफसरा कनै जावण सूं पैली भागचन्द बाबू लोकां नै धमकावै– "देखो, जे बडै अफसर मनै रगड़यो, तो हूं थांनै रगड़ूंलो।"

जद केई बाबू माथै नाराज हुवै तो रीस में आय'र कैय देवै– "अछ्या, तू जा। हू आज सू थारो मूंढो ई देख्यो नईं चाऊ। अर जे हूं तनै भूल सूं बुलवाय भी लूं, तो तूं आए मत, था तनै छूट।"

आ भागचन्द सोचै कोनी कै बाबू नोकर है अर वो भी नोकर है, अर बाबू लोकां रा मूंडा देख्यां बिना साब लोकां रा काम चालै थोड़ा ई है, पण बिना सोचे भाटो न्हांख देवै, अर सागी दिन, पांच-दस मिन्ट छेड़ै ई बाबू नै

पाछो बुलाय लेसी । ईं सूं मालम पड़े कै पेटै पाप तो कोनी पण आपरै अणभांवतां अर खुभतां बोलां सूं भागचन्द मोकळै बाबुवां नै आप सूं रीसाणा कर राख्या है। भागचन्द रै सामासाम तो सगळा हाजी, हम्मैंजी करै, पण पीठ पाछै उण री खुड़ी नई खोतरतो हुवै इसो बाबू कोई दीस्यो कोनी।

आपरै औगणां सार भागचन्द समझतो नई हुवै जिकी बात कोनी। पढ्यो-लिख्यो है, मूरख तो है ई कोनी। कसर है तो कोरी आ, कै जवानी में टाबरपणै री बातां करै जिण माथै सायेना मूढामूढ गैलो बखाणै, छोटकिया छानै छानै।

केई बार अमूज'र आप कैवै– "अरे! हू ई कोई पफमर हू ?"

भागचन्द वैमी सभाव रो मिनख है। दफ्तर रै लोकां माथै तो भरोसो कोनी सो कोनी, पण बंगलै रै नोकरां माथै भी सक-सुबा मागीड़ा हुवै, इण कारण पाच-दस दिनां सू बेसी कोई नोकर भागचन्द रै बंगलै में टिकै नई। पगार भी बीजा अपसरा नामू आप रपियो– दो रपियो इधको देवै, पण फेर भी लोक आपरै अठै नोकरी खारू मांवता संकै। कारण, बै जाणै कै पाच-दस दिना सूं

बेसी कोनी जिकी तो कोनी, पण जे कोई चोरी-जारी रो इलाको देय देवैं तो पुलस में ठरड़ीजणो पड़ै अर ईजत सूं धोवां हात, अर दूजी जागा भी नोकरी करण जोगा नई रैवां जिका पाखती में।

जद दफ्तर आळा छुट्टी मांग लै तो भागचन्द रै जाणैं सोट री देयली हुवै। एक बाबू री ब्याव, पण मन में डर कै साब तो छुट्टी मंजूर करै कोनी। बाबू आपरै बाप नै साब कनै अरजी देय'र भेज्यो। छुट्टी मांगी ही तेरै दिनां री। साब बोल्यो– ''तेरै दिनां रो कांई करणो है, फालतू एक जवान आदमी घरे बैठ्यो वगत खराब करसी, फायदो कांई हुसी ?'' बाबू रो बाप बोल्यो– ''साब, तेरै दिनां री छुट्टी घणी कोनी। लुगायां बान-बनावा लावै, घरे आवै, गीत गावै। बीन तो घर में हाजर हुवणो ई चायीजै।''

साब कैयो– ''गीत-धीत पुराणी चलस्यां छोडो। अबै आपां रो देस आजाद है। घरे बैठ'र टैम खराब करै जिका देस रा दुसमण हुवै, हितू को हुवै नीं। जे बिना छुट्टी लियां ब्याव रुकतो हुवै तो हूं पांच दिनां री छुट्टी मंजूर कर सकूं हूं।''

जद बाबू रै बाप थोड़ा तौर बदळया, तो साब भट

बेसी कोनी जिकी तो कोनी, पण जे कोई चोरी-जारी री दलाली देय देवें तो पुलस में ठरड़ीजणो पड़ें अर ईजत नूं घोवां हात, अर दूजी जागा भी नोकरी करण जोगा नईं रेवा जिका पालतो में।

जद दफ्तर माळा छुट्टी मांग लै तो भागचन्द रै जाएं सोट री देयली हुवें। एक बाबू रो ब्याव, पण मन में डर कै साब तो छुट्टी मंजूर करें कोनी। बाबू आपरै बाप नैं साब कनैं अरजी देय'र भेज्यो। छुट्टी मांगी ही तेरें दिनां री। साब बोल्यो– "तेरें दिनां रो काईं करणो है, फालतू एक जवान आदमी घरे बैठ्यो वगत खराब करसी, फायदो काईं हुसी?" बाबू रो बाप बोल्यो– "साब, तेरें दिनां री छुट्टी घणी कोनी। लुगायां बान-बनावा सावें, घरे आवें, गीत गावें। बीन तो घर में हाजर हुवणो ई चायीजें।"

साब कैयो– "गीत-घीत पुराणी चलस्यां छोडो। अबें आपां रो देस आजाद है। घरे बैठ'र टैम खराब जिका देस रा दुसमण हुवें, हितू को हुवें छुट्टी लियां ब्याव रुकतो हुवें तो हूं पांच मंजूर कर सकूं हूं।"

जद बाबू रै बाप थोड़ा

नत कर-कर नीठ ऊगावां, अर तूं जड़-जड़ं बाढण
ागग्यो !"

बागवान देख्यो सस्ता छूटग्या । माफी मांग'र
ग्यो । बारै निकळतै ई मैम मिलगी । पूछ्यो— "क्यूं भई;
ाट'र साबळ करदी दोब ?" बागवान नैं सूणीज तो
यो, पण अणजाण वण'र सिलाम कर'र साईकल माथै
ूं बिना उतरे ई झट ग्रागै निकळग्यो ।

जद मैम बंगलै में बड़ी तो देख्यो घास रा वूजा पैली
यूं ई ऊभा है । मैम बड़बड़ायी— "बागवान सफा गधो
है, इसी काई दोब काटी !" साब कैयो वो मूरख तो
सगळी बाढण ग्राळो हो, जे हूं घर में नईं हुवतो, तो वो
लान रो नास कर नांखतो । जड़-जड़ं बाढण लागग्यो ।"

मैम बोली— "दो-तीन दिना सूं कोमीम कर'र म्हैं ई
तो वीनै दोब काटण नैं बुलायो हो, अर था पाछो काढ
दियो !"

"अबै तूं आ बताय के तैं बीस री छुट्टी क्यूं मांगी ? जे हूं मंजूर कर देंवतो तो पांच दिन तई घरे बैठ्यो माख्यां मारतो ? अर मनैं जचैं कै पन्द्रै सूं घटाय'र जे हूं दस री करदूं तो भी थारो काम चाल सकै है।"

बाबू बोल्यो– "जे देवणी है जद तो पूरा बीस दिनां री देवो, साढा उगणीस री भी नईं, अर नईं, तो काठी राखो, म्हारैं छुट्टी बिना अणसरघो जावै कोनी।"

साब पन्द्रै दिनां री छुट्टी मंजूर कर'र अरजी मेज सूं हेटै न्हांख दी। बाबू चुपचाप लेयग्यो।

भागचन्द चिनी-सी'क बात नैं भी ल्हीसाड़यां बिना नईं छोडे, पण आ घणी आछी बात है कै बो इसो जिद अर बकवास आपरी लुगाई आगै नईं करै। लुगाई है गुलाब री पुसब। जे दूजां दई बो लुगाई रो माथो सपावण लाग जावै, तो बा पक्कायत बेहोस हुजावै। लुगाई री बो ईजत करै, लाड राखै, लारै-लारै लियां फिरै, अर बीरी बात नईं टाळै।

थोड़ा दिनां री बात है—दपतर रो बागवान साब रै बंगलै आय'र दोब काटण लागग्यो। साब नाराज हुय'र बागवान नैं काढ दियो– "अरे, गधो है तूं ! श्रो मुरधर देस, ईं में दोब आंख्यां देखण नै ई कठै पड़ी है। म्हे तो

मेंनत कर-कर नीठ ऊगावां, अर तूं जड़ैं-जड़ैं बाढण लागग्यो !"

बागवान देख्यो सस्ता छूटग्या। माफी माग'र टुरग्यो। बारै निकळतै ई मैंम मिलगी। पूछ्यो- "क्यूं भई; काट'र सावळ करदी दोब ?" बागवान नैं सूणीज तो गयो, पण अणजाण बण'र सिलाम कर'र साईकल माथै सू बिना उतरे ई भट आगै निकळग्यो।

जद मैंम बंगलै में बड़ी तो देख्यो घास रा बूजा पैली ज्यूं ई ऊभा है। मैंम बड़बड़ायी- "बागवान सफा गधो है, इसी काईं दोब काटी !" साब कैयो वो मूरख तो सगळी बाढण आळो हो, जे हूं घर में नईं हुवतो, तो वो म्हान रो नास कर नांखतो। जड़ैं-जड़ैं बाढण लागग्यो।"

मैंम बोली- "दो-तीन दिना सू कोसीस कर'र म्हैं ई तो बीनैं दोब काटण नैं बुलायो हो, अर थां पाछो काढ दियो !"

"अच्छया ? आ हुयी ? तो हूं असवार रस्तै में पकड़ूं। पाछो लाऊं।"

"अबै तो वो आपरै घरै पूग्यो हुसी, रस्तै में थोड़ो ई लाधसी।"

जे भागचन्द में थोड़ी-घोड़ी'क गंभीरता अर घर री अकल हुंवती, तो इत्ता मिनख जोयां नईं लाधता। पण दोन-गुणत मिनख धरती माथै कठै पड़्या है !

हरियो

बरस तो बीस-इकीस ग्रायग्या, पण ग्रकल हाल बरसां रै बराबर मइनां जिसी ई ग्रायी कोनी, ग्रर ग्रबै ग्रावै ई निरताऊ। इसी मालम पड़ै कै हरियै री ग्रकल रै कोठै माथै कोई सिल्ला पड़गी जिए सूं नूई ग्रकल तो उण में परवेस पावै नई, ग्रर साल-सवा साल में जित्ती ग्रायगी वा पड़ी-पड़ी सिड़ै है। कियां हरियै रो ब्याव हुसी, कियां बो जवानी ग्रर बूढापो काटसी, मनै रात-दिन ग्रो फिकर रैवै।

पैलपोत तो कद में ग्रोछो रैयग्यो, फेर दांत नीसरघोड़ा, बोलण में टट-पट, रंग तो काळो है [illegible] ई। माईतां रै सात बेटां मांयलो एक। जे एकलो [illegible] फेर ई कोई गैणा ग्रर घर देख'र [illegible] हाल तो हरियै रै ब्याव री ऊमर निकळी कोनी, पूरो-सूरो सांसो ई है।

[illegible] तो बडो हुयग्यो, पण हरियै नै हाल [illegible] ग्रावै कोनी। दस तईं भी सायद ई [illegible] हूवै मू पाणी लांवतो हुवै, ग्रर कोई

"अरे हरिया ! कित्ता घडा लेयग्यो ?" तो आप कैसी– "तीन।" जे पैलड़ो आयो हुसी तो कैसी– "पैलड़ो आयो हूं" पण जे दूजै, तीजै, चौथै अथवा पांचवैं घड़ियै आयो हुवै अर कोई पूछै नै "ग्रो कितवों", तो कैवै "तीजो।" राम जाणैं या तो बीनै याद नईं रैवै कै कित्ता लेयग्यो, या लाई गिणती में सफा ई ठोठ है।

पण आपरी जाण मे हरियो भी दूजां नै भोदा बणाया चावै। आप कैया करै– "और तो कोई नोकरी ढुकी कोनी जद आखर हार'र घर मे इस्कूल खोली है। बीस-पचीस छोरा आवै है। आपा रो तो काम मजै मे चाल जावै।"

एक दिन मैं पूछ्यो– तू काई पढावै छोरां नै ?"

"छोरा नै सब पढाऊ– हिन्दी, अंगरेजी, वाणीको, पाढा, लेखा, धडा।"

मैं पूछ्यो– "तनै हिन्दी री बारखड्यां तो सगळी आंवती हुसी ?"

हरियो सीधो घणो। बोल्यो– घणी-सी'क तो आवै है, कोई-सी'क आवै कोनी पण बारखडी बिना कोई काम रुकै थोड़ो ई है।"

फेर पूछ्यो– "पाढा तो तनै सगळा आवता हुसी ?"

हरियो

बरस तो वीस-इकीस आयग्या, पण अकल हाल बरसां रै बराबर महनां जिसी ई आयी कोनी, अर अबै आवै ई निरताऊ। इसी मालम पड़ै कै हरियै री भगन रै कोठै माथै कोई सिल्ला पड़गी जिण सूं नूई अकल नो उण में परवेस पावै नईं, अर साल-सवा साल में जितो पायगो वा पड़ी-पड़ी सिड़ै है। किया हरियै रो ब्याव हुगो, अर कियां वो जवानी अर बूढापो काटसी, मनै रात-दिन ओ ई फिकर रैवै।

पैलपोत तो कद मे ओछो रैयग्यो, फेर दाग बाे नीसरघोड़ा, बोलण मे टट-पट, रग तो काळो है जितो है ई। माईतां रै सात बेटां मांयलो एक। जे एकलो हुवै तो फेर ई कोई गैणा अर घर देख'र छोरी सारे कर दें। हाल तो हरियै रै ब्याव री ऊमर निकळी कोनी, पण सार्गै पूरो-सूरो मांसो ई है।

इतो बडो हुयग्यो, पण हरियै नै हाम बोल उंई गिणती ई आवै कोनी। दस तई भी मायर ई दवकी ... घर कवै म पाणी लांवतो हुवै, घर कोई पूछ लेवे-

"अरे हरिया ! कित्ता घड़ा लेयग्यो ?" तो आप कैसी– "तीन।" जे पैंलड़ो आयो हुसी तो कैसी– "पैंलड़ो आयो हूँ" पण जे दूजें, तीजें, चौथें अथवा पाचवें घड़ियें आयो हुवें अर कोई पूछनें "ओ कितवों", तो कैवें "तीजो।" गम जाएं या तो बीनें याद नईं रैवें कै कित्ता लेयग्यो, या लाई गिणती में सफा ई ठोठ है।

पण आपरी जाण में हरियो भी दूजां नें भोदा बणाया चावें। आप कैया करें– "और तो कोई नोकरी हुवी कोनी जद आखर हार'र घर में इस्कूल खोली है। बीस-पचीस छोरा आवें है। आपा रो तो काम मजें में चाल जावें।"

एक दिन मैं पूछ्यो– "तू काईं पढावें छोरां नें ?"

"छोरां नें सब पढाऊं– हिन्दी, अंगरेजी, वाणीको, पाढा, लेखा, घड़ा।"

मैं पूछ्यो– "तनें हिन्दी री बारखड्यां तो सगळी आवती हुसी ?"

हरियो सोधो घणो। बोल्यो– "घणी-सी'क तो आवें है, कोई-सी'क आवें कोनी, पण बारखड़ी बिना कोई काम रहै थोड़ो ई है।"

फेर पूछ्यो– "पाढा तो तनें सगळा आवता हुसी ?"

उथलो दियो– "पाछा सगळा आवै, तिर्यं-एकं-इकती, तिर्यं-दूवै-बत्ती, पाछा मनैं सगळा आवैं।"

सपतैं रैं सात दिनां रा नांव भी हरियैं नैं लैणसर याद कोनी, आगा-पाछा हुवैं तो हू सकैं है। एक दिन बोल्यो– "आज दादैजी नैं चिट्ठी लिखी है, काल जोधपुर पूग जासी।"

मैं पूछ्यो– 'आज कांईं वार हुयग्यो', तो बोल्यो– 'आज हुयग्यो मंगळवार, कॉल सोमवार नैं जोधपुर पूग जासी।' अर जे साच पूछ्यो हुवैं तो बीं 'मंगळवार' कैयो जिकै दिन सुकरवार हो। पण हरियैं रैं सगळा वार सरीसा है। सुकर, मंगळ एकूंकार।

वार पूछ्यां पछैं मैं पूछ्यो– "चिट्ठी कंण लिखी दादैजी नैं?"

"चिट्ठी मैं आप लिखी, म्हारैं हात सूं।"

"कियां लिखी?"

"मैं लिख्यो– 'कागद-पत्तर थांरो आयो। अठै खुसी, हूं अवार नानाणैं जीमण जाता हूं। रात नैं बठेई सोता हूं। थे म्हारैं खातर एक घड़ी भेजना।"

हरियैं नैं मैं पूछ्यो– "हिन्दी रा आखर तो तूं थोड़ा घणा ओळखतो हुसी?" बोल्यो– "आखर तो हूं दो दिना

ओळखणा सीख जासूं । म्हारै काकै मनै पोथी लेय'र
पारै घरे बुलायो है । काल सूं जावणो सरू करसूं ।
यां बिना तो पछै हुसियार कियां हुयीजै ?"

हरियै रै एक दिन चोखी नोकरी भी ग्रायी, पण
नैं वैर साज दियो । नोकरी सित्तर रुपियां मइनै री ही,
णी री पो माथै दिन भर ठंडी छैया में बैठा पाणी पावो,
झ्या हुंवते ई घरे जावो ग्रर मइनो पूरो हुयां रुपया
सित्तर चित कर लेजावो । पण नानै कैयो– "तूं गैलो
वळै है, जे पाणी री कूडी में कूद मरै तो काळो मूढो
करावै ।"

हरियै नै इण बात सूं घणो दुख । बो कैवै– कूंडी
में कूद मरूं जिको हूं कोई गैलो हूं ? गैला हुवै जिका तो
नागा फिरै, भीत्यां सूं भचीड़ खावै, फालतू ई गळ्यां में
गोता खावता फिरै । नोकरी हात सूं गमाय दी । जे लाग
जावती तो मौज करतो, ग्रर फेर तो ब्याव हुवण में भी
नाळ नईं लागती । ग्रापेई सगपण ढूकतो ।

हरियै रै माईता नैं थे निरदयी कैसो'क काईं कैसो ?
छोटै भाई पुखियै री सगाई करदी, ग्रबै बीरा खोळा
भरीजण लागग्या ! हरियै सूं ग्रो दुख कियां झलै ?
बडो सामो जोवै, ग्रर छोटो लाडी परणै, इण ग्रपमाण

नै तो ढांढो ई बरदास नईं करै। इण कारण जद पुखियै रा खोळा भरीजण लाग्या, तो हरियो बाग देय'र जोर-जोर सूं रोवण लाग्यो– "ए मावड़ी तैं मनै क्यूं जायो ए ? मावड़ी हूं ऊगतो ई क्यूं मरग्योनी ए ?"

सगा-समधी सगळा सैंतरा-बैंतरा हुयग्या। पण हरियै रा बडा भाई बीनै भाल बांथां में भर एकै कड़यै लेयग्या।

खोळा भरीज्यां पछै माईतां भांसो दियो– "या रे बोका ! सगाई पैली पुखियै री हुयी तो काईं हुयो, बीनणी पैली तनै परणासां।" हरियै थां बोलां री गांठ बांधली। जद पुखियो फेरा खावण नै गयो, तो बठै फेर हरियै राफड़-रोळा करी अर मरवल-मिकन्दी पाय-पवाय'र बैरी नै नीठ राजी करयो।

"हरियो' मठै सनम हुवण आळो हो, पण हरियै री ऊमर बडी है। आज दिनूगै म्हारै घरै आय'र भचन्दैणां बारणो भांग्यो। मैं सोच्यो इणां आज कुण आयग्यो। आवं देखूं तो हरियो, हात में पाणी रो प्यालो कढ्यो। मनै देखनै ई बोल्यो– "डाक्टर साब आयग्या।" हूं समझ्यो कोनी, नै पूछ्यो– "हैं ?" तो बोल्यो– "मामी आवसी।"

फेर बोल्यो– "हूं मामैं रै बेटै नैं घणो मुवाऊं। टाबर देखै हियो, अर कियो, टाबर देखै हियो, अर कियो।" हरियैं इण कंवत नैं बीस वार कंय-कंय'र मावळ याद करण री चेस्टा करी, पण बीनैं याद नईं आयी–

"टाबर देखै हियो, बूढो देखै कियो।"

इत्ती-सी'क बात नैं घड़ी-घड़ी वार घोट-घोट'र कंवण में हरियैं आधो घंटा लगायदी। मनैं जरूरी काम सूं कचेड़ी जावणो भी हो, पण हरियैं नैं कियां कंऊं कै अबैं तू बोलती बंध राख, जद कै वो साचाणी सभा में भासण देवै ज्यूं मूढो वणायोड़ो हो। हरियैं बात नैं घोटी, उणी तरै जे हूं घोटणी सरू करदूं तो थे कैसो– 'लिखार रो मायो खराब हुयग्यो दीसै।' अर बिना घोटे हरियैं री आज री बात रो सागी नकसो उतरै कोनी।

हरियो बोल्यो– "म्हारै बाप कंयो– 'तूं नानाणैं ना जा।' नानाणैं जाऊं तो किसो थारै बाप रो धन खाऊं हूं!" मैं पूछ्यो– "अरे नानाणैं जावण सूं कैण पाल्यो तनैं?" तो बोल्यो– "म्हारै बाप।"

फेर बोल्यो– "कदेई-कदेई हूं बैठ्यो-बैठ्यो रोवण लाग जाऊं तो मामैं रो बेटो कैवै– 'हरिया! तूं रोवै क्यूं?' बो म्हारै मूंडै रै मूढो चिपावै। मो है, मो, तन, मन; मन,

सैनार !"

मैं पूछ्यो, "थारो भाई कित्तो बडो है ?" तो बोल्यो– 'म्हारै सू थोड़ो छोटो है।' मैं फेर पूछ्यो– 'कित्ता बरसां रो है?' तो झट कैयो– तीन बरसां रो।" हरियै सूं थोड़ो-सो'क छोटो, अर 'तीन' बरसां रो ! तीन छोड'र च्यार-पाच रो तो डाकी नांव ई लेवै कोनी।

हरियो लालगढ मे नोकरी खातर गयो जिकै री भी बी आज बात सुणाबी– जद हू लालगढ में बडन लाग्यो, तो सिपाई कैयो– 'माय कठै जावै, बिना पूछै ?' हूं बोल्यो– 'अन्दाता कनै जाऊं हू, मिलण खातर।' सिपाईड़ो बोल्यो– 'अन्दाता सू मिलण खातर, पैली मूढो धाएँ सू धोइग्रा। अन्दाता सू मिलण आळी मोबडर्यां इसी हुवै काई ?' आ सुण'र मनै आयगी रीस ! मै कैयो– सिपाईड़ा ! थारै गाल माथै मारूंलो हू थप्पड, अर भाल नसड़ी परनै म्हांकूली। नालायक, गधा, हरामी !"

मैं पूछ्यो– "हरिया ! तैं सिपाई नै सुणाय'र इयां कैय दियो ?"

हरियो बोल्यो– "सुणायो नई तो काई हुवै, मैं म्हारै मन मे तो कैयो'क !"

हरियै रो पुराण तो अमूट है, पण हाल हरियो टाबर है। अबार टाबरपणै मे इतो घणो, बडो हुयां फेर बात !

लैरी

आप मन में तो जाणो कै लैरी अणनाथ्यो सांड हुवै ज्यूं मच रैयो है, पण जे ऊपर सूं कंय देवो– आजकल तो थकग्यो दीसै लैरी– तो लैरी आ भूल जासी कै बूकिया मुगदर जिसा माता अर काठा है, साथळ्यां हाती री टाग्यां सूं घाट नईं, पेट रै आगै जाणै एक झरबो बांध राख्यो हुवै, अर छाती अणमांवती चरबी सूं लटक्योड़ी पड़ी है। लैरी कैसी– थकां आपेई बीरा, खावण नै खुराक कठै? बिदाम-पिस्तां रो तो नांव ई लेवणो पाप है। घी-दूध में खोट सिवाय दूजी वात कोनी। बौपारी भलेईं कित्ता ई इमानदार हुवो, भेळ करयां बिना रैय ई नईं सकै। गोरमिन्ट टैक्स लगा-लगाय'र बौपार्‌यां सूं धन भेळा करै, जद वे आपांनैं चूसै। ग्रौर कांईं करै बापड़ा? पेट आडी पाटी तो बांधण सूं रैया। पण आं बौपार्‌यां रै डंडा पड़सी। अठै नईं, तो ठाकुरजी रै घरे। अं जनता नैं घी री जागा जैर खुवावै। आजकल बीरा! निरी वार माल्या बळण लाग जावै– भो सगळो खोटियै घी री मिलावट रो परभाव है।

जे आप कैसो– घी-दूध तो अमीरां खातर है, गरीबां नैं तो लूखो-सूखो रोटी ई घणी, तो भी लैरी पाछो उथळो दियां बिना नईं रैवै– "बळग्या घी-दूध ! सुपना आसी घी-दूध रा तो। पण मोठ-बाजरी तो चायीजै कती ? जे बजार मे जासो तो दुकानदार रा बाट खोटा, अर नीवत खोटी। लेवण रा बाट न्यारा अर देवण रा न्यारा, फेर तोल मे मारै जिको पाखती में। इसी मोठ-बाजरी सूं तो धूड़ खावणी चोखो, पण रांड धूड़ गळै सूं हेटी उतरै कोनी, वजगक आ वळै है। हू साच कंऊं, जे धूड़ खायां पार पडतो, तो नोकरी करतो म्हारै बाबैजी रो खेटर !"

इण बात रै दूजै दिन ई जे आप कैसो– "अवार तो सरीर त्यारी माथै है लैरी, काईं बात है, डंड-बैठक मारै दीसै है ?", तो आप काल आळी बात नै बिसर जासी कै काल कांईं-कांईं रोवणा रोया हा। आप भट कमीज री बायां ऊची चढाय लेसी, अर डूकिया निरखण लाग जासी। डूकिया करडा कर'र मच्छी चढासी। सीनो बारै काढसी, आपरै सीनै सामो जोसी, फेर सामलै रै सीनै सू, मन-मन मे, मिलाण करसी। फेर कैसी– "अखाड़े में उस्तादजी भी आ ई बात कैयी कै आजकल त्यारी माथै है, अबै कोई दगल ठैरावणी है।"

लैरी कदेई-सी'क ई हां में हां रळावै नई जद तो कंवै जिकी वात रो काट करणो सील्योड़ो है। जे कंसो-ई डालडा तो सरीर री सित्या काढ नांखी– "तो ग्राप डालडै री इसी पैरवी सरू करसी जाणै सोल एजेन्ट ग्राप ई है– ग्ररे, डालडै मे विटामिन है, ग्रो सीलबंध डब्बै में बिना भेळ-सेळ रो मिलै, ईं सूं घी री सगळी कम्यां पूरी हुवै ग्रो तो सुद्ध वनास्पती घी है, नुकसाण रो तो इण में लवलेस ई कोनी।"

जे हिरण वांडा हुवै जिसी डांफर बाजती हुवै, मी सूं मानखै रा हात-पाग खिरता हुवै, न्हायां पछै टावरियां रा दात कट-कट वोलता हुवै, ग्रर पाणी बरफ बण'र जमतो हुवै, इसै मौसम में भी ग्राप कंसो– लैरी, ग्राज तो सरदी मोकळी ग्रायगी, तो लैरी कंसी– कठै सी है, सोवणो मौसम है– इया कंय'र कोट उतार देसी। थोड़ी ताळ में कमीज खोल देसी, ग्रर एक गिंजी में घूमण लाग जासी। कोई खोलावै, तो गिंजी भी खोलणो कोई वडी बात कोनी, निरी वार खोल्या करै।

मम्बाई-कळकत्तै में विना लिफट ग्राळै माळै ग्रथवा माड़ी में जावण सूं ग्राप नै ताव चढ जावै। ग्रो डोल, ग्रर वै पगोथिया। एक-एक पगोथियो गढ जीतण रै

बराबर है। घणो रगड़ो तो इण बात रो है कै मोकळी बाड़ यां री नाळ इत्ती सांकड़ी हुवै कै जद सैंरी चढतो-उतरतो हुवै, तो नाळ में बीजो मिनख-लुगाई नई मावै। सगळो रस्तो सैंरी खातर खाली छोडणो पड़ै। ऊपर नीचै लोक भेळा हुयोड़ा देख-देख'र हंसता रैवै। दूबळा अरदास करै– 'भगवान ! जे ईं चरबी मांय सूं थोड़ी म्हारै खाते कर देवतो, तो म्हे भी मिनख दीखण लाग जांवता, अर सैंरी रो बोझ सूं सारो छूटतो।' नाळ खतम हुयां पछै जागां सैंरी हियाळै री चढाई करतो हुवै ज्यूं सगळां रै सामो जोवै। गाभा सियाळै में भी पसीनै सूं मालागार हुजावै। सास फूल्योड़ो साध-पूण घटै सूं जावतो पाछो सागी ठिकाणै आवै तद आप कामरी बात सरू करण जोगो हुवै, हांफणी में काई तो कैवणियो कैवै, अर काई सुणणियो सुणै ?

इण कारण जिका घणा अथवा दफ्तरां में लिपट राख्योड़ा है, बठै जे घड़ी भर भी अडीकणो पड़ै तो सैंरी नै कबूल है फालतू हियाळै री चढाई कीकर हुवै ?

सैंरी जद सांचै मांयं बैठै तो देखण आळो जाणै कै ईंग, ऊपळा, पागा, सांधे ई जाणी पण सैंरी साव नई करेई दावण ई तोड़ी कोनी। हां, जाड़ी सूं जाड़ी ईंटा

वैत री तड़ी दर्द लुळण लाग जावै । लैंरी नै ठा है– टाळो ईस, अर वैठो बीस । हां ईस वो टाळै पक्कायत है । लैंरी जिसा वीस वैंठण रो नो सवाल ई पैदा को हुवैनो । लैंरी जिसा दो सूं बेसी मांचै माथै मावै भी तो कोनी !

लैंरी आपरी ऊमर में कदेई वाईसकोप देखण नै नई गयो । क्यूं नी गयो, इण री समभ्रणा पढारां नै बतावण री जरूरत कोनी ।

लैंरी नै आ मालम है कै जिकी चरबी जवानी में इसा फोड़ा घालै, वा बूढापै में किता बेला बीतासी । इण कारण लारलै दो मइनां सूं लैंरी घी-दूध, चीकणास, सगळा छोड राख्या है । भोर में दो कोस तई घूमणो भी झाल्यो है । वैदजी कैवै कै जे नेम सूं आं वातां रो रक्खो राखसी, तो पक्कायत लैंरी एक दिन मिनखाचारै लागण लाग जासी ।

पट्टी-माथली

कुण जाणै तें ग्रांख्यां फाड़तैं बाबल री गोद ग्राय'र हरी-भरी करी ? कुण जाणै तूं मायड़ री दूधां-भरी छाती सूं घड़ी पलक सारू अळगी नईं हुयी ? कुण जाणै जे तू सात बीरां री सोनल बाई ही तो ?

कुण जाणै हरख-कोड सूं, गाजै-बाजै सूं थारो ब्याव हुयो तो ? कुण जाणै "इतरो सगळा रो लाड, छोड'र बाई सिध चालीए, लेयग्यो टोळी मांय सूं टाळ, कोयलड़ी हूद बोली ए" गांवते-गावते मा रो गळो भरीजग्यो हुवै ग्रर बी गीत ग्रधबीच मे छोड दियो हुवै तो ?

कुण जाणै सासू-सुसरां सासरै रो सिणगार कर समझी हुवै तो ? कुण जाणै नान्हो-सो देवरियो एक पग रै ताण ऊभो हाजरी भरतो हो तो ? कुण जाणै मायबजी रै हिवड़ै रो हार बण्योड़ी ही तो ।

कुण जाणै पाड़-पाड़ोसण्यां री ग्राफत रो ग्रधार ही तो ? कुण जाणै गळी मे डोळा-विणज करणिया रै डोळां में ठंड पुगावती तो ? कुण जाणै तूं काईं ही, कुण जाणै तूं कुण ही !

मैं तनै दिल्ली में नावल्टी बाईसकोप री सामली पट्टी माथै देखी । दिल्ली रो इसो बळ-बळतो तावड़ो, जिण रै डर सूं दुपारै सड़क माथै मूंढो काढतां काळजो कांपै, तैं सैण कर लियो हो । भाटां सूं चिप्योड़ी पट्टी साय दई जगै, बठै तूं बिना टाट-बोरी, गीदी-गूदड़ो, राली-सीरख ढाळे, धरती बैठी रैंवती, ऊपर छैयां-म्राड रो नांव नईं । तावड़ो सीधो थारै सगळै डील माथै पड़तो, कारण डील ढकण सारू गाभा भी थारै कनै हा नईं । पट्टी म्राळी ! मनै इचरज म्रो है कै इसी गरमी सूं भी तूं मरी कियां कोनी !

दिल्ली में सियाळै रो सी भी लोकां सूं छानो कोनी। चैस्टर सूं लैस हुयोड़ा मैमसाब सामवजी सूं सट'र हालै है तो ई सरदी सूं भेळा-भेळा हुयोड़ा, म्रर तूं पट्टी म्राळी ! बिना गाभै, सफा उघाड़ी इसै सी में इयां बैठी रैवती जाएं थारो डील काठ रो है ! काळो ठूंठ है, प्राण वायरो !

थारै सामली पट्टी माथै मोची रबड़ रै टायर री चपल्यां बणांवता म्रर नाकामल टुकड़ा-कातरिया उठती बेळा बठैई छोड जांवता । तूं वांनै भेळा करती, म्रर म्राधी रात हुयां वांनै जगाय'र धूंणी रै सायरै रात रो सी काटती । टायर रो धुम्रों थारी म्रांख्यां में जांवतो, पेट में जांवतो, फेफड़ां में जाळा जमांवतो, पण पट्टीम्राळी तोई !

तूं मरी कोनी !

थारो निमळो काळो डील, जिको टायर रै धुमें, अर सूरज रै तीखै तावड़ै सू ओर भी काळो हुयग्यो हो, पासळयां माय धस्योड़ी, छाती सूक्योड़ी, माथै ऊपर ओछा-ओछा रूंगटा, पण सगळा काळा, धोळै रो काम नईं, तनै कदेई पल्लो बिछायां देखी नी, ना तू कठेई मांगण नै गई, पण पट्टी माथली ! फेर भी तूं कियां काया नै भाड़ो देवती, आ ठा नईं पडी।

थारै काळै केसां अर लजखाणी आख्यां सू इसी ठा पड़ती कै थारी औस्था तीस-पंतीस रै नैड़ी ही, पण फेर भी, फैनाफैन हुयोड़ा हजारू मिनख-लुगायां रै सड़क माथ कर निकळण पर भी थारो मन कदेई दुनियां री जिनस्यां खातर डुलतो नईं लखायो।

लारलै अदीतवार नै थारी निगै करण सारू ई हूं दिल्ली गयो पट्टी आळी ! कै तू कुण है। नावल्टी रै सामली पट्टी माथै, जठै मरदाना पिसावघर चिण्योड़ा है, वठै थारी जागा तनै जोयी, पण जद तूं लाधी कोनी तो बठै सुगन चिड़ी लियां बैठ्यै एक सुगणी नै पूछ्यो कै पट्टी आळी कठै गयी। सामनै इजिपसियन बैटरी आळै री दुकान माथै निगै करी, मोच्यां नै पूछ्यो भई बा टायर री

कातर लेजांवती जिकी कठै गयी ? पण पट्टी मायली ! कोई तनै ग्रोळख नईं सक्यो, ग्रर ना मनै उथळो दे सक्यो। मनै मोकळी जूंजळ ग्रायी कै तू जीवी जित्तै मैं तनै क्यूं नी पूछ्यो ! जे पूछतो, तो सायद तूं सगळी वात सावळ बताय देंवती कै तू कुण ही, ग्रर थारी इसी दसा कियां हुयी। पण जद मैं पूछ्यो कोनी, तो ग्रो दोस म्हारो है। संर थारै सूं तो हूं इत्ती ई माफी चाऊं कै थारो नांव मैं पट्टी मायली राख्यो इण री रीस ना करे, चावै तूं इण लोक में है, ग्रथवा परलोक में।

सबड़का-कोस

ो=पागल

टाळो=गोळमाळ

ता=टप्पा

रो निचोर=एकदम गोरो

ळ=संयम

ी=चक्की

र=बटको

दा=मांगळी इत्यादि चुभावणी

न्दा करणो=माल उडावणो

टोड=चोट, नुकसाण

ांतरी=तरक्की

लगी=मरगो

तवाई=मिस्तरायत, कारीगरी

नम=फाम, फैसन

ाणो=सारला संस्कार

ईपारै=भुर्लपाम

स=निडर

=सटपट हुय जावै

ेटी

चिड़ोकला=चिड़चिड़ा

चितारो=चित्तरकार

चीकणास=चिकणाई री चीज, (घी मळाई आदि)

चीराळी-चीराळी=चीर-चीर, फाट्योड़ा

चूंचकी=चूंचाड़ी, चिणगारी

चूतरो=चौकी, चौकलियो, चबूतरो

चूड़ो=मुरधर सू बूकियां तईं चूड़ो उतार चूड़ण, सुगाग रो सैनाण

चेतारूक=याददास्त-बायरो

चोपनियो=नोट-बुक, छोटी चोपड़ी

च्यांव-म्यांव=हाका

च्यार भुजा रा नाथ=चतुर्भुज भगवान

छ

छड़छड़ीलो=सुगन्धीदार बनावटी

छाकटा=चलाक

छिकग्या=थाकग्या

छिन चढ़ जावै=ईतर जावै

छिब=सोभा

छिनका=छूंतरा, छूंतका (रुपिया)
छेहै=दूर, माधो

ज

जट=केस
जड़=ढक, बंध कर
जदपी=यद्यपि
जबरो=जबरदस्त
जलम-प्राछ्या=जन्मास्टमी
जलम रा देवाळ=पैदा करण वाळा
जानी=बराती
जावक=बिल्कुल
जामफळ=गुलाबजामुन
जामू=मोल
जीव सोरो=चित्त प्रसन्न
जुगाड़=परबन्ध
जेट=तह
जोकड़=विदूसक, हसावणियो

झ

झरबा=मिट्टी रा बडे मूंडे रा ठांव
झर्नै=खेण हुवै
झिगत=बैस, माथा-पच्ची

ट

टंटो=प्राफत
टांको-टेभो=सीवणो, सिलाई
टाळो राखूं=माफ करूं, छोडू
टीच=बींट
टीपाटीट=गैरी
टुणकलो म्हाल देवै=धीरै-सी'क कंप देवै
टूकली=लिलली, मांडली
टूकं=मारै
टोकर=बडो घटी
टोगड छोरा=लूंठा छोरा
टोटो=तोडो, कमी
टोपो=बूंद, छाटो
टोळी=झुंड, भूमको

ठ

ठरडीजणो=घींसीजणो
ठरसा=रौब
ठा=मालम
ठोकै भाग रैवै=खाली हाथ मारै
ठोठ=पागपड
ठोला=थापळी रै हाथ मूं ठोकणो

पीटैं=गोमा करै
ड=पड़तो
ण=गुवाई जिण री भाव मार्थ
=दावपेच
=मुक्को
ी=डफोळ, मूरख

=पसू, जिनावर
=साढी च्यार रो पाढो

ड़=चटोड़, मांगळयां सूं मार्थ
रैं ठोकणो
ी=देगची, पतेली
=टाट
त-हमास्त=थारै-म्हारै जिसो
=तिपायां
=बळतो, ऊनो
=देर, वार, उंवार
या
आदि रो

बड़ो भारी जीमण जिन
मे हजारू जणा जीमैं,
जीमणवार

तेड़ो=बुलावो
तेतीसा मनावणा=भागणा
तेवतरो मे=कोई हालत मे
तोळियासर=एक भेळ

थ

थंभलियो=छोटो थंभो
थुई=ऊठ री पीठ मार्थ उठ्योड़ो भाग
थुथकारो=चास उतारण खातर
न्हांख्योड़ा थूक रा छांटा
अथवा क्रिया
थेपड़्यां=कंडा, गोबरथां

द

दड़ाछंद=बिना अटकै
ददियो=सकर
दळियो=एक साधारण रंधोण,
फालतू बात
दागो देयगी=मरगी
दाकल करदी=धमकी देयगी

बिरधी=वढोतरो, वृद्धि
बिलल्ली=भणसमझ
बीनणी=बहू
बुबको लेंवता=घूमता
बूकियो=बाहू
बूयो=ताकत
बेकळू=बाळू रेत
बेज=छीणा, छेक
बेड़वी पूड़या=सेवयोडी दाळ घाल'र
वणायोडी पूड़या
बेमेधा=मणगिणत
बेमी=घणा
बेली=बळधा री बध गाडी, रथ
बोला-बोला=चुपचाप

भ

भरर बाई साब=राजा री पोती
भचीड़=टक्कर
भचन्देणो=सड़कै सूं
भणी=पढ्योड़ी
भवा उड़योड़ी=हुवा उड्योड़ी
भवँ=खातर
भांयो=घड़बड़ायो
भाटो=पत्थर
भायो=बेटो
भिड़ते ई=झट
मिळताऊ=मिलणसार
भुंवाय दूं=घुमाय दूं
भूंडो=खराब, माडो
भूत री ठीकरी मे=चोबाटै
भेळा=सागै
भोगळ=(बारणो ढकण खातर)
फागळ

म

मठ में बैठी मटका करै=घर में बैठी
बात बणावै
मरजादा परसोतम=मर्यादा पुरुषोत्तम
मसाणा=स्मसान
मसराइज्ड=मर्सराइज्ड, मसमसी
माढी=बीनणी खानला लोक
मांय मेलग्या=खायग्या
मा रै जायें जिसो=नायो
माईत=मां-बाप
माजनो भदरावै=बेईजती करावै
मायलो=मित्र, लोक

माड़ी=मुसकल सूं

मायो चरक चढग्यो=दिमाग घूमग्यो

मानी=बीनणी सानला लोक

मारजा=वाणीको पढावण माळा गुरू

मावो=खुराक

माळण रा को चूं'ग्यानी = माळण (म्हारी मां) रो दूध कोनी पियो

माळणी बाचणी=पाढा जबानी उपळणा

मिजमानी=खातरदारी, भावभगत

मुरगी टेंट करदूं=चक्का जाम करदूं

मुळक=मुस्कराहट

मूंढै=जबानी, कंठाग्र

मेल्योड़ो=राख्योड़ो

मेणो=मोसो

मोड़ो=देर सूं

धार माळो

र

रगदोळीजता हुसी=रुळता हुसी

रमतियो=रमेकड़ो, खिलूणो

रमार=खेलार

रळी=इंछया

रांडो बेस=विधवा-वेष

राणो-राण=घणा

राम सा-पीर=रामदेवजी (राजस्थान रा बीर)

रीसाणो=नाराज

रुपट्टी=रुपियो

रूं=रोम

ल

लंबर=नंबर, मांक

लजखाणा=सरमिन्दा

लटको=इसारो

ललड़्यां गांवता=हाताजोड़ी करता

लागमो=टॅक्स, बंधाण

लाडी=लुगाई

लाडेसर=लाडलो

लाडै री भुवा=योथी पंचायत करै जिका

लापरण=बापड़ी, बिचारी
लारै आवै जिकी=लुगाई
लालर=काळी भीणी ओढणी
लिछमीनाथ=विष्णु, लछमीनाथ
लिखार=लेखक
लिलाड़=ललाट
लीरो=चींथरो
लुपदो=गोळो
लुळाई=नम्रता
लूंकड़ी=लोमड़ी
लूंठ=जोरदार
लूंबो=लटकण
लूला=जिरा रा हात बेकार हुवै
लेणायत=उधार दियोड़ा रुपिया पाछा मांगरण आळो
लोट=नोट
लोड़ी=छोटी बऊ
ल्होसाड़नो=फालतू विस्तार करणो

व

विखै=विषय

स

संगळिया=साथी
सगपरण=संबंध
सटको सारणो=बात संवारणो
सट्टै=बदळै में
सफा=एकदम
समठावणो=समझूणो, ब्याव पछै देज-लेज री प्रथा
सरवाळै=खुलै-ग्राम
सलवा=मोरा, प्रश्न
सातरी भात=बोत आछी तरै
सांसो=आफत
साख भरै=सबूत देवै
सागीड़ो=घणो चोखो, सिरैकार
साटीफिगट=प्रमाण-पत्तर
सापतो=पूरो
सामलो=सामनै आळो
सायेरो=सहारो
सारू=खातर
साळ-संभाळ=देख-रेख
साव=जाबक, बिल्कुल
सावळ=आछी तरै
सिणिया=एक तरै रो फूल
सीरख=सोड़

माठी=मुश्कल सूं
मायो चरक चढ़ायो=दिमाग घूमग्यो
मानो=बीनणी सासरा मोकळ
मारजा—वाणीको पढ़ावण वाळा गुरु
मावो=खुराक
माळण रा को चूंग्यानी = माळण (म्हारी मां) रो दूध कोनी पियो
माळणी बांधणी=पाड़ा जवानी उथळणा
मिजमानो=खातरदारी, भावभगत
मुरगी टेंट करदूं=चक्का जाम करदूं
मुळक=मुस्कराहट
मूंढे=जबानी, कंठाग्र
मेल्योड़ो=राख्योड़ो
मैणो=मोसो
मोड़ो=देर सूं
मोढो=जाडी धार वाळो

र
रगदोळीजता हुयो
रमतियो=रमेकड़
रमार=खेलार
रळो=इंद्रधा
रांडो वेस=विधवा
राणी-राण=घणा
राम सा-गीर=राम रा
रीसाणो=नाराज
रुपट्टी=रुपियो
रूं=रोम

ल
लंबर=नंबर, प
लजखाणा=सर
लटको=इसारो
ललड़्यां गांवट
लागमो=टैर
लाडी=लुग
आदेसर

प्रका

रण
डूव प्र
री व

ई

ावळी

राजलि
ामाजलि